

के लिए अतिसंवेदनशील लेकिन अगती, बड़े एकसमान कंद, अंडाकार, सफेद और 70-90 दिनों में 130 किटल/एकड़ उपज के कारण बच जाते हैं, कुफरी अशोक (लंबा पौधा, हरे पते के साथ सीधा और मध्यम कॉर्पैट, बड़े कंद, चिकने, अंडाकार) लंबी सफेद त्वचा के साथ और 75-80 दिनों में लगभग 110 किटल/एकड़ उपज, कुफरी चंद्रमुखी (सफेद, बड़ी, चिकनी, सफेद त्वचा, एक समान और अधिक आकर्षक और 80-90 दिनों में लगभग 100 किटल/एकड़ उपज) और कुफरी पुष्कर (सफेद कंद, देर से तुड़ाई का प्रतिरोध, अच्छी गुणवत्ता और औसत उपज 90-100 दिनों में 160-170 किटल/एकड़ है।

- कुफरी विपसोना-3 (90-100 दिनों में पकने वाली मध्यम, लेट ब्लाइट प्रतिरोधी, अच्छी गुणवत्ता, अंडाकार और सफेद कंद और उच्च कंद शुष्क पदार्थ (21.5%) जो हल्के रंग के चिप्स के उत्पादन के लिए आवश्यक है और जिसकी औसत उपज 165-175 कु0/एकड़ है।
- कुफरी फ्राइसोना मध्यम 90-100 दिनों में परिपक्व, लेट ब्लाइट प्रतिरोधी, अच्छी गुणवत्ता, अंडाकार और सफेद कंद, उच्च शुष्क पदार्थ (22%) वाले लंबे कंदों के कारण फ्रेंच फ्राइज़ के लिए उपयुक्त और जिसकी औसत उपज 160-170 कु0/एकड़ है।
- जून के अंत से जुलाई के पहले सप्ताह तक हरी खाद के लिए 20 किलो ढैंचा की बुवाई करें।
- बीज के आकार के आधार पर एक एकड़ के लिए बड़े आकार- 10-12 किटल, मध्यम आकार 7-10 किटल, छोटे आकार 4-6 किटल बीज की आवश्यकता होती है। कटे हुए कंदों को 1% यियोरिया और 1 पीपीएम जिब्रेलिक एसिड (प्रति 100 लीटर पानी में एक मिली) के घोल में एक घंटे के लिए डुबोएं और इसके बाद उपचारित कंद के टुकड़ों को 24 घंटे के लिए छाया में पतली परतों में सुखाएं।
- ब्लैक स्कर्फ को नियंत्रित करने के लिए कोल्ड स्टोरेज से बाहर निकालने के बाद कंदों को 2.5 मिली प्रति लीटर पानी में 10 मिनट तक उपचारित करें। पतझड़ की फसल के लिए सिंतंबर के अंतिम सप्ताह से मध्य अक्टूबर तक और बसंत की फसल के लिए जनवरी के द्विसरे पखवाड़े में बुवाई का सबसे अच्छा समय होता है। ट्रैक्टर पावर उपलब्ध होने पर सेमी-ऑटोमैटिक या ऑटोमैटिक प्लांटर्स की सिफारिश की जाती है। यंत्रीकृत रोपण के लिए पंक्तियों और कंदों के बीच की दूरी क्रमशः 65x18.5 सेमी या 75 सेमी x 15 सेमी रखी जानी चाहिए। रोपण के तुरंत बाद 24 किटल प्रति एकड़ से धान की पुआल बिछाने से वर्षिक खरपतवारों का प्रभावी नियंत्रण और सिंचाई की बचत होती है।
- 20 टन गोबर की खाद या हरी खाद के साथ 75 किलो नत्रजन (165 किलो युरिया), 25 किलो फास्फॉरस (155 किलो सिंगल सुपरफॉस्ट) और 25 किलो पोटास (40 किलो म्प्रैट आफ पोटाश) प्रति एकड़ इस्तेमाल किया जाना चाहिए। बायोजाइम 8 किलो ऐस्युल प्रति एकड़ रोपण और अर्थिंग के समय और कंद बनने के समय 200 मि.ली./एकड़ पर बायोजाइम तरल फार्मूलैशन के छिड़काव से आलू की उपज बढ़ जाती है।
- पहली सिंचाई रोपण के तुरंत बाद करनी चाहिए क्योंकि इससे बेहतर अंकुरण सुनिश्चित होता है। आलू की फसल हल्की और बार-बार सिंचाई करने पर अच्छी प्रतिक्रिया देती है। हल्की बनावट वाली मिट्ठी में सिंचाई की कुल संख्या 7-8 होगी। आलू में ड्रिप सिंचाई से ने केवल उपज में बढ़ि होती है बल्कि सिंचाई की पारंपरिक विधि की तुलना में 38% पानी की बचत भी होती है। इस प्रणाली के तहत दो दिन के अंतराल पर सिंचाई करनी चाहिए। आलू की फसल को 2.2 लीटर प्रति घंटे के ड्रिपर डिस्चार्ज वाले लेटरल पाइप से सिचित करना चाहिए।
- ट्रैक्टर संचालित डिगर विकसित किया गया है और यह बाजार में उपलब्ध है जो कुशलता से आलू खोदने में उपयुक्त है इस कार्य के समय मिट्ठी में उपयुक्त नहीं होनी चाहिए।
- आलू की खुदाई की उपरांत आलू को गेंड किया जाना चाहिए। चार गेंड 1-छोटे आकार (25 ग्राम वजन से कम) 2-मध्यम आकार (25-50 ग्राम वजन) 3- बड़े आकार (50-75 ग्राम वजन) और 4 गेंड-बड़े आकार (75 ग्राम वजन से ऊपर)। गुणवत्ता को बरकरार रखते हुए आलू के भंडारण के लिए लीनो बैग का उपयोग के साथ कोल्ड स्टोरेज में संग्रहित किया जाना चाहिए जहां तापमान 2-4° सेल्सियस और सापेक्षिक आर्द्रता 75-80% हो।

प्याज

- वानस्पतिक विकास और बल्ब विकास के लिए इष्टतम तापमान क्रमशः 13-24°C और 16-25°C है। अच्छी गुद्धि के लगभग 70% सापेक्ष आर्द्रता की आवश्यकता होती है। इसकी खेती यह उन जगहों पर अच्छी तरह से हो सकता है जहां औसत वार्षिक वर्षा 650-750 मिमी होती है।
- प्याज की सफल खेती के लिए सबसे अच्छी मिट्टी गहरी, भुर्भुरी दोमट और अच्छी जल निकासी, नमी धारण क्षमता और पर्याप्त कार्बनिक पदार्थ वाली जलोढ़ मिट्टी है। मिट्टी की इष्टतम पीएच रेंज 6.0 - 7.5 हो, लेकिन प्याज को हल्की क्षारीय मिट्टी में भी उगाया जा सकता है।
- प्याज की किसें- एग्रीफाउंड डार्क रेड, एग्रीफाउंड क्लाइट, एन-53, पूसा रेड, पूसा क्लाइट राउंड, पूसा क्लाइट फ्लैट, अर्का कल्पाण, अर्का ललिता इत्यादि।
- नरसी उगाने के लिए अंतिम जुताई के समय 0.05 हेक्टेयर में सड़ी हुई गोबर की खाद को मिट्टी में अच्छी तरह मिला दें। नरसी क्यारी 10-15 सेमी ऊंचाई, 1.0-1.2 मीटर चौड़ाई और लंबाई सुविधानुसार तैयार की जा सकती है। नरसी में खरपतवारों को नियंत्रित करने के लिए पेंटीमेथालिन 0.2% जमाव के पूर्व करने की सिफारिश की जाती है। एक हेक्टेयर में लगभग 5-7 किलोग्राम बीजों की आवश्यकता होती है।
- रोपण से एक माह पहले 20-30 टन गोबर की खाद/हेक्टेयर मिट्टी में मिला दें। पोषक तत्वों की अनुशंसित मात्रा 100 किग्रा नन्नजन, 50 किग्रा फास्कोरस और 80 किग्रा पोटास प्रति हेक्टेयर देना चाहिए है। फॉस्फोरस, पोटास की पूरी मात्रा और नाइट्रोजन की अधी मात्रा रोपाई से पहले मिट्टी में मिला देना चाहिए। शेष आधी नन्नजन टॉप ड्रेसिंग में बराबर मात्रा में दो भागों में बांकर रोपाई के 30 दिन और 45 दिन बाद देनी चाहिए। पंक्तियों के बीच 15 सेमी और पौधों के बीच 7.5 सेमी की दूरी पर रोपण उच्च उपज के लिए सबसे अनुकूल है। प्याज के इष्टतम उत्पादन के लिए 25 किग्रा/हेक्टेयर सल्फर की आवश्यकता होती है।
- यदि गिर्ष को ठीक से नियंत्रित नहीं किया गया तो उपज में 50% तक की हानि हो सकती है। यदि इसका हमला खेत में दिखे तो फिझोनिल (रीजेंटा) 30 मि.ली./15 लीटर पानी या प्रोफेनोफोस @ 10 मि.ली./10 लीटर पानी में मिलाकर 8-10 दिनों के अंतराल पर स्प्रे करें। बैंगनी धब्बा और स्टेमफिलियम झुलसा के गंभीर प्रकोप से उपज में 70% तक की हानि हो सकती है। नियंत्रण हेतु प्रोपीनेब 70% WP@350 ग्राम/एकड़/150 लीटर पानी में मिलाकर 10 दिनों के अंतराल पर दो बार स्प्रे करें।
- पत्तियों सहित धूप में सुखा कर प्याज को कमरे के तापमान पर तीन महीने तक स्टोर कर सकते हैं।

टमाटर

- टमाटर का सर्वोत्तम फल रंग और गुणवत्ता 21-24 डिग्री सेल्सियस के तापमान पर प्राप्त की जाती है। टमाटर को रेतीली से लेकर भारी मिट्टी तक विभिन्न प्रकार की मिट्टी में उगाया जा सकता है। हालांकि, अच्छी जल निकासी वाली, रेतीली या लाल दोमट मिट्टी, जो कार्बनिक पदार्थों से भरपूर होती है, पीएच रेंज 6.0-7.0 के साथ आदर्श मानी जाती है।
- टमाटर की प्रजाति जैसे-आजाद टी-3, आजाद टी-5, आजाद टी-6, काशी अमृत, काशी अनुपम, काशी शरद, काशी विशेष, पूसा हाइब्रिड 8, पूसा हाइब्रिड 4, पूसा उपहार, पूसा हाइब्रिड 2, इत्यादि।
- लगभग 100-200 ग्राम बीज एक हेक्टेयर भूमि में पौधे उगाने के लिए पर्याप्त होते हैं। बुवाई के 4 सप्ताह के भीतर 5-6 पत्तियों वाली पौधे रोपाई के लिए तैयार हो जाती है।
- संकर किसों के लिए उर्वरक की अनुशंसित खुराक प्रति हेक्टेयर 180 किग्रा नन्नजन, 100 किग्रा फास्फोरस और 100 किग्रा पोटास है।
- सफेद मक्कियों के प्रसार को नियंत्रित करने के लिए प्रभावित पौधों को उखाड़ कर नष्ट कर दें। अधिक प्रकोप होने पर ट्राईजोफोस 250 मि.ली./200 लीटर या प्रोफेनोफोस @ 200 मि.ली./200 लीटर पानी में मिलाकर स्प्रे करें। 15 दिन बाद दोबारा छिड़काव करें।
- गिर्ष सामान्य कीट है और ज्यादातर शुष्क मौसम में देखा जाता है। वे पत्ते से रस चूसते हैं और इसके परिणामस्वरूप पत्तियां मुड़ जाती हैं। इमिडाक्लोप्रिड 17.8SL @60 मिली या फिप्रेनिल @ 200 मिली / 200 लीटर पानी।

- फलों का सङ्घना टमाटर का प्रमुख रोग है जो बदलते मौसम के कारण देखा जाता है। नियंत्रण के लिए मैनकोजेब 400 ग्राम या कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 300 ग्राम की स्प्रे करें। 15 दिनों के अंतराल में दोबारा छिड़काव करें।
- अर्ली ब्लाइट में शुरुआत में पत्ती पर छोटे, भूरे रंग के अलग-थलग धब्बे देखे जाते हैं। बाद में तने और फलों पर भी धब्बे दिखाई देते हैं। यदि हमला दिखे तो मैनकोजेब 400 ग्राम या टाबुकोनाजोल 200 मि.ली./200 लीटर पानी में मिलकर स्प्रे करें। पहले छिड़काव के 10-15 दिन बाद दोबारा छिड़काव करें।

पूत गोभी

- यह बहुई दोमट से लेकर चिकनी मिट्टी तक विभिन्न प्रकार की मिट्टी में अच्छी तरह से विकसित हो सकता है। मिट्टी का पी0एच 6 से 7 होना चाहिए। कम पी0एच 0 वाली मिट्टी में चूना डालें।
- अगेती किस्में: अगेती कुंवारी, पंत गोभी, पूसा दीपाली; मध्य किस्में: पूसा हाइब्रिड- 2, पूसा शरद, पंत गोभी- 4; मध्य देर से: पूसा शुभा, पूसा हिमज्ञोति, पंजाब जाइट 35; और देर से आने वाली किस्में: पूसा स्नोबॉल-1, पूसा स्नोबॉल के-1।
- अगस्त से मध्य सितंबर और अक्टूबर से नवंबर का पहला सप्ताह रोपाई का सबसे अच्छा समय है। 45x45 सें.मी. के फासले का प्रयोग करें और बीज दर 250 ग्राम प्रति एकड़ की जरूरत है।
- कंपोस्ट 250-300किलो, नाइट्रोजन 100-150किलो, फॉर्सफोरेस 60-80किलो और पोटेशियम 80किलो प्रति हेक्टेयर की दर से प्रयोग करें। नाइट्रोजन की अधी मात्रा और फॉर्सफोरेस और पोटेशियम की पूरी मात्रा खेत की तैयारी के समय मिट्टी में मिला दी जाती है। नाइट्रोजन की शेष अधी मात्रा रोपाई के चार सप्ताह बाद टॉप लेसिंग की जाती है। बोरेस्म 15 किग्रा / हेक्टेयर और अमोनियम मॉलिब्डेट 15 किग्रा / हेक्टेयर भी क्रमशः बोरेन और मॉलिब्डेनम की कमी वाली मिट्टी में डालना चाहिए।
- ब्राउनिंग (ब्राउन रोट या रेड रोट) बोरेन की कमी के कारण होता है जो मिट्टी के पीएच से प्रभावित होता है। इसे मिट्टी में 20 किलो/हेक्टेयर की दर से बोरेस या सोडियम बोरेट डालकर नियंत्रित किया जा सकता है।
- मॉलिब्डेनम की कमी से ड्विपटेल सिंड्रोम होता है विशेष रूप से अत्यधिक अम्लीय मिट्टी में। चूने और अमोनियम मॉलिब्डेट को मिट्टी में 1-2 किग्रा/हेक्टेयर की दर से प्रयोग करें।
- बटनिंग: फूलगोभी में अपर्याप्त पत्ते वाले छोटे दही के विकास को बटनिंग के रूप में जाना जाता है। 6 सप्ताह से अधिक पुराने पौधों की रोपाई तथा अगेती किस्मों को देर से रोपण करने से बटनिंग होती है।
- डायमंड बैक मोथ फूलगोभी का गंभीर कीट है। ये पत्तियों की सतह के नीचे अंडे देती हैं। उचित नियंत्रण उपायों के अभाव में इससे 80-90% तक हानि होती है। अधिक प्रकोप होने पर स्पिनोसैड 2.5% एससी@80 मि.ली./150 लीटर पानी में मिलाकर स्प्रे करें।
- लीफ स्पॉट और ब्लाइट: यदि झूलसा रोग का प्रकोप दिखाई दे तो मैनकोजेब या कॉपर ऑक्सीक्लोराइड @ 300 ग्राम/150 लीटर और 20 मिली स्टिकर का स्प्रे करें।

पत्ता गोभी

- पत्तागोभी उगाने के लिए 6.0-6.5 की पीएच रेज इष्टतम मानी जाती है। लवणीय भूमि में उगाने वाले पौधे रोगों के शिकार होते हैं। 15°C-21°C की तापमान सीमा को फसल के विकास और बंधा के गठन के लिए इष्टतम माना जाता है।
- किस्में: गोल्डन एकड़, पूसा ड्रम हेड, प्राइड ॲफ इंडिया, पूसा मुक्ता, पूसा सिंथेटिक, अर्ली ड्रम हेड, लेट लार्ज ड्रम हेड, K-1 इत्यादि।
- अगेती गोभी जुलाई-नवंबर के दौरान बोई जाती है। एक हेक्टेयर में नर्सरी तैयार करने के लिए लगभग 300-500 ग्राम बीज पर्याप्त होते हैं। बुवाई से पहले बीजों को ट्राइकोडर्म विराइड (4 ग्राम/किलोग्राम बीज) या थीरम (3 ग्राम/किलोग्राम बीज) से उपचारित करें।
- अच्छी उपज के लिए 15-20 टन सड़ी हुई कंपोस्ट को रोपाई से लगभग 4 सप्ताह पहले मिट्टी में मिला देना चाहिए। अमासौर पर इष्टतम उपज के लिए 80-120 किग्रा नत्रजन, 60-100 किग्रा फॉर्सफोरेस और 60-120 किग्रा पोटास देने की सिफारिश की जाती है। नत्रजन की आधी खुराक और फॉर्सफोरेस और पोटास की पूरी मात्रा रोपाई के समय दी

जाती है। शेष नत्रजन को रोपाई के छह सप्ताह बाद दिया जाना चाहिए।

- कटवार्म के निवारक उपाय के रूप में बुवाई से पहले मिट्टी में मिथाइल पैराथियान या मैलाथियान (5% धूल) @ 10 किलो प्रति एकड़ डालें।
- पत्ती खाने वाली सुंची का यदि खेत में हमला दिखे तो पत्ती खाने वाले इलियों को नियंत्रित करने के लिए तथा एफिड और जस्सिड जैसे चूसने वाले कीट नियंत्रित करने के लिए इमिडाक्लोप्रिड 17.8SL @ 60 मि.ली. को 150 लीटर पानी में मिलाकर स्प्रे करें।
- लीफ स्पॉट या ब्लाइट नियंत्रण के लिए स्टिकर के साथ मेटलैक्सिल 8% + मैनकोजेब 64% डब्ल्यूपी @ 250 ग्राम / 150 लीटर पानी का स्प्रे करें।
- गोभी रोपण के 90-120 दिनों के बाद कटाई के लिए तैयार हो जाती है। पत्तागोभी की तुड़ाई तुरंत करनी चाहिए जब सिर दृढ़ और परिपक्व हो। अंगोती किस्मों से प्राप्त औसत उपज 25-30 टन/हेक्टेयर और देर से आने वाली किस्मों से 40-60 टन/हेक्टेयर होती है।

सब्जी मटर

- यह 6 से 7.5 के पीएच रेज के साथ अच्छी जल निकासी वाली मिट्टी में उगाए जाने पर सर्वोत्तम परिणाम देती है। जलजमाव की स्थिति में फसल सहन नहीं कर सकती है। अम्लीय मिट्टी के लिए, लिमिंग करें।
- किस्में: आजाद पी1, आजाद पी 3, आजाद पी 4, आजाद पी 5, अर्केल
- बुवाई का समय अक्टूबर के अंत से मध्य नवंबर के बीच और 15 सितंबर की शुरूआत में।
- बुवाई से पहले 8 टन गोबर की खाद, 20 किलो नत्रजन (45 किलो यूरिया) और 25 किलो फास्फरस (155 किलो सुपरफॉफेट) प्रति एकड़ डालें।
- पैडिमेथालिन@1 लीटर/एकड़ और बेसलिन@1 लीटर/एकड़ खरपतवारों को नियंत्रित करने में अच्छे परिणाम देते हैं।
- मुरझाना- जड़ें काली हो जाती हैं और बाद में सड़ जाती हैं। बीजों को थीरम 3 ग्राम प्रति लीटर पानी से उपचारित करके नियंत्रण करें और बुरी तरह प्रभावित क्षेत्रों में जल्दी बुवाई करने से बचें और फसल का चक्रण करें।
- पाउडर मिल्लू- पत्तियों, शाखाओं और फलियों के निचले हिस्से पर धब्बेदार, सफेद पाउडर जैसा विकास दिखाई देता है। कराथेन 40EC@80 मिली को तीन बार 100 पानी में मिलाकर प्रति एकड़ 10 दिनों के अंतराल पर स्प्रे करें।

गाजर

- दोमट या बलुइ दोमट मिट्टी जिसमें पर्याप्त मात्रा में ह्यूमोस हो, गाजर की खेती के लिए उपयुक्त होती है। अच्छी उपज प्राप्त करने के लिए आदर्श पीएच रेज 5.5-6.5 है। 16 से 20 डिग्री सेल्सियस के बीच वृद्धि के लिए इष्टतम तापमान, जबकि 28 डिग्री सेल्सियस से ऊपर का तापमान शीर्ष वृद्धि को काफी कम कर देता है।
- किस्में जैसे- पूसा केरस, पूसा मेघाली, पूसा वृष्टि इत्यादि। बीज दर: 5 से 6 किग्रा/हेक्टेयर।
- उर्वरक प्रबंधन- 20-30 टन गोबर खाद/हेक्टेयर खेत की तैयारी के समय डालना चाहिए। 50 किग्रा नत्रजन और 50 किग्रा फास्फरस की सिफारिश की जाती है।
- नेमाटोड: सुत्रकृमि के नियंत्रण के लिए नीम की खली 0.5 टन प्रति एकड़ बुवाई के समय डालें। 3 साल में एक बार गाजर उगाना और 2 साल में एक बार गेदा उगाना।
- लीफ स्पॉट का यदि खेत में हमला दिखे तो मैनकोजेब 2 ग्राम प्रति लीटर पानी में स्प्रे करें।

बैंगन

- 13-21°C का दैनिक औसत तापमान इसके सफल उत्पादन के लिए सबसे अनुकूल है। जब तापमान 17 °C से नीचे गिर जाता है तो फसल की वृद्धि बुरी तरह प्रभावित होती है। इसे पूरे साल मैदानी इलाकों में उगाया जा सकता है लेकिन रबी (अक्टूबर-नवंबर) का मौसम सबसे अच्छा होता है। फसल के लिए अच्छी जल निकासी वाली और उपजाऊ मिट्टी

को प्राथमिकता दी जाती है जिसका पीएच 5.5 - 6.6 के बीच हो।

- किसें: पूसा श्यामला, पूसा पर्फल लॉन्ग, पूसा पर्फल क्लस्टर, पूसा क्रांति, पूसा भेरव, पूसा अनमोल (एच), पूसा हाइब्रिड 5 (लंबी), पूसा हाइब्रिड 6 और 9 (गोला), अर्का शील, अर्का शिरीष, अर्का कुसुमकर, अर्का नवनीत (हाइब्रिड), अर्का निधि, अर्का केशव, अर्का नीलकंठ।
- एक हेक्टेयर के लिए 370-500 ग्राम बीज की आवश्यकता होती है और बीज उपचार हर्जियानम @ 2ग्राम/100 ग्राम बीज या कार्बोक्सिन 37.5% + थीरम 37.5% के साथ करना चाहिए। 7.2x1.2 मीटर और 10-15 सेंटीमीटर ऊंचाई के उठे हुए बेड तैयार किए जाते हैं। इस प्रकार एक हेक्टेयर क्षेत्र के लिए 10 बेडों की आवश्यकता है। बीजों को 2-3 सेमी की गहराई पर बोया जाता है और मिट्टी की एक महीन परत से ढक दिया जाता है और उसके बाद पानी के कैन से हल्की सिंचाई की जाती है। पौध रोपण के 4-6 सप्ताह के भीतर रोपाई के लिए तैयार हो जाते हैं जब वे 2-3 पत्तियों के साथ 15 सेमी की ऊंचाई प्राप्त कर लेते हैं।
- लंबी फल वाली किस्मों को 60 x 45 सेमी, गोल किस्मों को 75 x 60 सेमी और अधिक उपज देने वाली किस्मों को 90 x 90 सेमी की दूरी पर रोपित किया जाता है। 15-20 टन कंपोस्ट मिट्टी में मिला दिया जाता है। इष्टतम उपज के लिए 150 किग्रा नत्रजन, 100 किग्रा फास्फरस और 50 किग्रा पोटास के प्रयोग की सिफारिश की जाती है।
- रोपाई के बाद पहले और तीसरे दिन हल्की सिंचाई करें। इसके बाद सर्दियों में 8-10 दिन और गर्मी में 5-6 दिन के अंतराल पर सिंचाई करें।
- हॉपर्स, एफिडस और क्लाइट फ्लाई आदि के लिए डेल्टा और येलो स्टिकी ट्रैप 2-3/एकड़ की दर से लगाना चाहिए। चूसूने वाले कीटों के खिलाफ 5% एन-0एसकोर्झ 050 के 2 से 3 स्पे दें। नीम के तेल (2%) का प्रयोग बेधक संक्रमण को कम करने में भी सहायक होता है, हालांकि मामूली रूप से फिर इमिडाकलोप्रिड 17.8 SL @ 150 मिली/हेक्टेयर लगाएं। फसल चक्र का पालन किया जाना चाहिए। हरी खाद का प्रयोग, पॉलीथिन से मल्टिंग, ब्लीचिंग पाउडर के साथ मिट्टी का प्रयोग जीवाणु विल्ट रोग के संक्रमण को कम करेगा।
- बीज बोने के लगभग 120-130 दिनों में फल पहली तुड़ाई के लिए तैयार हो जाते हैं। फलों को 8-10 दिनों के अंतराल पर तोड़ा जाता है। बैंगन की औसत उपज 20-30 टन/हेक्टेयर होती है।

फल

अंवला

- भारत का क्षेत्रफल और उत्पादन में विश्व में प्रथम स्थान है। अंवला उपोष्णकटिबंधीय फसल होने के कारण शुष्क उपोष्णकटिबंधीय जलवायु को तरजीह देता है। भारी पाला इसकी खेती के लिए उपयुक्त नहीं होता है। 6.5 से 9.5 के बीच पीएच वाली हल्की अम्लीय से लवणीय/साड़िक मिट्टी खेती के लिए उपयुक्त होती है।
- उत्तर किसें: कंचन (एनए 4), कृष्णा (एनए 5), एनए 6, एनए 7 और एनए 10 इत्यादि।
- गहरी जुताई, हौरोइंग, समतल और खरपतवार निकालकर भूमि तैयार की जाती है। अंवला को जुलाई-अगस्त में 4-5 मीटर की दूरी पर लगाया जाता है। 1-1.25 मीटर के गड्ढे रोपण से दो मिट्टी पहले खोदा जाता है। प्रयोक गड्ढे में कंपोस्ट की 3-4 टोकरियाँ और 1 किग्रा नीम के काया 500 ग्राम हड्डी का चुरा मिट्टी में मिलाकर गड्ढों में भर देना चाहिए। सोडिक मिट्टी में 5-8 किग्रा जिस्म व 20 किग्रा रेत उरंत गड्ढे में भरकर सिंचाई की जाती है।
- 10 किग्रा कंपोस्ट, 100 ग्राम नत्रजन, 50 ग्राम फास्फरस और 100 ग्राम पोटास एक वर्ष पुराने पौधों को देना चाहिए। यह खुराक सालाना आधार पर दस साल तक बढ़ती है किर वही मात्रा प्रत्येक साल देते रहते हैं।
- शुष्क गर्मी में 15-20 दिनों के अंतराल पर सिंचाई करें। बरसात और सर्दी के मौसम में सिंचाई की आवश्यकता नहीं होती है। पहली सिंचाई (जनवरी / फरवरी) के बाद खाद और उर्वरक देते हैं। फूल अवधि यानी मार्च के मध्य और अप्रैल के दौरान सिंचाई नहीं दी जाती है।
- शुरुआती वर्षों में विपरीत दिशाओं में दिखने वाली चौड़ी दो से चार शाखाओं को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। मार्च-अप्रैल के दौरान अवधित शाखाओं को काट दिया जाता है। बाद के वर्षों में, 4-6 शाखाओं को विकसित करने की

अनुमति दी जानी चाहिए।

- सब्जियों, फूलों और कुछ औषधीय/सुगंधित पौधों के साथ अंतर-फसल के लिए उपयुक्त हैं। मल्टिंग के लिए धान की पुआल, गन्ना कवरा और खेत की खाद का उपयोग किया जा सकता है।
- एक कलीदार/ग्राफ्टेड वृक्ष रोपण के तीसरे वर्ष से फल देना शुरू कर देता है, जबकि एक बीज वाले पौधे को 6-8 वर्ष लग सकते हैं। फलों को हाथ से तोड़ा जाता है और उनके आकार के अनुसार क्रमबद्ध किया जाता है। सामान्य परिस्थितियों में फलों को 6-9 दिनों तक भंडारित किया जा सकता है। आवला का पेड़ से 1-3 किंटल फल मिलते हैं, एक हेक्टेयर से 15-20 टन फल प्राप्त होता है।

पपीता

- पपीता एक उष्णकटिबंधीय फल होने के कारण हक्के उपोष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में अच्छी तरह से बढ़ता है। सर्दियों के मौसम में कई घंटों तक रात का तापमान 12-14 डिग्री सेल्सियस से नीचे रहने से इसकी वृद्धि और उत्पादन बुरी तरह प्रभावित होता है। पपीते की खेती के लिए अच्छी जल निकासी वाली बहुई दोमट मिट्टी आदर्श होती है।
- किसमें जैसे- हड्डी झूँ, कुरुग हनी झूँ, गांशिंगटन, पूसा डिलीशियस और पूसा नहा।
- व्यावसायिक रूप से बीज और ऊतक संवर्धन पौधों द्वारा खेती करते हैं। बीज दर 250-300 ग्राम प्रति हेक्टेयर है। बीजों को 0.1% मोनोसान (फेनिल मर्क्यूरीक एसीटेट), सेरेसन आदि से उपचारित अवश्य कर तों।
- सुबह हल्की सिंचाई और नसरी क्यारियों को पॉलिथीन की चादरों या सुखे धान के भूसे से ढक दिया जाता है। रोपण के लिए लगभग 15-20 सेमी लंबे पौधे चुने जाते हैं। वसंत (फरवरी-मार्च), मानसून (जून-जुलाई) और शरद ऋतु (अक्टूबर-नवंबर) के दौरान रोपण।
- सामान्य रूप से पौध से पौध की दूरी 1.8 x 1.8 मीटर रखते हैं। हालांकि 1.5 x 1.5 मीटर की दूरी के साथ उच्च घनत्व वाली खेत में प्रति हेक्टेयर उत्पादन ज्यादा मिलता है। पूसा नहा को उच्च घनत्व रोपण, 6400 पौधों/हेक्टेयर के लिए अपनाया जाता है।
- पपीते के पौधे को खाद और उर्वरकों की भारी मात्रा में जरूरत होती है। कंपोस्ट 10 किग्रा./गड्ढों में लगाए गए पौधे के अलावा, नत्रजन, फास्फररस एवं पोटास प्रत्येक की 200-250 ग्राम मात्रा से उच्च उपज प्राप्त होती है। वृद्धि और उपज बढ़ाने के लिए ZnSO₄ (0.5%) और H₂BO₃ (0.1%) का भी छिड़काव किया जाता है।
- सिंचाई मिट्टी के प्रकार और मौसम की स्थिति के आधार पर तय किया जाता है और जल-जमाव से बचा जाता है।
- खरपतवार की वृद्धि को रोकने के लिए पहले वर्ष के दौरान गहरी जूताई की सिफारिश की जाती है। फ्लुक्लोरालिन या अलाक्लोरिन या ब्लूटाक्लोरिन (2.0 ग्राम/हि.) का खरपतवार उत्तर से पूर्व छिड़काव करते हैं।
- बिना दलहनी फसलों के उथली जड़ वाली फलीदार फसलों को अंतरफसल करना लाभकारी होता है। अच्छे परागण के लिए लगभग 10% नर पौधों को बांगों में रखा जाता है।
- फल मक्कियों (बैकट्रोसेरा कुकुर्बिटे), ग्रॉसहॉपर (पोइलिकोसेरस पिक्टस), एफिड्स (एफिस गॉसिपी), रेड स्पाइडर माइट (टेट्रानिकस सिनाबारिनस), रेम बोरर (डेसिसेरस रगोसेलस) और ग्रे वीविट (मायलोसेरस विरिडंस) ज्यादातर देखे जाने वाले कीट हैं। डाइमेथोएट (0.3%) या मिथाइल डेमेटन (0.05%) द्वारा नियंत्रण करना चाहिए।
- रिपोर्ट की गई मुख्य बीमारियां हैं खस्ता फॉर्फूटी (ओडियम कैरिका), एचेक्सोज़ (कोलेटोट्रिचम ग्लियोस्पोरियोइड्स), ग्लिगेना और तन सड़ना प्रभावी नियन्त्रण हेतु वेबेल सरकर (1 ग्राम/ली.) कार्बोन्डाजिम/थियोफानेट ग्लिगेल (1 ग्राम/ली.) और कवच/मैनकोजेब (2 ग्राम/ली.) का प्रयोग करना चाहिए।
- पूर्ण आकार के फलों की कटाई तब की जाती है जब वे हक्के हरे रंग के हो जाते हैं और शीर्ष सिरे पर पीते रंग का रंग होता है। पपीते के पौधे का आर्थिक जीवन केवल 3 से 4 वर्ष का होता है। औसत उपज 75-100 टन/हेक्टेयर।
- फल प्रकृति में अत्यधिक खराब होने वाले होते हैं। उन्हें 1-3 सप्ताह की अवधि के लिए 10- 13 C और 85-90% सापेक्ष आर्द्रता के तापमान पर संग्रहीत किया जा सकता है।

अमरूद

- अमरूद उष्णाकटिबंधीय और उपोष्णाकटिबंधीय दोनों क्षेत्रों में उगाया जाता है। भारी मिट्ठी से लेकर बहुत हल्की रेतीली मिट्ठी जिसमें पीएच 4.5-8.2 के बीच हो उपयुक्त राहत है और नदी के किनारे वाले खेत में अच्छी गुणवत्ता वाले फल होते हैं लेकिन जल-जमाव के प्रति संवेदनशील हो।
- किस्में जैसे- एल0-49, इलाहाबाद सफेद, लखनऊ सफेद, सेबरंग, चित्तीदार, लाल गूँदा, इलाहाबाद सुखा, सरदार, मिर्जपुरी सीडलेस, सी0आई0एस0एच0-जी0-1, 2 और 3 इत्यादि।
- गर्भी के मौसम में जुताई, हैरोइंग, समतल और खरपतवार निकालकर धूमि तैयार की जाती है। रोपण वर्षा ऋतु (जून-जुलाई) के दौरान किया जाता है। किस्म, मिट्ठी की उर्वरता और सिंचाई सुविधाओं की उपलब्धता के अनुसार 5-8 मीटर की दूरी आदर्श रोपण दूरी है।
- उर्वरक 600 ग्राम नत्रजन एवं 400 ग्राम पोटास वर्षा ऋतु की मई के प्रथम सप्ताह में तथा शीत ऋतु की फसल के लिए जुलाई के प्रथम सप्ताह में प्रयोग करना चाहिए। ड्रिप सिंचाई बहुत फायदेमंद है और 60% पानी की बचत होती है।
- अमरूद के बागों में खरपतवारों के नियंत्रण में डियूरॉन (1.6 किग्रा/हेक्टेयर), ओरिजिलिन (1.67 लीटर/हे.) या सिमाजिन (1.6 किग्रा/हे.) का उपयोग प्रभावी पाया गया है।
- सूखी परियों या पुआल या काले ल्यास्टिक को मल्विंग सामग्री के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है, यह नमी को बनाए रखने और फलों की गुणवत्ता में सुधार करने में मदद करता है। फलीदार फसलों या सब्जियों को पहले तीन वर्षों के दौरान अंतरफसल के रूप में उगाया जा सकता है।
- बढ़वार वाले हार्मोन जैसे- एन0ए0ए, एन0ए0डी0 और 2,4डी का प्रयोग फूलों को झङ्गाने में प्रभावी पाए गए हैं।
- फसलों में फल मरक्की, तना छेदक, छाल खाने वाली सुंडी, थिस, सत्रकृमि, माइल बग और स्केल कीट ज्यादातर देखे जाने वाले कीट हैं। ज्यादातर मामलों में मैलाथियान (2 मि.ली.) या फॉर्स्फामिडॉन (0.5 मि.ली. प्रति लीटर पानी) आदि का छिड़काव प्रभावी पाया गया है।
- रिपोर्ट की गई मुख्य बीमारियों में विल्ट, फ्रूट कैंकर, फ्रूट रोट, एन्थ्रोकोज और ग्रे लीफ स्पॉट हैं। रोगों को नियंत्रित करने के लिए संक्रमण के प्रकार के आधार पर कार्बोञ्जिम/थिथोफेनेट मिथाइल (1g./लीटर) या कवच/मैनकोजेब (2ग्राम/लीटर) का प्रयोग करना चाहिए।
- अमरूद में फलों का गिरना एक गंभीर विकार है जिसके परिणामस्वरूप विभिन्न कारकों के कारण लगभग 45-65% नुकसान होता है। फलों का गिरना कम करने के लिए जी0ए0 हार्मोन का छिड़काव करें।
- दो महीने के अंतराल पर 0.5% डाईअमोनियम फॉर्सेट और जिक सल्फेट को मिलाकर पत्ते पर लगाने से अमरूद में ब्रोजिंग कम हो जाती है। फूल अने से पहले स्प्रे 0.4% बोरिक एसिड, 0.3% जिक सल्फेट और कॉपर सल्फेट 0.2-0.4% उपज और फलों के आकार में बढ़ावा देते हैं।
- पौधे 2-3 साल की उम्र में फल देना शुरू कर देते हैं लेकिन 10 साल बाद ही पूर्ण फलत से 100-150 किलोग्राम फल प्रति पेड़ से मिलता है। बरसात के मौसम की फसल के लिए तुड़ाई का समय अगस्त और सर्दी के मौसम की फसल के लिए नवंबर-दिसंबर होता है। तापमान 05 सेन्टीग्रेड और 75-85% सापेक्ष आर्द्रता पर रखकर फल का शेत्करण लाइफ 20 दिनों तक बढ़ाया जा सकता है।

मसाला फसलें

लहसुन

- इसकी खेती विभिन्न प्रकार की मिट्ठी पर की जा सकती है। कार्बनिक पदार्थों से भरपूर रेतीली दोमट और सिल्ट दोमट मिट्ठी में उगाए जाने पर यह सबसे अच्छा परिणाम देता है। मिट्ठी की पीएच की सीमा 6 से 7 होनी चाहिए।
- किस्में यमुना सफेद (जी-1), यमुना सफेद 2 (जी-50), यमुना सफेद 3 (जी 282), यमुना सफेद 4 (जी 323)
- एक एकड़ के लिए 225-250 किग्रा बीज की आवश्यकता होती है। प्रति 2 ग्राम प्रति किलो बीज+बेनोमाइल 50

डब्ल्यू०पी० 1 ग्राम प्रति लीटर पानी से बीज उपचार करने से स्मट रोग दूर हो जाते हैं।

- 40 टन कम्पोस्ट खाद और उर्वरक 125 किग्रा नत्रजन, 65 किग्रा फास्फोरस और 100 किग्रा पोटास की मात्रा प्रति हेक्टेयर आवश्यक होती है। 10 किग्रा/हेक्टेयर तक बोरेक्स बल्ब के आकार और उपज में वृद्धि करता है।
- अग्नि नियंत्रित नहीं किया गया तो उपज में 50% तक की हानि हो सकती है। यदि इसका हमला खेत में दिखे तो फिप्रोनिल 30 मिली/15 लीटर पानी या प्रोफेनोफॉर्स 10 मिली या कार्बोस्ल्क्टान 10 मिली+ मैनकोजेब 25 ग्राम/10 लीटर पानी में 8-10 दिनों के अंतराल पर स्प्रे करें।
- बैंगनी धब्बा के संक्रमण से उपज में 70% तक की हानि हो सकती है। पत्तियों पर गहरे बैंगनी रंग के घाव दिखाई देते हैं। पीती धार्याँ भूरी हो जाती हैं और ब्लॉड के साथ फैल जाती हैं। प्रोपिनेब 70% WP@350 ग्राम/एकड़/150 लीटर पानी में मिलाकर 10 दिनों के अंतराल पर दो बार छिड़काव करें।

धनिया

- धनिया अपने सुगंधित बीजों, पत्तियों और तनों के लिए लोकप्रिय है। भारतीय भोजन में पौधे के सभी भाग प्रयोग होते हैं। धनिया एक उष्णकटिबंधीय पौधा है और गर्भी और सूखे को सहन करने में सक्षम है। धनिया की पैदावार और गुणवत्ता सबसे अच्छी होती है जब मध्यम ठंडा और शुष्क मौसम रहता है।
- यह सभी प्रकार की मिट्टी में उग सकता है लेकिन अच्छी जल निकासी वाली दोमट मिट्टी अच्छी वृद्धि के लिए उपयुक्त होती है। धनिया को साल भर पत्ती के लिए उगाया जाता है लेकिन बीज के लिए फसल अक्टूबर-नवंबर के दौरान बोर्ड जाती है। सिंचित स्थितियों के लिए आमतौर पर 10-15 किग्रा/हेक्टेयर की बीज संस्तुत है।
- किसी जैसे-पंत हरीतमा, वी१, वी२, जी११, जी१२, सिंधु, स्वाति, सीओ-२, सीओ-३, आजाद धनिया-१ इत्यादि।
- अंतिम जुर्ती के दौरान कम्पोस्ट 25 टन/हेक्टेयर एवं उर्वरक 60 किलो नाइट्रोजन, 40 किलो फॉस्फोरस और 20 किलो पोटाश की सिफारिश की जाती है।
- यदि एफिड का हमला दिखे तो इमिडाक्लोप्रिड 6 मि.ली./10 लीटर पानी या थियामेथोक्सम 4 ग्राम/10 लीटर पानी में मिलाकर स्प्रे करें।
- पाउडर मिल्क्यू पैची होता है पत्तियों की ऊपरी सतह पर सफेद चूर्ण दिखाई देता है और इसके नियंत्रण के लिए पानी में घुलनशील सल्फर @ 20 ग्राम / 10 लीटर या प्रोपिकोनाजोल 10 ईसी (टोपस) 200 मि.ली. प्रति एकड़ 200 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करने की सलाह दी जाती है।

मेथी

- इसे सभी प्रकार की मिट्टी में उगाया जा सकता है जो जैविक सामग्री से भरपूर होती है लेकिन अच्छी जल निकासी वाली दोमट या बर्लुइ दोमट मिट्टी में उगाए जाने पर सबसे अच्छा परिणाम देती है। यह 5.3 से 8.2 की सीमा के पीएच को सहन कर सकता है। फसल को ठंडी जलवायी की आवश्यकता होती है और यह ठंड या ठंड के मौसम को सहन करने में सक्षम है। फसल परिपक्वता चरण के दौरान शुष्क मौसम आवश्यक है।
- अक्टूबर का अंतिम सप्ताह और नवंबर का पहला सप्ताह बुवाई के लिए सर्वोत्तम समय है।
- 18-25 किलो बीज/हेक्टेयर को बढ़ाने के लिए बीज को बुवाई से 2 दिन पहले पानी में भिगोया जाता है। बीजों को राइजोबियम कल्पर से भी उपचारित किया जाता है।
- किसी जैसे-को०-१ मेथी, राजेंद्र क्रांति, पूसा अर्ली बीचिंग, कस्युरिक सेलेबशन, आजाद मेथी-१, हिसार सोनाली हैं।
- खेत में कम्पोस्ट 15-25 टन/हेक्टेयर की दर से डालें। जैविक पदार्थों की उच्च खुराक के साथ बायोमास का उत्पादन अधिक होता है। नाइट्रोजन 20 किग्रा/हेक्टेयर, फास्फोरस 60 किग्रा/हेक्टेयर तथा पोटाश 40 किग्रा/हेक्टेयर डालें। अंकुरण के 15-20 दिन बाद तेजी से वृद्धि प्राप्त करने के लिए ट्राईकॉन्टनॉल हार्मोन 20 मि.ली./10 लीटर पानी का छिड़काव करें।
- एफिड के संक्रमण को नियंत्रित करने के लिए इमिडाक्लोप्रिड 3 मि.ली./10 लीटर या थियामेथोक्सम 4 ग्राम/10 लीटर पानी में मिलाकर स्प्रे करें।

- फसल को जड़ सड़न से बचाने के लिए निवारक उपाय के रूप में नीम की खली 60 किलो प्रति एकड़ की दर से मिट्टी में डालें। बीजों को ट्राइकोडर्मी विरडी 4 ग्राम प्रति किलो बीज से उपचारित करें। नियंत्रण के लिए खेत में देखा जाए तो मिट्टी को कार्बन्डाजिम 5 ग्राम प्रति लीटर पानी या कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 2 ग्राम प्रति लीटर पानी से भीगा दें।
- पाउडर मिल्क्यू पैची होता है और पत्तियों की ऊपरी सतह पर सफेद चूप दिखाई देता है और इसके नियंत्रण के लिए पानी में धूलशील सल्फर @ 20 ग्राम / 10 लीटर या प्रोपिकोनाज़ोल 10 ईसी (टोपस) 200 मि.ली. प्रति एकड़ 200 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करने की सलाह दी जाती है।

सौफ़

- सौफ़ के बीजों को सुखाने के बाद मसाले के रूप में प्रयोग किया जाता है। सौफ़ फाइबर, विटामिन सी, पोटेशियम का अच्छा स्रोत है। इसका उपयोग मास व्यंजन, सूप आदि के स्थान के लिए किया जाता है। इसकी पत्तियों का उपयोग व्यंजनों को सलाद में भी सजाने के लिए किया जाता है। सौफ़ में औषधीय गुण भी होते हैं। इसका उपयोग पाचन के लिए, कब्ज़, दस्त, गले में दर्द, सिरदर्द आदि के इलाज के लिए भी किया जाता है।
- जैविक पदार्थों से भरपूर सभी मिट्टी खेती के लिए उपयुक्त होती है लेकिन अच्छी जल निकासी वाली बलुई दोमट से दोमट मिट्टी में सबसे अच्छा परिणाम मिलता है। मिट्टी का पीएच 6.5 से 8 के बीच होना चाहिए। सौफ़ की बुवाई अक्टूबर के दूसरे पखवाड़े में करें। अच्छी उपज प्राप्त करने के लिए बुवाई में देरी से बचें।
- एक एकड़ भूमि के लिए 4 किलो बीज की आवश्यकता होती है।
- किस्में हैं आरएफ-35, आरएफ-101, गुजरात सौफ़-1, आजाद सौफ़-1।
- अच्छी तरह से सड़ी हुई कंपोस्ट 10-12qtl/एकड़ भूमि की तैयारी के समय मिट्टी में डालें। नाइट्रोजन 20 किलो प्रति एकड़ को यूरिया 45 किलो प्रति एकड़ के रूप में दो से तीन बाराबर भागों में डालें। नक्तन का पहला प्रयोग बेसल खुराक के रूप में करें, शेष नाइट्रोजन की मात्रा बुवाई के 30 और 60 दिन बाद डालें।
- यदि एफिड का हमला दिखें तो डाइमेथोएट 30ईसी@2 मि.ली. प्रति लीटर पानी में या मिथाइल डेमेटोन 25ईसी@2मि.ली प्रति लीटर पानी में मिलाकर स्प्रे करें।
- पाउडर मिल्क्यू का हमला यदि फसल पर दिखे तो गीले सल्फर 2 ग्राम को प्रति लीटर पानी में मिलाकर स्प्रे करें।

रबी मौसम के दौरान चारा और पशुधन प्रबंधन के लिए सलाह

चारा प्रबंधन- दो प्रमुख चारा फसलें बरसीम और जर्ज हैं।

बरसीम

- उच्च उत्पादन क्षमता, रसीलापन, स्वादिष्टता, पोषक मूल्य और सात महीने की लंबी अवधि में चारे की निरंतर आपूर्ति के कारण इसे लोकप्रिय रूप से चारे के राजा के रूप में जाना जाता है। प्रोटीन, कैल्शियम, फास्फोरस और अन्य खनिजों की आपूर्ति के अलावा यह मिट्टी की उर्वरता को समृद्ध करता है और इसकी उत्पादकता में सुधार करता है। नवंबर से मई के अंत तक बार-बार काटने पर यह लाभग 400 किटल अत्यधिक पौष्टिक और स्वादिष्ट चारा देता है।
- मेस्कावी, वार्डन, जेबी-1, बीएल-10, बीएल-22 और बीएल-42 महत्वपूर्ण किस्में हैं। बीएल-22 और बीएल-42 किस्में जून के मध्य तक हरे चारे की आपूर्ति करते हैं।
- यह दोमट से चिकनी दोमट मिट्टी, चूने से भरपूर और जल निकासी की अच्छी सुविधा वाले क्षेत्रों में अच्छी तरह से उगता है। बरसीम की खेती के लिए भूमि की ठीक से समतल कर लें और अच्छी जल निकासी सुनिश्चित करें। एक अच्छी बीज तैयारी तैयार करने के लिए तीन से चार जुताई करें, प्रत्येक के बाद पाता लगाएं। अक्टूबर से नवंबर बुवाई का सबसे अच्छा समय है।
- बरसीम उस मिट्टी पर अच्छी तरह से नहीं उगता है जहां इसे पहली बार बोया जाता है, क्योंकि इसे बैक्टेरिया (राइजोबियम ट्राइफोली) की विशेष प्रजातियों के साथ सहयोग की आवश्यकता होती है जो इसके उचित विकास के लिए आवश्यक है। 8-10 किलो बीज उपचार के लिए बरसीम कल्वर के एक पैकेट के साथ 10 प्रतिशत गुड़ का एक

- लीटर घोल तैयार करें। कल्चर को बीज पर रगड़े, बीज को छाया में सुखाएं और उसी दिन खड़े पानी में अधिमानतः शाम को प्रसारित करें, जबकि सौधी धूप बैक्टीरिया को मार देती है।
- 20 से 25 किलो बीज एक हेक्टेयर क्षेत्रफल के लिए पर्याप्त होता है। जल्दी पहली कटाई और अच्छी गुणवत्ता वाले चारे की अधिक उपज प्राप्त करने के लिए 400 ग्राम चीनी गोभी किस्म सरसों के बीज को बरसीम की सकल बीज दर के साथ मिलाएं। नवबर की बुवाई में जई की अनुशंसित बीज दर का आधा ही मात्र उपयोग करें।
 - आठ टन गोबर की खाद के साथ 20 किलो फॉस्फोरस प्रति एकड़ बुवाई के समय डालें। गोबर की खाद न होने की स्थिति में 10 किग्रा नाइट्रोजन (22 किग्रा यूरिया) एवं 32 किग्रा फास्फोरस (200 किग्रा सिंगल सुपर फास्फेट) प्रति एकड़ डालें। फॉस्फोरस को सिंगल सस्पर फॉस्फेट के रूप में लगाने से भी सन्तर की आपूर्ति होती है। बरसीम+राई ग्रास मिश्रण के मामले में प्रयोक्त कट के बाद 10 किग्रा न्यूत्रिजन (22 किग्रा यूरिया) प्रति एकड़ डालें।
 - खरपतवार हेतु बरसीम की बुवाई से पहले बेसिलिन (फ्लुक्सुलोरालिन) 45 ईसी @400 मिली 200 लीटर पानी में प्रति एकड़ की दर से छिड़काव करें। जहां खरपतवार (त्रिएथेमा पोर्टलाकैस्ट्रम) का प्रकोप गंभीर होता है, वहां बुवाई में देरी से अक्टूबर के दूसरे सप्ताह तक तापमान में गिरावट के कारण खरपतवारों का प्रकोप काफी कम हो जाता है।
 - पहली सिंचाई महत्वपूर्ण है और अच्छी फसल पाने के लिए इसे जल्दी करें। इसे हल्की मिट्टी में 3-5 दिनों के भीतर और भारी मिट्टी में बुवाई के 6-8 दिनों के भीतर देना चाहिए। मिट्टी के प्रकार और मौसम के आधार पर गर्मियों के दौरान 8-10 दिनों के अंतराल पर और सदियों के दौरान 10-15 दिनों के अंतराल पर सिंचाई करें।
 - पहली कटाई बुवाई के लगभग 45 दिनों के बाद तैयार हो जाती है और बाद की कटाई सर्दियों के दौरान 30-35 दिनों के अंतराल पर और गर्मियों में 25-30 दिनों के अंतराल पर 5-6 कटिंग देता है।

जई

- बरसीम के बाद जई एक महत्वपूर्ण चारे की फसल है। इससे प्रति एकड़ 200-220 कुंतल चारा मिलता है।
- यह ठंडे और नम मौसम में अच्छी तरह से बढ़ता है। फूल खिलने पर उच्च तापमान खाली स्पाइकलेट्स के अनुपात को बढ़ाता है और बीज की उपज को कम करता है।
- यह क्षारीय या जल जमाव की दशा को छोड़कर सभी प्रकार की मिट्टी में उगता है। यह हल्की अम्लीय और खार स्थितियों को भी सहन कर सकता है।
- जई की उन्नत किसें- केंट, ओएल-9, ओएस-6, ओएस-8, हरियाणा जय, यूपीओ-212, जेएओ 822 हैं।
- तीन जुराई करके खरपतवार मुक्त बीज क्यारी तैयार कर लें।
- बुवाई का सही समय अक्टूबर के दूसरे सप्ताह से अंतिम सप्ताह तक है। केरा विधि से या पोरा या डिल के साथ 25-30 सें.मी. पंक्तियों में प्रति एकड़ 30-40 किग्रा बीज की आवश्यकता होती है। द्वि-दिशात्मक विधि से बुवाई से यह 10-15% अधिक उपज प्राप्त कर सकता है। स्मट से मुक्त सुनिश्चित करने के लिए बीज को @ 01 ग्राम विटावैक्स प्रति किलोग्राम बीज से उपचारित करें।
- बुवाई के 15 दिन पहले प्रति एकड़ 10 टन गोबर की खाद या कम्पोस्ट में 25 किलो यूरिया बुवाई के समय और 25 किलो यूरिया बुवाई के 25-30 दिन बाद डालें। कम्पोस्ट की अनुपस्थिति में, इसे प्रति एकड़ 110 किग्रा यूरिया और 8 किग्रा फास्फेटिक उर्वरक (50 किग्रा सिंगल सुपरफॉस्फेट या 50 किग्रा डीएफी) की आवश्यकता होती है।
- बुवाई पूर्व सिंचाई सहित तीन से चार सिंचाई पर्याप्त होती है। पहली सिंचाई बुवाई के 25-30 दिन बाद और बाद में 30-35 दिनों के अंतराल पर करनी चाहिए। मल्टीकट प्रबंधन की स्थिति में प्रयोक्त कटाई के बाद सिंचाई अवश्य करनी चाहिए।
- खरपतवार प्रबंधन के लिए प्री-एमरजेंस लिनुरॉन या पोस्ट-एमरजेंस 2,4-डी 0.2 किग्रा प्रति एकड़ के की दर से प्रयोग करें।
- जई की कटाई बूट से दुग्ध अवस्था तक करते हैं। पहली कटाई बुवाई के 55-65 दिनों के बाद करनी चाहिए 3-4 इंच की उपयुक्त ऊंचाई छोड़कर और बाद में 45-50 दिनों के अंतराल पर कटाई करनी चाहिए।

- बीज उत्पादन के लिए फसल को 15 नवंबर से पहले बोया जाता है और पहली कटाई के बाद बुवाई के 55-65 दिन बाद छोड़ दिया जाता है। अंकुरित होने के बाद प्रति एकड़ 12 किलो एन (33 किलो घुरिया) की अतिरिक्त खुराक डालें। यह फसल लगभग 6 किटल बीज के अलावा 100 किटल प्रति एकड़ हरा चारा देती है।

पशुधन प्रबंधन-

रबी के मौसम में तापमान कम हो जाता है, इसलिए हमें अपने पशुओं को ठंड के तनाव से बचाने के लिए उचित व्यवस्था करनी चाहिए ताकि वे किसी भी समस्या (श्वसन संबंधी समस्याओं) से पीड़ित न हों और उत्पादन भी जारी रखें।

डेयरी पशु

- डेयरी पशुओं के दूध उत्पादन और शरीर की गर्मी को बनाए रखने के लिए अधिक सूखा चारा (जैसे घास, पुआल, आदि) या हरा चारा (बरसीम) खिलाएं। 10 लीटर दूध देने वाले बड़े पशु के लिए 25-30 किलो फलीदार चारा जैसे बरसीम 10 किलो भूसे के साथ मिला कर खिलाएं।
- मक्का, गेहूँ, जई आदि जैसे अनाज के रूप में तथा अतिरिक्त 3 किलो सांद्रण और तेल की खत्ती खिलाने से शरीर का तापमान सही बनाए रखने के साथ साथ बड़े जानवरों को आहार की आवश्यकताओं को पूरा करें। यदि अनाज महागा है या उपलब्ध नहीं है, तो तेल की खत्ती जैसे सरसों के तेल की खत्ती, कपास के बीज की खत्ती आदि का उपयोग अनुशंसित खुराक में करें।
- हाइपोथर्मिया नवजात बछड़ों के लिए एक बड़ा जोखिम है, और हाइपोथर्मिया को कम करने के लिए आवास, भोजन और जलयोजन महत्वपूर्ण उपाय हैं।
- निमोनिया और हाइपोथर्मिया जैसी स्थिति से बचने के लिए पशुओं को घर के अंदर रखें लेकिन हवा के झोंकों का ध्यान रखें। खुले घर के मामते में, पशु घर के चारों ओर पर्दे (तिरपाल, बांस, सूखी घास, धान की पुआल, जूट के बैग, गिनी बैग, जूट, आदि) का उपयोग करें।
- सूरज की रोशनी न केवल जानवरों के घर को गर्म करेगी बल्कि साथ ही इसे कीटाणुरहित भी रखेगी।
- पशु बाड़े में पानी किसी भी हाल में जमना नहीं चाहिए। बहुत ठंडा या बहुत गर्म पानी ट्युमेन माइक्रोफ्लोरा के लिए हानिकारक है। पानी का उचित सेवन सुनिश्चित करने के लिए आपूर्ति किए गए पानी को 10° C तक गर्म कर लें।
- वयस्क पशुओं के साथ-साथ युवा पशुओं को शरीर से गर्मी बनाए रखने के लिए सुरक्षात्मक कपड़ों (बर्तन, बोरे, कंबल, आदि) का प्रयोग करें।
- पशुओं के फर्श को बालू, लकड़ी के चुरा, आरी की धूल, पुआल, चावल की भूसी आदि का प्रयोग करके सूखा रखें।
- मूत्र और अन्य उत्सर्जन का निकास सुनिश्चित करें अन्यथा गीले फर्श से पशु को दस्त, बुखार, निमोनिया, कोक्सीडायोसिस, हाइपोथर्मिया हो सकती है तथा युवा जानवरों में बीमारी से खतरा अधिक होता है।
- भारतीय परिस्थितियों में, किसान आमतौर पर पशु घर को गर्म करने के लिए पशु घर में आग जलाते हैं लेकिन पशु घर से गैसों को हटाने के लिए उपाय अवश्य करना चाहिए।
- जानवरों को नियमित अंतराल पर कीटाणुरहित करें। यदि पशुओं को अभी तक एफएमडी, पीपीआर, हेमोरेजिक सेटिसीमिया, एंटरोटॉक्सिमिया, ब्लैक कार्टर आदि के खिलाफ टीका नहीं लगाया गया है, तो सुनिश्चित करें कि यह अभी किया जाए।
- इस मौसम में अधिकांश जानवर हाइपोथर्मिया से प्रभावित होते हैं। अतः पशु को बाहरी और आंतरिक दोनों तरह से ऊर्जा देकर गर्म रखें। 3-5 दिनों के लिए गर्म तरल पदार्थ, कैल्शियम से संबंधित तरल पदार्थ, लीवर टॉनिक को सहायक के रूप में दें।

भेड़ और बकरी

- प्रयोग भेड़ और बकरी के लिए कम से कम एक वर्ग मीटर फर्श की जगह प्रदान करें। फर्श गैर फिसलन वाला होना चाहिए और इन्सुलेशन के लिए घास, भूसी, पुआल आदि से ढका होना चाहिए।

- गंभीर मौसम में, जानवर गर्मी के लिए एक साथ भीड़ कर सकते हैं, तोकिन इससे चोट और सांस की बीमारियों की संभावना बढ़ जाती है।
- बकरियां कठोर जानवर हैं जिनके बालों का मोटा कोट होता है और उनकी देखभाल की कम से कम आवश्यकता होती है। राशन में मक्का या जई की शामिल करने से फ़ीड की ऊर्जा स्तर को बढ़ाने में मदद मिलती है। वांछित वजन बढ़ाने के लिए आम तौर पर भेड़ और बकरियों को 200-250 ग्राम अनाज अवश्य प्रदान करें।
- हमेशा धास, हे या अन्य प्रकार के रफेज प्रतिदिन दें। बरसीम प्रोटीन और ऊर्जा का एक बहुतरीन स्रोत है।
- मूत्र पथरी बनने के डर से बचने के लिए चारे और भूसे के अधिक सेवन पर ध्यान देना चाहिए। इस स्थिति से बचने के लिए हमेशा एक अच्छा नमक और खनिज स्रोत प्रदान करें।
- प्रजनन काल के दौरान प्रजनन करने वाले नरों को अतिरिक्त सांत्रित चारा (अनाज) दिया जाना चाहिए ताकि वे अच्छा प्रदर्शन कर सकें।
- कीचड़ या गीली परिस्थितियों में रहने वाले जानवरों के पैरों में दरार और चोट लगने की आशंका होती है, और वे पैर के सङ्ग्रन्थों से पीड़ित हो सकते हैं। पैरों को जिंक सल्फेट और कॉपर सल्फेट के घोल में डुबोए।
- पेट और गोल कृमियों से बचाव के लिए भेड़ और बकरियों को साल में कई बार कृमि मुक्त करें। नवंबर या दिसंबर में डीवर्मिंग (कृमि मुक्त) ज़रूर करें।
- सर्दियों के महीनों के दौरान जूँ और धून तेजी से फैलता है। इनके उच्च संक्रमण से एनीमिया और त्वचा की गुणवत्ता खराब हो सकती है। पर्मेंश्चिन और पाइथेश्रिन का उपयोग करने की सलाह दी जाती है। पशु चिकित्सक की सिफारिश के साथ आइवर मेकेटीन का उपयोग किया जा सकता है।
- नवजात शिशुओं को जन्म के तुरंत बाद सुखाना चाहिए योंकोंक इनमें हाइपोथर्मिया जल्दी शुरू हो सकता है। मेमने और बच्चे नवजात निमोनिया के लिए अतिसंवेदनशील होते हैं, इसलिए सूखी और गर्म जगह प्रदान करते हैं।

मुर्गी पालन

- सर्दियों में जब तापमान 15 डिग्री सेल्सियस से नीचे चला जाता है, तो वजन बढ़ाने और अंडे के उत्पादन में कमी, पानी का सेवन, प्रजनन क्षमता और हैचलिटी, बढ़ी हुई मसुद दर आदि जैसी विभिन्न समस्याएं होती हैं।
- घर का डिजाइन इस तरह से करें कि दिन के समय में अधिकतम सूर्य का प्रकाश शेड में प्रवेश करे और ठंडी हवाओं से भी सुक्षित रहे, इसके लिए बारदानों को ठंडी हवा के प्रवेश पर लटका दिया जाना चाहिए।
- पक्षी अपनी सांसों में बहुत अधिक नमी छोड़ते हैं जो उक्से स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है। यदि प्रतिबंधित बैटिलेशन है तो यह हवा में अमोनिया का निर्माण करता है जिससे श्वसन संबंधी समस्याएं होती हैं। चूजे को घर में रखने से पहले फर्श को आरी की धूल, कटे हुए अखबार, अनाज की भूसी आदि से ढक दें और तापमान बनाए रखने के लिए बुखारी या हीटर या बल्ब लगाएं।
- कुक्कुट भौजन का उपयोग दो मुख्य उद्देश्यों के लिए करता है शरीर के तापमान को बनाए रखने के लिए ऊर्जा स्रोत के रूप में और सामान्य शारीरिक गतिविधियों को चलाने के लिए और हड्डियों, मांस, पंख, अंडे आदि के विकास के लिए निर्माण सामग्री के रूप में। इसलिए, पर्याप्त, संतुलित और स्वस्थ चारा सुनिश्चित करें।
- चूंकि कम तापमान के कारण अधिक फ़ीड का सेवन और उच्च ऑक्सीजन की मांग होती है, पक्षियों को तेजी से वजन बढ़ाने और अंडे के उत्पादन के लिए फ़ीड प्रदान करें।
- अगर पानी काफी ठंडा है तो उसमें गर्म पानी डालकर चिकन को देना चाहिए, ताकि पानी सामान्य तापमान पर आ जाए, क्यूंकि कुक्कुट को पानी के माध्यम से ही कई टीके/दवा/एंटी-ट्रेस विटामिन दिए जाते हैं। पोल्ट्री शेड में कीट और चूहा का नियंत्रण सुनिश्चित करें। फ़ीड को सूखी जगह पर स्टोर करें ताकि वह नमी के संपर्क में न आए।

मछली

- मछली ठंडे खून वाली जलीय जंतु होने के कारण सर्दियों में विशेष देखभाल की चाहती है। चूंकि सतही जल का तापमान निचली परतों की तुलना में अधिक ठंडा होता है, इसलिए मछलियां निचले क्षेत्र में रहना पसंद करती हैं। पानी की गहराई

6 फीट तक रखें, ताकि गर्म तली में हाइबरनेट करने के लिए पर्याप्त जगह मिल सके।

- जैसे-जैसे सर्दियों के दौरान दिन का समय और प्रकाश की तीव्रता भी कम हो जाती है, तालाबों में औंकरीजन का स्तर कम हो जाता है क्योंकि प्रकाश संश्लेषक गतिविधि कम हो जाती है, खासकर बादल वाले मौसम में तालाबों को ताजा पानी डालकर या दिन के शुरुआती घंटों के दौरान वायु घंटों का उपयोग करें।
- तापमान में कमी के साथ मछली का आहार सेवन कम हो जाता है क्योंकि उसका पाचन तंत्र सुस्त हो जाता है। इसलिए, घटते तापमान के साथ भोजन दर को 50-75% तक कम करना आवश्यक है।
- जब पानी ठंडा हो जाता है, तो ठंडे खुन वाली मछलियों का चयापचय धीमा होने लगेगा। यदि तापमान गिरता है, तो उसे खिलाना बंद करने की सलाह दी जाती है।
- सर्दियों के दौरान तालाब में विभिन्न कवक, जीवाणु और परजीवी रोग जैसे फिन रोट, गिल रोट, ईयूएस और आर्गुलोसिस दिखाई दे सकते हैं। सर्दियों की शुरुआत से ठीक फहले तालाब को CIFAX @ 400 मिली/एकड़ से उपचारित करें। पोटेशियम परमैगेनेट @1-2 किग्रा/एकड़ या चूना पक्षर @50-100 किग्रा/एकड़ से भी उपचारित करें और नमक @100 किग्रा/एकड़ सर्दियों में प्रयोग मछली की बीमारी से बचाने में भी मदद करता है।

पोषण सुरक्षा और आय सृजन के लिए सब्जियों और फलों का मूल्यसंवर्धन

व्यक्तियों की स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए भोजन को एक प्रमुख कारक माना गया है। भोजन में सक्रिय तत्व अमीनो एसिड, वसा, फाइबर, एंटीऑक्सीडेंट, वर्णक, विटामिन और खनिज शामिल हैं जो विभिन्न खाद्य समूहों जैसे दालों, अनाज, फलियां, तिलहन, फल और सब्जियों में मौजूद होते हैं जो मानव स्वास्थ्य को बढ़ावा देने में प्रभावी हैं। इन सभी खाद्य समूहों में फल और सब्जियां मानव पोषण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, विशेष रूप से विटामिन, खनिज और आहार काफ़िबर के स्रोत के रूप में। विभिन्न फल और सब्जियां जैसे गाजर, टमाटर आद्, अदरक, हरी पतेदार सब्जियां सुरक्षात्मक खाद्य पदार्थ हैं क्योंकि उनमें पोषण मूल्य और एंटीऑक्सीडेंट गुण होते हैं। विभिन्न मूल्य वर्धित उत्पादों के निर्माण द्वारा ऐसे फलों और सब्जियों का मूल्यवर्धन कर संरक्षित किया जा सकता है।

टमाटर

- टमाटर सबसे लोकप्रिय सुरक्षात्मक खाद्य पदार्थों में से एक है, क्योंकि इसमें मौजूद लाइकोपीन तत्व, उल्कृष्ट पोषक मूल्य, एंटीऑक्सीडेंट गुण और औषधीय गुणों का एक पावरहाउस है। यह कैल्शियम, मैग्नीशियम, फास्फोरस, लोहा, सोडियम, पोटेशियम और विटामिन विशेष रूप से ए और सी जैसे खनिजों का एक समृद्ध स्रोत है। प्रसंस्कृत उत्पाद जैसे पाउडर, टमाटर का रस, पेस्ट, प्यूरी, सॉस, आदि।
- टमाटर स्वास्थ्य को बढ़ावा देने वाले यौगिकों का एक उल्कृष्ट स्रोत है, विटामिन सी और ई सहित खनिजों और एंटीऑक्सीडेंट विटामिनों का संतुलित मिश्रण होने के साथ-साथ लाइकोपीन, बीटा कैरोटीन, थायमिन, राइबोफ्लेविन, नियासिन, त्यूटिन और फ्लेवोनोइड्स जैसे केरेसेटिन से भरपूर है। टमाटर में मुख्य एंटीऑक्सीडेंट कैरोटीनॉयड विशेष रूप से लाइकोपीन होते हैं जो अन्य फलों और सब्जियों की तुलना में उच्चतम लाइकोपीन का स्रोत होता है। विभिन्न कैरोटीनॉयड, लाइकोपीन, मानव सीरम में सबसे प्रचुर मात्रा में होता है, जिसमें कई प्रकार के कैंसर और हृदय रोगों जैसे अपकृती रोगों की रोकथाम हेतु महत्वपूर्ण एंटीऑक्सीडेंट शामिल है।
- उचित प्रसंस्करण, भंडारण और परिवहन सुविधाओं की कमी के कारण, टमाटर की भारी मात्रा में नुकसान होता है, इसलिए उचित प्रसंस्करण और भंडारण इसकी उपलब्धता और कमी की अवधि के दौरान उपयोग सुनिश्चित करता है। विभिन्न टमाटर का उत्पाद जैसे टमाटर का गुदा, टमाटर प्यूरी, टमाटर का पेस्ट, टमाटर के गुच्छे, डिब्बाबंद टमाटर, टमाटर के चैप, टमाटर का सूप, टमाटर पाउडर और सॉस आदि मूल्य वर्धित उत्पादों को तैयार करने के लिए ताजा टमाटर का प्रसंस्करण किया जा सकता है।

गाजर

- यह अपने पोषक तत्वों जैसे कैरोटीन और कैरोटीनॉयड के लिए अच्छी तरह से जाना जाता है, इसके अलावा इसमें एस्कॉर्बिक एसिड, टोकोफेरोल इत्यादि जैसे विटामिन और खनिजों की पर्याप्त मात्रा होती है। जड़ों और अन्य सब्जियों की तुलना में गाजर कैरोटीन (विटामिन ए) का सबसे अच्छा स्रोत है जो स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए एक आवश्यक

पोषक तत्व है। गाजर में च्यूटास्युटिकल गुण होते हैं जैसे कि एंटीप्यूटाजेनिक, कीमो निवारक, धूप से सुरक्षा और प्रतिरक्षा बढ़ाने वाले पहलू। एंटीऑक्सिडेंट कैरोटीनाइयड, विशेष रूप से बीटा-कैरोटीन की उच्च सांद्रता की उपस्थिति गाजर के जैविक और औषधीय गुणों को बढ़ाती है। गाजर में फाइबर पर्याप्त होता है, जिसके परिणामस्वरूप विभिन्न उत्पादों को बनाने के लिए विभिन्न प्रसंस्करण कार्यों का विकास हुआ है।

- गाजर को धूरिक एसिड को खत्म करने में कारगर बताया गया है। गाजर न केवल विटामिन ए की कमी को रोकता है, बल्कि कैसर और अन्य आहार संबंधी मानव रोगों को भी रोकता है। इसका कैसर कौशिकाओं के खिलाफ अधिक साइटोटोक्सिक प्रभाव होता है और उन एंजाइमों को कम करता है जो प्रीकार्सिनोजेन्स को कार्सिनोजेन्स में बदलने को बढ़ावा देते हैं। यह स्ट्रोक, उच्च रक्तचाप, ऑस्टियोपेनोसिस, मोटियाबिंद, गठिया, हृदय रोग और मूत्र पथ के संक्रमण से बचाने के लिए प्रतिरक्षा प्रणाली को भी बढ़ा सकता है।
- प्रसंस्करण से इसकी उपलब्धता पूरे वर्ष सुनिश्चित होगी और परिवहन और भंडारण की लागत में कमी आएगी। सर्दियों के मौसम में, जब गाजर प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होती है, तो विभिन्न प्रसंस्कृत उत्पादों को तैयार किया जा सकता है और ऐर टाइट कंटेनर में रखा जा सकता है, जिसे विभिन्न व्यंजनों में शामिल किया जा सकता है।
- गाजर के विभिन्न प्रसंस्कृत उत्पाद हैं गाजर का रस, गाजर का पाउडर, गाजर के गुच्छे, डिब्बाबंद गाजर, गाजर की कैंडी, गाजर का हलवा, गाजर के दाने, गाजर का सूप, गाजर का दलिया और शिशु आहार।
- गाजर को डीहाइड्रेट करके तैयार किया गया गाजर पाउडर पोषण मूल्य को बढ़ाने के लिए पारंपरिक खाद्य उत्पादों में शामिल किया जाता है और इस तरह पराठा, दलिया और लड्डू जैसे मूल्य वर्धित उत्पादों का उत्पादन होता है जो पौष्टिक रूप में लंबी अवधि के लिए सुरक्षित होता है।

अदरक

- अदरक भारत के पांच सबसे महत्वपूर्ण मसालों में से एक है, जो मिर्च, लहसुन और हल्दी के बाद आता है। कंद की परिषक्ता का इसकी गुणवत्ता और प्रसंस्करण पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालता है।
- अदरक आमतौर पर एक खाद्य योज्य के रूप में प्रयोग किया जाता है, और मसाले के रूप में इसका उपयोग भोजन में विशिष्ट स्वाद प्रदान करने के लिए किया जाता है। इसे एंटीऑक्सीडेंट गुणों के लिए जाना जाता है जो मांस और मांस उत्पादों के संरक्षण में इसके उपयोग को बढ़ाता है।
- अदरक का उपयोग कई प्रकार की मरती और उत्ती के इलाज के लिए किया जाता है। अदरक के चिकित्सीय गुण प्रभावी रूप से रक्त परिसंचरण को उत्तेजित करते हैं, शरीर से विशाक घटार्डों को निकालते हैं, अंतों और गुर्दे को साफ करते हैं और त्वचा को पोषण देते हैं। अदरक की जड़ के अन्य उपयोगों में अस्थ्या, ब्रॉकाइटिस और अन्य श्वसन समस्याओं का उपचार शामिल है। चिकित्सीय गुणों के अलावा, अदरक को एंटीऑक्सिडेंट गुणों और प्रोटियोलिटिक गतिविधि के लिए महत्वपूर्ण है। अदरक का उपयोग विभिन्न खाद्य तैयारियों में इसका विशिष्ट स्वाद प्रदान करने के लिए किया जाता है और संभवतः यह एकमात्र ऐसा मसाला है जिसका उपयोग जिंजर बीयर, जिंजर एले और जिंजर वाइन जैसे पेय पदार्थों के उत्पादन में किया जाता है।
- हालांकि अदरक का उत्पादन बहुत अधिक होता है, लेकिन उचित भंडारण और परिवहन सुविधाओं के अभाव में, लगभग 20 प्रतिशत ताजा अदरक की फसल खराब हो जाती है। इसलिए, अतिरिक्त अदरक को विभिन्न संरक्षित रूपों में संसाधित करना आवश्यक हो जाता है, जो पूरे वर्ष उपलब्ध रहता है। अदरक के विभिन्न प्रसंस्कृत उत्पादों में पेस्ट, कैंडी, प्रिजर्व, अचार, चॉकलेट, पेय पदार्थ, पाउडर, जूस, आइसक्रीम, ऑलियोरेसिन आदि शामिल हैं।

कम्फर्सी मेथी

- मेथी एक लोकप्रिय हरी पत्तेदार सब्जी है जो सर्दियों के मौसम में कम कीमत पर भरपूर मात्रा में उपलब्ध होती है। ब्लैंडिंग उपचार का उपयोग जीएलवी के रंग और पोषण मूल्य को संरक्षित करने के लिए किया जाता है। मेथी के पत्तों को निर्जिलित करके प्राप्त मेथी के पाउडर का उपयोग पराठा और साग तैयार करने के लिए किया जाता है।

आलू

- आलू एक बहुमुखी भोजन है, जिसे मुख्य भोजन के रूप में, पूरक सब्जी के रूप में, नाश्ते की वस्तु के रूप में या कई

रूपों में प्रयोग किया जा सकता है। आलू भोजन के पोषण मूल्य में महत्वपूर्ण योगदान देता है, क्योंकि यह न केवल ऊर्जा का एक समृद्ध स्रोत है, बल्कि इसमें अच्छी गुणवत्ता वाले खाद्य प्रेड प्रोटीन, आहार फाइबर, कई खनिज और ट्रेस तत्व, अवश्यक विटामिन और बहुत कम या नगण्य वसा होता है। आलू बहुमुखी हैं क्योंकि उन्हें विभिन्न रूपों में खाया जा सकता है जैसे कि उबला हुआ, तला हुआ, बेक किया हुआ, भुना हुआ, स्टीम्ड और यहां तक कि तले गए रूपों जैसे फ्रेंच फ्राइज़, चिप्स, पापड़, फलेक्स, पासा, क्यूब्स, दाने, आटा, डिब्बाबंद आलू आदि।

- आलू की भंडारण अवधि कम होती है। इसलिए, ऐसी परिस्थितियों में आलू का प्रसंस्करण, भंडारण जीवन और विभिन्न रूपों में ऑफ-सीजन में आपूर्ति को प्रभावी तरीके से बढ़ाने के साधन के रूप में कार्य करता है। आलू के विभिन्न प्रसंस्कृत उत्पाद जैसे आलू का आटा, आलू के दाने, आलू के गुच्छे, आलू के दाने और आलू के टुकड़े।

शकरकंद

- स्वीट पोटेटो, जो आमतौर पर सर्दियों के मौसम में उत्तराई जाने वाली जड़ वाली सब्जी है, अपने उच्च पोषक मूल्य, स्वाद और पाचनशक्ति के लिए मूल्यवान है। भारत में शकरकंद का व्यापक रूप से उपयोग उबालने, पकाने या तरने के बाद खाने के लिए किया जाता है। हालांकि, अन्य देशों में, शकरकंद के आटे का उपयोग अक्सर बिस्कुट, केक और हल्ला में किया जाता है।
- अन्य सब्जियों की तुलना में शकरकंद का लाभ यह है कि इसकी विकास अवधि कम होती है और प्रतिकूल मौसम की स्थिति शायद ही कभी पूरी फसल का नुकसान करती है। शकरकंद के प्रसंस्करण से उनकी उपलब्धता बढ़ जाती है और कटाई के बाद की बर्बादी कम हो जाती है। शकरकंद के प्रसंस्कृत उत्पाद शकरकंद का आटा, शकरकंद के दाने और डिब्बाबंद शकरकंद हैं।
- शकरकंद के आटे को ब्रेड और बिस्किट सेंकने, गरमागरम केक, घी, नुडल्स, कैडी, पुडिंग और अन्य तैयारियों के लिए गेहूँ के आटे में शामिल किया जा सकता है। इसे चपाती और ब्रेड बनाने के लिए गेहूँ के आटे के साथ मिलाया जा सकता है। शकरकंद आहार प्रोटीन, पर्याप्त मात्रा में विटामिन (बीटा कैरोटीन, बी कॉम्प्लेक्स और विटामिन सी) खनिज, ट्रेस तत्व और उच्च ऊर्जा मूल्य का एक महत्वपूर्ण स्रोत हैं।

बिहार BIHAR

रबी मौसम के प्रमुख कृषि कार्य का परामर्श

गेहूँ

- समय पर बुआई करने से अच्छी उपज मिलती है एवं परिपक्व स्थिति में टर्मिनल हीट स्ट्रेस से भी बच सकते हैं। समय पर बुआई के लिए उचित समय 15 नवम्बर से 30 नवम्बर एवं विलंब से बुआई हेतु 1 दिसम्बर से 31 दिसम्बर, जबकि असिंचित क्षेत्र के लिए 15 अक्टूबर से 10 नवम्बर अनुशंसित है।
- अधिक उपज प्राप्त करने के लिए समय से बुआई हेतु प्रभेद जैसे DBW-187, HD-2967, K-1317, HD-3226, DBW-39, K-0307, HD-2824, HD-2402, CBW-38, PBW-343, Sabour Smridhi वैसा क्षेत्र जहाँ पर विलंब से बुआई होती है वहाँ के लिए गेहूँ की 110 से 115 दिन का प्रभेद का इस्तेमाल करना चाहिए, जैसे HD-3118, HD-2985, HI1563, DBW-107, DBW-14, HD-2643, HP-1633, HD-2307, DBW-173, PBW-752, HUW-234, PBW-373, Sabour Shrestha. असिंचित क्षेत्र के लिए अनुशंसित प्रभेद जैसे HD-3171, HD-2888, K-8027, C-306, Macs 6145, Sabour Nirjal, HDR-77, K-9465.
- बीज दर, बुआई के समय एवं मिट्टी की नमी पर निर्भर करता है। सामान्यतः 125 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर बीज की आवश्यकता होती है। जबकि विलंब से बुआई में 150 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर बीज की आवश्यकता होती है। कतार से कतार की दूरी 20 से 22.5 सेटीमीटर अनुशंसित है, जबकि विलंब से बुआई में कतार से कतार की दूरी 18 सेटीमीटर अनुशंसित है।
- नहर क्षेत्र में ज्यादा नमी होने के कारण बुआई में विलंब होती है। इसलिए अगर बुआई जीरोटिल ड्रील मशीन से करते हैं तो समय पर बुआई हो सकती है और लागत में भी कमी आएगी।
- सामान्यतः अच्छी उपज के लिए 120 से 150 किलोग्राम नेत्रजन, 60 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 40 किलोग्राम पोटाश की जरूरत पड़ती है। नेत्रजन का उपरिवेशन दो बार की जाती है, पहला 60 किलोग्राम बुआई के समय एवं दूसरी मात्रा 60 किलोग्राम पहली सिंचाई के समय और फॉस्फोरस एवं पोटाश की पूरी मात्रा बुआई के समय देना चाहिए। धान-गेहूँ फसल चक्र में 25 किलोग्राम/हेक्टेयर जिंक का उपरिवेशन करने से उत्पादकता में वृद्धि देखी गई है। विलंब से बुआई की स्थिति में 100 से 120 किलोग्राम नेत्रजन, 40 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 20 किलोग्राम पोटाश का प्रयोग करें।
- अच्छी पैदावार के लिए आवश्यक है कि समय पर फसल की सिंचाई के लिए आम तौर पर 3-4 सिंचाई की आवश्यकता पड़ती है। गेहूँ में हमेशा हल्की सिंचाई करना चाहिए। सामान्यतः अच्छी पैदावार के लिए बिहार में 4 क्रांतिक अवस्थाओं पर सिंचाई करनी चाहिए। पहला शीर्ष जड़ें निकलने के समय (20-25 दिनों के बाद), दूसरा कल्पे निकलने के अंतिम अवस्था में (40-45 दिनों के बाद), तीसरा गाभा के समय (65-70 दिनों के बाद) एवं चौथा दानों में दूध भरते समय (90-100 दिनों के बाद)।
- सामान्यतः गेहूँ चौड़ी एवं सकरी पत्ती खरपतवार से ज्यादा प्रभावित होता है। मिश्रित खरपतवार को नियंत्रण के लिए सत्फोसल्फुरान +मेटसल्फुरान /40 ग्राम सक्रिय तत्व या क्लोडिनोफॉब+मेटसल्फुरान 400 ग्राम प्रति हेक्टेयर को 500 लीटर पानी में घोल कर बुआई के 25-30 दिनों बाद छिड़काव करें।
- सकरी पत्ती के नियंत्रण के लिए सत्फोसल्फुरान /33 ग्राम सक्रिय तत्व या क्लोडिनोफॉब 150 ग्राम सक्रिय तत्व प्रति हेक्टेयर को 500 लीटर पानी में मिलाकर बुआई के 25-30 दिनों बाद छिड़काव करें।
- चौड़ी पत्ती खरपतवार के लिए मेटसल्फुरॉन /10 ग्राम सक्रिय तत्व या 2-4-डी सोडियम साल्ट / एक किलोग्राम प्रति हेक्टेयर 600-700 लिटर पानी में घोल कर बुआई के 30-35 दिनों के बाद छिड़काव करें।

मक्का

- रबी मक्का की खेती विभिन्न प्रकार की मूदा में सफलतापूर्वक किया जा सकता है। जिसके लिए जीवाशमयुक्त बहुई दोमट से चिकनी दोमट मिट्टी जिसमें अच्छी जलधारण क्षमता हो उपयुक्त होती है।
- रबी मक्का की उन्नतशील प्रभेद जैसे-गंगा 11, DHM-105, राजेन्द्र हाइब्रीड मक्का 1, धबल, लक्ष्मी, देवकी, शक्तिमान 1, शक्तिमान 2, शक्तिमान 3, शक्तिमान 4 की बुआई करें।
- रबी मक्का की बुआई का उपयुक्त समय मध्य अक्टूबर से 10 नवम्बर है। समय से बुआई करने पर अधिक उत्पादन प्राप्त किया जा सकता है। पंक्ति से पंक्ति एवं पौधे से पौधे की दूरी 60×20 सेंटीमीटर एवं बीज को 5-7 सेंटीमीटर गहराई में बुआई करनी चाहिए। बीज दर बीज की प्रभेद एवं मिट्टी की नमी पर निर्भर करता है। सामान्यतः 20-22 किलोग्राम बीज प्रति हेक्टेयर की दर से उपयोग की जाती है।
- बुआई की लागत कम करने हेतु एवं समय पर बुआई के लिए सीड फ्रील मशीन से मक्का की बुआई कर सकते हैं। जिस खेत में खरपतवार का प्रकार ज्यादा हो वहाँ Paraquat @ 1 / 1.25 लिटर को 500 लीटर प्रति हेक्टेयर पानी में मिलाकर बुआई से पहले छिड़काव करें।
- उर्द्धरकों का व्यवहार मूदा जाँच के आधार पर करना चाहिए। अच्छे उत्पादन हेतु 10-15 टन कम्पोस्ट खाद बुआई से 10-15 दिन पूर्व खेत में डालकर जुताई के समय मिला देना चाहिए तथा 150 से 180 किलोग्राम नेत्रजन, 70-80 किलोग्राम फॉस्फोरस, 70-80 किलोग्राम पोटाश एवं 25 किलोग्राम जिक सल्फेट प्रति हेक्टेयर की दर से व्यवहार करें। बुआई के समय फॉस्फोरस, पोटाश एवं जिंक की पूरी मात्रा, नेत्रजन का एक तिहाई बुआई के समय एवं एक तिहाई पौधे के घुटने के बाबर होने पर और एक तिहाई धनबाल निकलने से पूर्व व्यवहार करें।
- मक्का में जिंक की कमी सामान्यतः देखी जाती है। इसके नियंत्रण के लिए 25 किलोग्राम जिक सल्फेट हेट्याइड्रेट (21%) या 16.25 जिक सल्फेट मोनोहाइड्रेट (33%) प्रति हेक्टेयर बुआई से पहले उपरिवेशन करें। खड़ी फसल में अगर जिंक की कमी के लक्षण दिखाई दे तो जिंक की समान मात्रा को मिट्टी में मिला कर छिड़काव करें।
- मक्के में सिंचाई के लिए 4 क्रांतिक अवस्थाएँ होती हैं, पहली सिंचाई- 10 से 15 दिनों के फसल, दूसरी घुटने की ऊँचाई, तीसरी फूल की अवस्था एवं चौथी दाने में दूध भरने के समय करें। तापमान में वृद्धि एवं कम वर्षा होने की स्थिति में एक से दो सिंचाई दी जा सकती है। अगर फसल ज्यादा ठंड से प्रभावित हो तब खेत में हल्की सिंचाई करें। यदि फसल जलजमाव से प्रभावित हो तो यूरिया का 3% एक सप्ताह के अंतराल पर छिड़काव करें।
- मक्के में खरपतवार प्रबंधन के लिए कम से कम दो निराई गुड़ाई अत्यंत आवश्यक है। पहला निराई गुड़ाई बुआई के 20-25 दिन बाद एवं दूसरा बुआई के 40-45 दिन बाद करें। सायानिक के माध्यम से खरपतवार नियंत्रण हेतु भारी मिट्टी के लिए Atrazine 2 किलोग्राम/हेक्टेयर एवं हल्की मिट्टी के लिए 1.25 किलोग्राम/हेक्टेयर को 500 लीटर पानी में घोल कर बुआई के 10 दिनों के अंदर छिड़काव करें। फसल में खरपतवार नियंत्रण हेतु Tembotrione 26.5 मिली लीटर/हेक्टेयर 375 लीटर पानी में मिलाकर बुआई के 20 दिन बाद छिड़काव करें। यदि खेत में मोथा का प्रकोप ज्यादा हो तब 2-4 डी एमीन साल्ट, 58 एस एल एक लीटर/हेक्टेयर 375 लीटर पानी में मिला कर बुवाई के 20-25 दिनों बाद छिड़काव करें।
- फॉल आर्मी वर्म का प्रबंधन - इसको नियंत्रण करने हेतु फसल में Chlorantraniliprole @ 0.5 मिली प्रति लीटर पानी या Spinetoram @ मिली प्रति लीटर पानी या Emamectin Benzoate ग्राम प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। एक एकड़ के लिए 120 लीटर पानी की आवश्यकता पड़ती है। जबकि पुराने पौधों में 200 लीटर पानी का इस्तेमाल प्रति एकड़ होता है।
- अधिक उत्पादन हेतु नेत्रजन का प्रयोग दाना भरने की अवस्था में देने से दाना अच्छी प्रकार से भरता है। इसलिए नेत्रजन को 5 बार में प्रयोग करें। 20 प्रतिशत नेत्रजन बुआई के समय, 25 प्रतिशत 4 पत्ती की अवस्था में, 30 प्रतिशत 8 पत्ती की अवस्था में, 20 प्रतिशत धनबाल निकलते समय में शेष 5 प्रतिशत दाना भरने की अवस्था में उपरिवेशन करें।

दलहन

चना

- अधिक उत्पादन हेतु समय से बुआई के लिए उत्तर प्रभेद जैसे- RSG 44, Pusa 329, Pusa 362, DCP 92-3, GCP 105, KWR 108, BG 1003, प्राति, विजय, पंतचना-3, पंतचना-4, HK4, बिरसा चना-3, सदाबहार एवं विलंब से बुआई हेतु प्रभेद पूसा 372, KPG 59.
- अच्छी अंकुरण हेतु बुआई से पूर्व हल्की सिंचाई करें।
- चने की बुआई मध्य अक्टूबर से मध्य नवम्बर के बीच कर लें। छोटे दाने वाले प्रभेदों के लिए बीज दर 75 से 80 किलोग्राम/हेक्टेयर एवं बड़े दाने वाले प्रभेदों के लिए 100 किलोग्राम/हेक्टेयर अनुशंसा है।
- छोटे दाने वाले प्रभेदों के लिए बुआई की दूरी 30x10 सेंटीमीटर एवं बड़े दाने वाले प्रभेदों के लिए बुआई की दूरी 45x10 सेंटीमीटर रखें। बुआई की गहराई 8 से 10 सेंटीमीटर होनी चाहिए।
- बुआई करने से पहले बीज को FIR से बीजोपचार करें। सबसे पहले बीज को फफूँदनाशी कार्बेंडजाइम 2 ग्राम प्रति किलो बीज तत्पश्चात् कीटनाशी क्लोरोएपाइरीफॉस 20EC, 8 मिली/ किलो बीज की दर से उपचारित कर, छाया में सूखने दें। बुआई से 2 से 3 घंटे पहले, उपचारित बीज को राइजोबियम कल्चर 10 ग्राम/किलो बीज से उपचारित कर बुआई करें।
- चना की खेती के लिए दोमट एवं भारी दोनों प्रकार की मिट्टी उपयुक्त मानी जाती है। सामान्य उर्वरा शक्ति वाले खेतों में 20 किलोग्राम नेत्रजन (45 किलो यूरिया), 40 किलोग्राम फॉस्फोरेस (250 किलो SSP) एवं 20 किलोग्राम पोटाश अंतिम जुताई के समय व्यवहार करें। अगर डी.ए.पी. उपलब्ध हो तो 100 किलोग्राम डी.ए.पी./हेक्टेयर अंतिम जुताई के समय उपरिवेशन करें।
- चना मुख्यतः वर्षा आधारित फसल है। जहाँ सिंचाई की सुविधा उपलब्ध हो, वहाँ बुआई से पहले हल्की सिंचाई कर लें। चने में दो सिंचाई आवश्यक होती है। प्रथम सिंचाई बुआई के 45 दिन बाद एवं दूसरी सिंचाई बुआई के 75 दिन बाद करें, पुष्पावस्था में सिंचाई न करें।

मसूर

- मसूर की उत्तर प्रभेद जैसे- PL 406, PL 639, K75(Mallika), HUL-57, NDL 2, WBL 58, WBL 77, PL 777-12 (Arun), IPL 406, नरेन्द्र मसूर 1, BR25, KLS 218.
- मसूर की बुआई के लिए उत्तम समय मध्य अक्टूबर से मध्य नवम्बर के बीच उपयुक्त है। कीट एवं रोग के प्रकोप से बचने के लिए समय पर बुआई बीज उपचारित करें।
- अगर मसूर की बुआई में वृद्धि हो जाती है तो उक्टा रोग लगने की संभावना ज्यादा रहती है एवं समय से पहले बुआई के कारण वनस्पतिक विकास में वृद्धि हो जाती है।
- मसूर के लिए पंक्ति से पंक्ति की दूरी 30 सेंटीमीटर एवं पौधे से पौधे की दूरी 10 सेंटीमीटर रखने पर पौधों का विकास अच्छा होता है। बुआई की गहराई 4 से 5 सेंटीमीटर होनी चाहिए। मसूर के लिए सामान्यतः 30 से 35 किलोग्राम/हेक्टेयर एवं पैरा फसल के लिए 50 से 60 किलोग्राम/हेक्टेयर बीज की आवश्यकता पड़ती है।
- बुआई करने से पहले बीज को बीज को फफूँदनाशी कार्बेंडजाइम 1 ग्राम प्रति किलो बीज तत्पश्चात् कीटनाशी क्लोरोएपाइरीफॉस 20EC, 2 मिली/ किलो बीज की दर से उपचारित कर छाया में सूखने दें। बुआई से 2 से 3 घंटे पहले, उपचारित बीज को राइजोबियम कल्चर 10 ग्राम/किलो बीज से उपचारित कर बुआई करें।
- खेत तैयार करने के समय 5 से 10 टन FYM /हेक्टेयर समान रूप से मिट्टी में मिला दें। सामान्य उर्वरा शक्ति वाले खेतों में 20 किलोग्राम नेत्रजन (45 किलो यूरिया), 40 किलोग्राम फॉस्फोरेस (250 किलो SSP) एवं 20 किलोग्राम पोटाश अंतिम जुताई के समय व्यवहार करें। अच्छी उत्पादादा हेतु 20 किलोग्राम सल्फर/हेक्टेयर बुआई के समय उपरिवेशन करें।
- मसूर में सिंचाई की आवश्यकता नहीं होती है, लेकिन खेत में नमी कम होने की स्थिति में 2 सिंचाई अनुशंसित है। प्रथम सिंचाई बुआई के 45 दिन बाद एवं दूसरी सिंचाई बुआई के 75 दिन बाद करें, पुष्पावस्था में सिंचाई न करें।

खेसारी

- खेसारी के उन्नत प्रभेद जैसे- Bio L 212 (रत्न) LS147-14 (प्रतीक), B1 (निर्मल) पूसा 24, RLS 45 95, LSD 3, LSD 6.
- खेसारी की बुआई शुद्ध फसल एवं मिश्रित फसल के रूप में की जाती है। छिड़काव विधि से धान कटनी के 10 से 15 दिन पूर्व खड़ी धान की फसल में इसकी बुआई करें जब खेत गीला हो।
- खेसारी की बुआई के लिए उपयुक्त समय 15 अक्टूबर से 15 नवम्बर के मध्य उचित माना जाता है।
- खेसारी के लिए पंक्ति से पंक्ति की दूरी 30 सेंटीमीटर एवं पौधे से पौधे की दूरी 10 सेंटीमीटर रखने पर पौधों का विकास अच्छा होता है। खेसारी के लिए छिड़काव विधि द्वारा बीज दर 40 किलोग्राम/हेक्टेयर एवं सीधी बुआई के लिए 25 से 30 किलोग्राम/हेक्टेयर बीज उपयुक्त होती है।
- सामान्य उर्वरा शक्ति वाले खेतों में 20 किलोग्राम नेत्रजन (45 किलो यूरिया), 40 किलोग्राम फॉस्फोरस (250 किलो SSP) एवं 20 किलोग्राम पोटाश अंतिम जुर्माई के समय व्यवहार करें। अच्छी उत्पादता हेतु 20 किलोग्राम सल्फर/हेक्टेयर बुआई के समय उपरिवेशन करें।

मटर

- मटर की उत्तरशील प्रभेद जैसे - रचना, अपर्णा, मालवीय मटर 15, पूसा प्रभात, टस मटर 42, स्वर्णा तृष्णि।
- मटर की बुआई 15 अक्टूबर से 15 नवम्बर के मध्य की जाती है। लब्डी अवधि प्रभेद के लिए बीज दर 70 से 80 किलोग्राम/हेक्टेयर एवं छोटी अवधि के लिए 100 किलोग्राम/हेक्टेयर बीज की आवश्यकता होती है।
- लंबी अवधि प्रभेद के लिए पंक्ति से पंक्ति की दूरी 30 सेंटीमीटर एवं पौधे से पौधे के बीच 10 सेंटीमीटर जबकि छोटी अवधि प्रभेद के लिए 22.5 सेंटीमीटर x10 सेंटीमीटर की दूरी रखनी चाहिए। बीज की बुआई 4 से 5 सेंटीमीटर गहराई में करनी चाहिए।
- मटर की अच्छी पैदावार के लिए 20 से 30 किलोग्राम नेत्रजन, 40 से 60 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 20 से 30 किलोग्राम पोटाश/हेक्टेयर की दर से पूरी मात्रा बुआई के समय उपरिवेशन करना चाहिए। इसके साथ-साथ 20 किलोग्राम सल्फर बुआई के समय खेत में डालें।
- मटर की फसल में दो सिंचाई की आवश्यकता होती है। पहली सिंचाई फूल बनने से पूर्व एवं दूसरी सिंचाई फली बनते समय करें।

तिलहन

तोरिया/सरसों/राइ

- अच्छे उत्पादन हेतु सरसों की समय से बोए जाने वाले प्रभेद Sej 2, पूसा महक, पूसा बोल्ड हैं; विलम्ब से बुआई हेतु राजेन्द्र राइ पछैती, राजेन्द्र अनुकूल, आशीर्वदि, RH0749, T9, 44S-01, RGN-73, NRCHB-101, DRMR-150-35, NRCYS -05-02, राजेन्द्र सुफलम।
- बुआई अक्टूबर के प्रथम पखवाड़े से नवम्बर के प्रथम पखवाड़े तक पूर्ण कर लें। जहाँ पर धान की कटाई विलम्ब से होती है वहाँ पर 90-95 दिनों के प्रभेदों की बुआई करें। सरसों की अधिकतम उत्पादन हेतु पंक्ति से पंक्ति एवं पौधे से पौधे की दूरी 30x10.15 सेंटीमीटर एवं गहराई 4-5 सेंटीमीटर होनी चाहिए। बुआई के 3 सप्ताह बाद बछनी करें। बुआई के पूर्व ट्राईकोडरमा 10 ग्राम/किलोग्राम बीज की दर से बीज को उपचारित करें।
- सरसों की बुआई के लिए खेत भरभूत होना चाहिए। अधिकतम उत्पादन हेतु खेत की तैयारी के समय 10 से 15 टन कम्पोस्ट खाद थल का प्रयोग करें। सरसों हेतु 60-90 किलोग्राम नेत्रजन, 60 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 40 किलोग्राम पोटाश प्रति हेक्टेयर की दर से प्रयोग करना चाहिए। बुआई की समय नेत्रजन की आधी मात्रा एवं फॉस्फोरस व पोटाश की पूरी मात्रा बुआई के समय देनी चाहिए। नेत्रजन की शेष आधी मात्रा को पहली सिंचाई के बाद उपरिवेशन करें।

सरसों/राई के अधिक उत्पादन हेतु 30 किलोग्राम सल्फर प्रति हेक्टेयर की दर से बुआई के समय प्रयोग करें। सलाह दी जाती है कि सिंगल सुपर फॉर्स्फेट या बैंजोनाइट सल्फर का व्यवहार बुआई के समय करें।

- अच्छे अंकुरण एवं पौध वृद्धि हेतु बुआई के पूर्व सिंचाई अवश्य करें। मुख्यतः फसल को तीन सिंचाई की आवश्यकता होती है। प्रथम बुआई के 30 दिनों के बाद, दूसरी सिंचाई फूल आने के पहले एवं तीसरी सिंचाई फली बनते समय करना चाहिए।

अलसी

- अधिक उत्पादन हेतु उन्नत प्रभेदों की बुआई करें, जैसे-सबौर तीसी-1, सबौर तीसी-2, गरिमा, खेता, शुभा, गौरव, LCK 8528.
- तीसी की बुआई मुख्य फसल या मिश्रित खेती के रूप में मसरू एवं चना के साथ की जाती है। तीसी की बुआई धान की खड़ी फसल में पैरा विधि द्वारा भी की जाती है जो कि धान के बाद परती पढ़े क्षेत्रों में की जाती है।
- तीसी की बुआई अक्टूबर की प्रथम सप्ताह से नवम्बर के प्रथम सप्ताह तक करनी चाहिए। बुआई विलंब से करने पर उत्पादन में कमी हो जाती है। यदि तीसी की खेती धान की खड़ी फसल में की जाती है तो उसे उत्तरा/पैरा खेती कहते हैं।
- तीसी की बुआई हेतु पंक्ति से पंक्ति की दूरी 30x5 सेंटीमीटर एवं गहराई 4-5 सेंटीमीटर होनी चाहिए।
- अधिकतम उत्पादन हेतु 20-30 किलोग्राम बीज/हेक्टेयर की दर से आवश्यकता होती है एवं पैरा विधि से खेती हेतु 30-40 किलोग्राम बीज/हेक्टेयर की दर से आवश्यकता होती है।
- तीसी के अधिकतम उत्पादन हेतु खेत की तैयारी के समय 8 से 10 टन कम्पोस्ट खाद छ्ल का प्रयोग करें। अधिक उत्पादन देने वाले प्रभेदों का उर्जरक प्रबंधन से ज्यादा उत्पादन देते हैं। तीसी हेतु 50 किलोग्राम नेत्रजन एवं 40 किलोग्राम फॉस्फोरस प्रति हेक्टेयर की दर से प्रयोग करना चाहिए। बुआई की समय नेत्रजन की आधी मात्रा एवं फॉस्फोरस की पूरी मात्रा बुआई के समय देनी चाहिए। नेत्रजन की शेष आधी मात्रा को पहली सिंचाई के बाद उपरिशेषन करें। तीसी के गुणवत्तायुक्त उत्पादन हेतु 20 किलोग्राम सल्फर प्रति हेक्टेयर की दर से बुआई के समय प्रयोग करें।
- तीसी के अधिकतम उत्पादन हेतु 2 हल्की सिंचाई दें। पहली सिंचाई बुआई के 30 दिन पश्चात् एवं दूसरी सिंचाई फूल आने के पूर्व करनी चाहिए।

बिहार के लिए रबी मौसम की उद्यानिकी फसलों में प्रमुख कृषि कार्य

- दलहनी सब्जी फसलों में राइजोवियम कल्वर से उपचारित करें।
- सब्जी मटर की अगेती किस्मों जैसे अर्केल पूसा प्राति, जवाहर मटर-3, जवाहर मटर-4, पंत मटर-3, हिसार हरित, पंजाब अगेता-6, काशी नदिनी एवं काशी नदिनी एवं काशी मुक्ति की सितम्बर के अंतिम सप्ताह से लेकर मध्य अक्टूबर तक बुआई की जा सकती है। मटर की बुआई समतल या उथली क्यारियों में हल के पीछे कतारों में या सीड़िल से करें। पंक्ति से पंक्ति की दूरी 25-30 सें.मी. रखें। बुआई के लिए 120-125 कि.ग्रा. बीज प्रति हैक्टर की दर से इस्तमाल करें।
- फ्रेंचबीन की बुआई: फ्रेंचबीन की बुआई सितम्बर के मध्य सप्ताह से अक्टूबर के मध्य में करें। फ्रेंचबीन की झाड़ीनुमा किस्मों (केंट्डर, पूसा पार्वती, अर्का कोमल, अर्का सुविधा अर्का, अन्यू, काशी परम) के लिए 80-85 कि.ग्रा. प्रति हैक्टर बीज तथा पोल बीन या फैलने वाली किस्में (केंट्डर की वंडर और जम्मा) के लिए 30-35 कि.ग्रा. प्रति हैक्टर बीज का उपयोग करें।
- मैथी की बुआई: मध्य सितम्बर से मैथी की किस्मों (पूसा अर्ली बंचिंग, मैथी स. 47, हिसार सोनाली) की बुआई की जा सकती है तथा बुआई के लिए 30-35 कि.ग्रा. बीज प्रति हैक्टर पर्याप्त होता है।
- गोभीवर्गीय सब्जियों की पौध तैयार करने एवं बुआई करने हेतु पौधशाला बनायें।

- पत्तागोभी, गाठगोभी तथा ब्रोकली की बुआई: सितम्बर-अक्टूबर में पत्तागोभी की मध्यकालीन किस्मों (पूसा मुक्ता, पूसा ड्रमहेड, ड्रमहेड सेवांय), गाठगोभी (वाइट वियेना, पर्पल वियेना) तथा ब्रोकली (पूसा के.टी.एस.-1, पालन समृद्धि, पालन विचित्रा, पालन कंचन एवं पालम हरोटिका) की पौधशाला में बुआई की जा सकती है।
- फूलगोभी की बुआई: सितम्बर के पहले पखवाड़े में मध्य नवंबर में तैयार होने वाली किस्में जैसे पूसा शरद, पूसा हाइब्रिड-2, पंत गोभी-4 की रोपाई करें तथा अक्टूबर के प्रथम पखवाड़े में मध्य दिसंबर से मध्य जनवरी में तैयार होने वाली किस्मों (पूसा सिंथेटिक, पूसा हिम ज्योति, पूसा पोसजहा, पूसा शक्ति) की रोपाई करें। इन पोसजहा, पूसा हिम ज्योति, पूसा पोसजहा, पूसा शक्ति की रोपाई 60x45 सें.मी. दूरी पर करें।
- जड़ वाली फसलें जैसे मूरी (पूसा देसी, पूसा चेतकी, पूसा रेशमी, पूसा मृदुला, काशी श्वेता, पंजाब सफेद), गाजर की एशियाई किस्मों जैसे पूसा रुधिरा, पूसा केसर, पूसा वसुदा, पूसा असिता (काले रंग में) की बुआई की जाती हैं। इनकी अधिक उपज तथा समान आकार की जड़ों के लिए 20-25 सें.मी. ऊँची मेड़ों पर बुआई करें।
- शलजम की किस्में जैसे पूसा कंचन पूसा खेती की बुआई 2.5-3.5 कि.ग्रा. बीज प्रति हैक्टर की दर से करें।
- टमाटर के बीज को पौध हेतु अगस्त में पौधशाला में बोया जाता है। वह सितम्बर के मध्य में रोपाई के लिए तैयार हो जाती है। पौध का प्रतिरोपण अच्छी तरह से तैयार खेत में समतल क्यारियों, उठी हुई क्यारियों या मेड़ों पर करना चाहिए। खेत में रोपाई के समय पंकिंत से पंकिंत की दूरी 60-75 सें.मी. और पौध से पौध की दूरी 30-45 सें.मी. रखनी चाहिए।
- कट्टवर्गीय फसलें जैसे करेला, तोरई, खीरा, सीताफल, पेठा, लौकी इत्यादि के खेत में निराई कर खरपतवारों से मुक्त रखें। इन फसलों में रोगों का प्रायः चूर्णित आसिता, मुदु रोमित फूटूदी, एंथेक्नोज और विषाणु तथा कीटों में जैसे फल मक्खी, रेड पम्पकिन बीटिल, एपीलैक्वा बीटल का प्रकोप होता है। उनके रोकथाम का समुचित प्रबंध करें।
- पत्तेदार सब्जियों की बुआई अक्टूबर में की जाती है। प्रायः बीजों को समतल क्यारियों में छिड़काव कर बुआई करते हैं, परंतु पंकिंतों में बोना अधिक लाभप्रद होता है।
- घाज की अगोती और हरी फसल लेने के लिए खेत में घाज के कंदो (सेट्स) की रोपाई की जाती है।
- अक्टूबर के अंतिम सप्ताह में घाज की पौधशाला में बुआई की जाती है तथा 8-10 कि.ग्रा. प्रति हैक्टर बीज की आवश्यकता होती है।
- आलू की अगोती बुआई के लिए कुफरी सूर्या, कुफरी अशोका, कुफरी चन्द्रमुखी किस्मों की व्यवस्था कर रोपाई करें तथा उचित दूरी पर रोपाई करें।
- पत्तागोभी की रोपाई सितम्बर के अंतिम सप्ताह से प्रारम्भ कर सकते हैं।
- धनिया की प्रजाति पन्त हरीतिमा, आजाद धनिया-1 बुआई माह के अंतिम पखवाड़े में वर्षा समाप्त होने पर कर सकते हैं। इसके लिए 12-15 किग्रा बीज एक हैक्टर के लिए पर्याप्त होता है।
- शिमला मिर्च के पौधों की रोपाई 50 x 40 में.मी. की दूरी पर करें। रोपाई से पहले 150 किटल सड़ी गोबर की खाद, 75 कि.ग्रा.नाइट्रोजन, 60 कि.ग्रा. पॉस्फोरस व 60 कि.ग्रा. पोटाश अन्तिम जुताई के समय खेत में मिलायें।
- सितम्बर में सदाबहार पेड़ जैसे नीबू जाति के फल, आम, बेर, लीची, अमरुद लगा सकते हैं। बाग लगाने से पहले 3 x 3 फुट के गड्ढे खोद लें। गड्ढे की ऊपर की मिट्टी को बाराबर सड़ी हुई देशी खाद से मिलाकर इसमें 2 किग्रा जिष्यम भी डालें। दीमक के खतरे वाले क्षेत्र में क्लोरोपाइरफॉस 20 ई.सी. के धूल को 30-40 ग्राम प्रति गड्ढे के दर से डालें।
- अमरुद की इलाहाबादी सफेदा, बनारसी सुरखा तथा किस्मों को सितम्बर में रोपा जा सकता है। नये बागों की नियमित सिंचाई करें।
- आम में गमोसिस रोग की रोकथाम हेतु प्रति पेड़ (10 वर्ष या अधिक आयु के पौधे के लिए) 250 ग्राम जिंक सल्फेट, 250 ग्राम कॉपर स्टर्केट, 100 ग्राम बुझा हुआ चूना व 125 ग्राम बोरेक्स पेड़ के मुख्य तने से एक मीटर की दूरी पर 2-4 मीटर व्यास के अन्दर मिट्टी में मिलायें। वर्षा न होने की स्थिति में तुरन्त हल्की सिंचाई कर दें।
- आम में एंथेक्नोज रोग से बचाव हेतु कॉपर ऑक्सीक्लोरोइड की 3 ग्राम मात्रा को एक लीटर पानी में घोलकर आवश्यकतानुसार छिड़काव करें।

- लीची में एक साल के पौधे के लिए 5 कि.ग्रा. सड़ी गोबर की खाद, 50 ग्राम नाइट्रोजन, 25 ग्राम फॉस्फोरस व 50 ग्राम पोटाश को पौधे के चारों तरफ तने से दूर मिट्टी में मिलायें। 10 वर्ष या उससे अधिक आयु के पौधे के लिए 50 कि.ग्रा. गोबर/कम्पोस्ट खाद, 500 ग्राम नाइट्रोजन, 250 ग्राम फॉस्फोरस तथा 500 ग्राम पोटाश प्रति पेढ़ की दर से प्रयोग करें।
- लीची में जिंक की कमी के लक्षण दिखाई देने पर जिंक सल्फेट (0.4 प्रतिशत) का छिड़काव करें।
- केते में प्रति पौधा 55 ग्राम सूक्षिया पौधे से 50 सें.मी. दूर धेरे में प्रयोग कर हल्की गुडाई करके भूमि में मिला दें।
- अकट्टूबर में सुन्दर फूल बुआई का समय भी है। गेंदा के अलावा, कैलनडुला, विगोनिया, गुलदाउदी, डहलिया, स्वीट पी, सूरजमुखी, जिनिया, डॉगपलावर, कारनेशन, पॉपी, लार्कसपुर इत्यादि फूल के लिए क्यारियों अच्छी तरह तैयार करके बुआई कर दें।
- रजनीगंधा के स्पाइक की कटाई-छटाई, पैकिंग, विपणन तथा पोषक तत्वों के मिश्रण का अन्तिम चरणीय छिड़काव करें।
- ग्लोडिलस की रोपाई के लिए प्रति वर्ग मीटर 10 कि.ग्रा. सड़ी गोबर की खाद/कम्पोस्ट, 200 ग्राम सिंगल सुपर फॉस्फेट व 20 ग्राम सिंगल सुपर फॉस्फेट व 20 ग्राम स्मूरेट ॲफ पोटाश रोपाई के 15 दिन पहले अच्छी तरह क्यारियों में मिला दें।
- देशी गुलाब की कलम काटकर अगले वर्ष के स्टॉक हेतु क्यारियों में लगा दें।
- ग्लेडियोलस में स्थानीय मौसम के अनुसार सप्ताह में एक या दो बार सिंचाई करें।
- जनवरी में रोपाई हेतु मेंथा को क्यारियों में दुबारा लगा दें।
- खरपतवार नियंत्रण के लिए प्रति हैक्टर पेंडीमेथालीन का 3-4 लीटर मात्रा का छिड़काव बुआई के तुरंत बाद सिंचाई से पहले करना चाहिए।
- नवम्बर में मूली, मेथी, धनिया, फेंचबील, पालक की बुआई की जा सकती है। अकट्टूबर में बोयी गयी इन सज्जियों की आवश्यकतानुसार निराई-गुडाई व सिंचाई अवश्य करें।
- शलजम की किस्में जैसे पूसा स्वर्णिमा व पूसा चन्द्रिमा की बुआई अकट्टूबर से दिसम्बर तक कर सकते हैं। ये 60-65 दिनों में तैयार हो जाती है। इनकी बुआई 45 सें.मी. दूर बनी मेड़ों पर 1.5 से 2 सें.मी. गहराई पर करें और पौधों पर 15-20 सें.मी. अन्तर बनाएं।
- देशी गुलाब की कलम काटकर अगले वर्ष के स्टॉक के लिए क्यारियों में लगा दें।
- अमरुद में छाल खाने वाले कीड़ों की रोकथाम हेतु पेट्रोल या किरोसिन तेल में रूई का टुकड़ा भिगोकर छिद्रों में भरकर विकानी मिट्टी से लेप कर दें।
- आम एवं अन्य फलों के बाग में जुताई करके खरपतवार नष्ट कर दें। नये लगे छोटे पेड़ों की कतारों के बीच में मटर, मसूर एवं चने की बुआई अवश्य करें।
- बेबीकार्नः इसके बिल्कुल कच्चे भट्टे बिक जाते हैं, जोकि होटलों में सब्जी, सूप, सलाद व अचार बनाने के काम आते हैं। यह फसल 50-60 दिनों में तैयार हो जाती है और निर्यात भी की जाती है। बेबीकार्न की संकर प्रकाश व कम्पोजिट के सरी किस्मों के बीज को एक फुट लाइनों में और आठ इंच पौधों में दूरी रखकर बोया जाता है।

विहार के लिए जायद मौसम की उद्यानिकी फसलों में प्रमुख कृषि कार्य

- भिण्डी की उन्नत प्रजातियों में आजाद भिण्डी 1, आजाद भिण्डी 2, आजाद भिण्डी 3, आजाद भिण्डी 4, परभनी क्रांति, वर्षा उपहार, पूसा ए-4, पूसा ए-5, अर्का अनामिका एवं अर्का अभय प्रमुख हैं जिसको लगाने का सही समय है।
- हरी मिर्च में रोपाई के 25-30 दिनों बाद प्रति हैक्टर 35-40 कि.ग्रा. नाइट्रोजन की पहली टॉप ड्रेसिंग व रोपाई के 45 दिनों बाद इतनी ही यूरिया की दूसरी टॉप ड्रेसिंग करें।
-



- इस महीने में कद्दूवर्गीय फसलें जैसे तोरई, कद्दू, लौकी, तरबूज, खरबूज, खीरा, ककड़ी प्रमुख सब्जी वाली फसलों की बुआई करते हैं।
- लौकी व करेला की जनवरी-फरवरी के नर्सरी में तैयार की गई पौधे की रोपाई करें। लौकी के पौधों की रोपाई 200×100 सें.मी. की दूरी पर करें, जबकि करेले के पौधों की रोपाई 150×60 सें.मी. की दूरी पर करें।
- नर्सरी तैयार करने के लिए लो टनल पाँती हाउस से अच्छी गुणवत्ता की पौधे तैयार कर सकते हैं। वर्षाकालीन बैगन की फसल के लिए नर्सरी में बीज की बुआई भी कर सकते हैं।
- टमाटर की फसल में आवश्यकतानुसार सिंचाई एवं गुडाई करते रहें।
- आम फलों को गिरने से बचाने के लिए यूरिया के दो प्रतिशत घोल से पौधों पर छिड़काव करें।
- नवरोपित औंवला के बागों में गर्मियों में 10-12 दिनों के अंतराल पर सिंचाई करते रहना चाहिए। पौधों के बड़े हो जाने पर बागों में मई-जून में एक बार पानी देना आवश्यक है। फूल आते समय बागों में किसी भी तरह से पानी नहीं देना चाहिए।
- आम, अमरुद, अंगूष्ठ, बेर, नीबू एवं पपीता उत्पादन में सिंचाई पर ध्यान देना अति आवश्यक है। गर्मियों में 7-8 दिनों के अंतराल पर सिंचाई करनी चाहिए।
- पपीता की उत्तर किस्मों में सनराइज, हनीजू, पूसा डिलीशियस, पूसा ड्वार्फ व पूसा जायंट को लगाने का सही समय है।
- केते में प्रति पौधा 25 ग्राम नाइट्रोजन, 25 ग्राम फॉस्फोरस और 100 ग्राम पोटाश मृदा में गुडाई कर मिला दें। केते के पौधों में चारों ओर से निकलते हुए सकर्स को निकाल दिया जाता है।
- लीची के बागों में आवश्यकतानुसार सिंचाई करते रहें। लीची-100 ग्राम यूरिया प्रति पेड़ प्रति वर्ष आयु की दर से डालें। ग्लेडियोलस के कंदों की खुदाई से 15 दिनों पूर्व सिंचाई बन्द कर दें और स्पाइक काटने के 40-45 दिनों बाद (कार्म) घनकंदों की खुदाई करें।
- गेंदे की फसल में एफिड, कैटरपिलर तथा माइट्स का प्रकोप होता है, जिसका निराकरण करने के लिए 0.2 प्रतिशत मेटासिस्टाक्स या 0.25 प्रतिशत केराथेन या 0.2 प्रतिशत रोगोर का छिड़काव प्रत्येक सप्ताह बाद कम से कम दो बार करना चाहिए।



- मई-जून में कदद्ववर्गीय सञ्जियों, चौलाई भिण्डी आदि की बुआई तथा बैगन एवं खरीफ प्याज की पौध तैयारी का उचित समय होता है।
- मुदा में किसी भी पोषण तत्व की कमी को जानने के लिए मिट्टी परीक्षण करायें तथा जांच के अनुसार उर्वरकों एवं सूक्ष्म तत्वों का इस्तेमाल करें।
- मई-जून में खेत की उर्वरक क्षमता बढ़ाने के लिए हरी खाद की उपयुक्त फसल जैसे ढैंचा का 40-45 कि.ग्रा.बीज प्रति हैक्टर की दर से बुआई करें। ढैंचा की फसल जब बुआई से 6-8 सप्ताह की हो जाये तब मिट्टी पलटने वाले हल से खेत की जुताई कर मिट्टी में मिला दें।
- पौधशाला के लिए ऐसी जगह का चुनाव करें जहां सूर्य का प्रर्याप्त प्रकाश मिलता हो तथा अच्छे जल निकास वाली हल्की भुरभुरी मिट्टी अंकुरण के लिए स होती है।
- चौलाई की उन्नत किसरों जैसे पूसा किरण, पूसा लाल चौलाई आदि की 1-1.5 कि.ग्रा. बीज प्रति हैक्टर की दर से समतल क्यारियों में पंक्ति से पंक्ति की दूरी 30 से.मी. रखने हुए आधा इंच की गहराई पर बुआई करें।
- जून के दूसरे पखवाड़े में खरीफ प्याज की उन्नत किसरों जैसे एन-53, एग्रीफाउंड डार्क रेड, वसवंत-780, अर्का कल्याण, भीमा डार्क शक्ति आदि के बीज ढारा पौध तैयार करें।
- भिण्डी की फसल के लिए जून के दूसरे सप्ताह से 10-12 कि.ग्रा. (6-8 कि.ग्रा. संकर किस्म) बीज प्रति हैक्टर की दर से पंक्ति से पंक्ति की दूरी 60 से.मी. तथा पौधे से पौधे की दूरी 20 से.मी. रखते हुए बुआई करें। बुआई के लिए उन्नत किसरों जैसे अर्का आनामिका, परभनी क्रांति, पंजाब-7, पंजाब-8, आजादी क्रांति, हसिर उन्नत वर्षा उपहार आदि का चयन किया जा सकता है।
- उत्तरी भारत के मैदानी क्षेत्रों में बैगन की अग्रेती फसल के लिए मध्य मई से जून के प्रारंभ तक बीजों की बुआई करें।

- शकरकंद की उन्नत किस्मों जैसे श्री नंदनी, श्री रता, राजेंद्र शकरकंद-5, श्री वर्धनी, श्री वरुण, श्री अरुण, कोकण अश्विनी आदि की 40-50 हजार बेलमें प्रति हेक्टर की दर से रोपाई करें।

पशुपालन

अकूबर

- इस महीने से ही जाडे के प्रभाव से बचाने के लिए उचित प्रबन्धन की शुरूआत कर देनी चाहिए जिससे की पशुओं के उत्पादन पर कोई प्रभाव न पड़े।
- पशुओं को कृमिनाशक दवा देनी चाहिए।
- पशुपालक भाई इस माह अपने पशुओं (गाय, भैंस, बकरी, सूकर, भेड़) को खुरहा-चपका, गलाघोट, जाँघरेला तथा भेड़ बकरियों को पी.पी.आर. तथा इन्टेरोटॉक्सिमिया का टीका अवश्य अवश्य लगवा दें।
- आवश्यक खनिज लवण तथा विटामिन आहार के साथ अवश्य मिलायें।
- हरे एवं सूखे चारे को उचित अनुपात में मिलाकर खिलायें।
- बरसीम चारा के उन्नत किस्मों जैसे- वरदान, मसकोवी, बी.एल. - 10 एवं बी.एल. - 22 की बोआई की शुरूआत कर देनी चाहिए।

नवम्बर

- अचानक तापमान में हुए गिरावट के प्रभाव से पशुओं को बचाने के लिए पशु आवास के खिड़की दरवाजों को पुराने जुट के बोरों से या पुआल की चट्टी या अन्य सामग्रियों से ढंक देना चाहिए।
- खुले में चरने जाने वाले जानवरों को भी रात में आवास के अन्दर ही रखें।
- बहुवर्षीय चारा फसलों जैसे - हाईब्रिड नैपियर, गिनिया, पारा घास इत्यादि की कटाई कर लेनी चाहिए।
- थनैला रोग से बचाव के क्रम में 1 प्रतिशत लाल पोटाश के घोल या पोटीडीन आयोडीन के घोल से थनों को साफ करना चाहिए।
- भेड़, बकरियों में पी.पी.आर. का टीकाकरण अवश्य करा लें।
- नवजात मेमनों, बछड़ों तथा सूकर छौनों को निमोनिया से बचाने के क्रम में सूखे तथा हवादार स्थान में रखें।
- इस माह के मध्य से जई की बोआई प्रारम्भ की जा सकती है।

दिसंबर

- दुधारू पशुओं के छिमी (Teat) में होने वाली दरार (Cracking) से बचाव के लिए थनों को धोने में हल्के गर्म पानी का इस्तेमाल करना चाहिए तथा दुहाई के बाद वैसलीन या लिसरीन का प्रयोग करना चाहिए। सरसों या अन्य तेल का इस्तेमाल करना हानिकारक हो सकता है।
- नियमित रूप से निसंक्रामक (disinfectant) तथा कीटनाशक दवाओं का छिड़काव करना चाहिए।
- 40-45 दिनों के बाद बरसीम की तथा 50-55 दिनों के बाद जई की पहली कटाई करनी चाहिए।
- पशुओं की आवश्यकता से अधिक बचे हुए चारे का प्रयोग हे बनाने में प्रयोग किया जा सकता है।

जनवरी

- निमोनिया जैसे बीमारियों से बचाव के क्रम में पशु आवास को सूखा, हवादार तथा धुआँ रहित रखना चाहिए।
- दुधारू पशुओं के थनों को साफ करने में तथा बीमार पशुओं के पीने के लिए गुनगुने पानी का इस्तेमाल करना चाहिए।

- संकर नस्लों के दुधारू पशुओं को दिये जाने वाले दाना मिश्रण में खल्ली की मात्रा 10-20 प्रतिशत तथा मिनरल मिक्सर (खनिज मिश्रण) 1 प्रतिशत बढ़ा देना चाहिए।

फरवरी

- सभी उम्र के पशुओं को कृमिनाशक दवा देनी चाहिए।
- बकरी तथा भेड़ों को पी.पी.आर. का टीका लगवायें।
- सूकर छौनों में स्वाइन फीवर का टीका लगवायें।
- पशुओं की आवश्यकता से अधिक बचे हुए चारे का प्रयोग है बनाने में प्रयोग किया जा सकता है।

मत्स्य पालन

कोविड-19 के संदर्भ में नीचे दी गई सलाह में अधिकतम लाभ और पोषण सुरक्षा के बाद निरंतर उत्पादन क्षमता प्राप्त करने के लिए रबी मौसम के दौरान किसानों द्वारा पालन की जाने वाली मत्स्य पालन से संबंधित सर्वोत्तम प्रबंधन प्रथाओं को शामिल किया गया है।

मछली पालन के दिशा-निर्देश:

स्टॉकिंग के पुर्व प्रबंधन

- किसान इस अवधि के दौरान नए मछली तालाबों का निर्माण कर सकते हैं। आमतौर पर दोमट मिट्टी के आयताकार तालाब 1.5-2.5 मीटर गहराई और 2:1 के ढलान अनुपात वाले आर्द्धश माने जाते हैं।



- सर्दियों के दौरान तालाब की गरम निचली परत में मछलीयों के लिए जगह उपलब्ध कराने के लिए 6-7 फीट (यानि 2 मीटर) तक पानी की गहराई बनाए रखें।
- रबी के मौसम में प्रकाश संबलेक गतिविधि में उतार चढ़ाव, दिन कि लम्बाई में कमी और प्रकाश की तीव्रता के कारण ऑक्सीजन का स्तर कम हो जाता है। इसलिए, घुलित ऑक्सीजन के स्तर को 6.5-8 मिलिग्राम/लीटर के भीतर बनाए रखने के लिए यह सलाह दी जाती है, कि तालाबों को जलवाहक से या सबर्मसिर्बल पम्प का उपयोग करके पानी का आदान-प्रदान करें।
- नियमित समय अंतराल पर मेनुअल और यांत्रिक विधि से अवाञ्छित खरपतवरों और जलीय कीड़ों का उच्चलन करें।
- मिट्टी और पानी की गुणवत्ता के मानकों के अनुसार जैविक और अकार्बनिक उर्वरक खुराक प्रदान कि जानी चाहिए। यदि पानी मैला या गहरे रंग का हो जाए और पारदर्शिता कम हो जाए तो निषेचन बंद करें।

स्टॉकिंग के प्रबंधन

- हमेशा प्रामाणित या प्रसिद्ध हैचरी से अच्छी गुणवत्ता वाले मछली के बीज खरीदें।
- प्लास्टिक बैग के मुंद को ढीला करके मछलीयों को कंडीशन करें और 15-20 मिनट के बाद बैग को धीरे-धीरे मुक्त बहने के लिए डुबोएं।
- मछलीयों के अधिक भण्डारण से बचें। इष्टतम स्टॉकिंग घनत्व प्रति हेक्टेयर 7500-8000 अंगुलिकाएं के बीच होता है।
- अनुशस्ति स्टॉकिंग दरों पर विभिन्न मछली प्रजातियों की मिश्रित मछली पालन को प्रोत्साहित करें। आमतौर पर बिहार में छह (6) प्रजाति की कार्प मछली पालन सबसे अधिक अपनाइ जाती हैं- जिसमें कतला, रोहू, मृगल, सिलवर कार्प, कॉम्पन कार्प, ग्रास कार्प, 1.5:2:1.5:1.5:1.5:2 के अनुपात में शामिल है।
- मछली तालाब में छोटी देशी मछलियाँ जैसे- पोठिया, मोला, मुरई आदि डालें। जैसा कि अनुमान है कि 1 किलो छोटी देशी मछलियों में अन्य बड़े आकार की मछलीयों की तुलना में 1000 गुना अधिक विटामिन सामग्री होती है।
- मीठेपानी की मछली पालन के लिए उम्मीदवार प्रजातियों में विविधता लाएं-अमूर कार्प, जयंती रोहू, पाकु, मोो सेक्स तिलायिया, पुटियस गोनियोटस, बिंगहेड कार्प, मागुर, पबदा, झींगा आदि।
- मौसमी तालाबों में पोस्ट लार्वा से वयस्क झींगी उगाने कम लिए कम लागत और स्थानीय रूप से उपलब्ध सामग्री से पॉलीहाउस का निर्माण करें। पॉलीहाउस ठंड के मौसम में तापमान बनाए रखने में मदद करता है।

स्टॉकिंग के पश्चात प्रबंधन

- 6.5-7.5 के भीतर पानी का पी.एच. बनाए रखें। पदि पी.एच. के स्तर कम होता है तो चूने का प्रयोग करें और अगर यह इष्टतम स्तर से अधिक उच्च अंत में होता है तो जिस्प्स का प्रयोग करें।
- पुराने तालाबों में जहरीली गैसों के संचयन को रोकने के लिए निचली मिट्टी की आवधिक रेकिंग आवश्यक है।
- जब तापमान 10° सेंटीग्रेड तक गिर जाए तो मछलियों को चारा देना बंद कर दें।
- आमतौर पर, मछली का विकास मध्य नवंबर से फरवरी तक कम चयापचय दर के कारण कम हो जाती है और तापमान बढ़ने पर वापस विकास होना शुरू हो जाती है।
- 15 दिनों के भीतर एक बार तालाब में जाल लगा कर मछलियों की निगरानी करें और पोटेशियम परमैग्नेट के घोल का उपयोग करके स्तर उपचार प्रदान करें।
- जब भी किसी मछली में असामान्य व्यवहार देखा जाता है, तो उन पर काबू पाने के लिए तकाल एहतियाती उपायों का उपयोग करें। जैसे जब भी मछलियाँ सतह के पानी के पास आती हैं और अपना मुँह खोल के सास लेती हैं, तो इसका मतलब है कि तालाब के पानी में ऑक्सीजन का स्तर कम हो गया इसलिए तालाब में वायु-प्रसार करना आवश्यक है।
- मछलियाँ में बैक्टीरिया, करक, परजीवी और वायरल जैसे सामान्य रोग यानी टेल या फिन रोट, झाँसी, गिल फ्लूक और ई.यू.एस आदि के लिए अधिक प्रवण होती हैं। इसलिए, मछलियों के उपचार के लिए तकाल उपायों की आवश्यकता है। सर्दियों की शुरूआत से ठिक पहले तालाब को सीफैक्स / 1 लीटर प्रति हेक्टेयर से उपचारित करने की सलाह दी जाती है। इसके अलावा, पोटेशियम परमैग्नेट / 3-5 किग्रा / हेक्टेयर या लाइमस्टोन / 150-200 किग्रा / हेक्टेयर प्रयोग करें। नमक के घोल को / 250 किग्रा/ हेक्टेयर की दर से तालाब में भी उपचारित किया जा सकता है जो सर्दियों के दौरान मछली की बीमारी के प्रकोप से बचाने में फायदेमंद साबित होता है।

मत्स्य आधारित एकीकृत कृषि प्रणाली:

- वर्ष भर आय सृजन के लिए बिहार में सभी उपलब्ध विकल्पों में बागवानी-बन्नख आधारित मछली पालन को सबसे अच्छा मॉडल माना जाता है।
- बत्तखों का स्टॉकिंग घनत्व- 200-300 प्रति हेक्टेयर, खाद का उत्पादन करने के लिए पर्याप्त है और मछली तालाबों के लिए जैव-जलवाहक के रूप में भी काम करता है।

बायोफ्लॉक प्रणाली में मछली पालन:

- जिन किसानों के पास तालाब निर्माण की जमीन नहीं है, उनके लिए यह नई तकनीक महत्वपूर्ण साबित हो सकती है।
- मछली पालन की न्यूनतम या शून्य जल विनियम प्रणाली इस प्रकार अपशिष्ट जल का उपयोग करती है। इसलिए प्रौद्योगिकी पुर्नचक्रण द्वारा काफी हद तक पानी की बचत हो जाती है।
- इस कृषि प्रणाली के लिए उपयुक्त प्रजातियाँ- पंगास, मागुर, कवाई, तिलापिया और कॉमन कार्प हैं। इस तकनीक के लिए 4 मीटर व्यास और 1.5 मीटर उचाई के कम से कम 7 टैंक की आवश्यकता होती है जो की 7 से 8 लाख की लागत किसानों के लग जाते हैं।
- इस तकनीक में प्रमुख बाधा 24x7 बिजली कनेक्शन है।

बड़े जलाशयों में केज कल्चर:

- मछली उत्पादन क्षमता का दोहन करने के लिए एक महत्वर्पूण जल संसाधन (बिहार का चौर और मौन)।
- केज कल्चर को उन स्थानों पर बढ़ावा दिया जा सकता है, जहाँ साल ५र में 10 मीटर पानी की गहराई होती है, जिसमें 1000 हेक्टेयर या अधिक पानी फैला हुआ क्षेत्र होता है।

मछलीयों की निकासी:

- मछली पकड़ने के लिए उपयोग किए जाने वाले नाव को साबुन के घोल से धोया जाना चाहिए और उसके बाद 1% सोडियम हाइपोक्लोराइट घोल से 5 मिनट का डिप ट्रीटमेंट के बाद सुखने के लिए छोर देना चाहिए।
- मछली पकड़ने में शामिल जालों को हर उपयोग के बाद कीटाणुनाशक या घर में बने नीम के घोल से उपचारित करना चाहिए।
- नाव संचालन के दौरान मीठे जल निकायों में मछली पकड़ने के लिए अधिकतम 2 व्यक्तियों की अनुमति होगी।
- किसी दिए गए क्षेत्र में चलने वाली स्वदेशी नावों को मछली पकड़ने के दौरान 3 मीटर सुरक्षित दूरी बनाए रखने के नियमों का पालन करना होगा।

विषयन और परिवहन दिशानिर्देश:

- मछली लैंडिंग केन्द्रों को ब्लीचिंग पाउडर (कैल्शियम हाइपोक्लोराइट) या सोडियम हाइपोक्लोराइट का उपयोग करके साफ किया जा सकता है।
- अनावश्यक सभाओं से बचने के लिए मछली नीलामी बिंदु या पूरे विक्रेता बाजार का समय सीमित किया जा सकता है।
- अंतर्राज्यीय परिवहन के लिए प्रवेश बिंदु पर इंसुलेटेड/रेफ्रिजरेटेड ट्रकों को सैनिटाइज करें।
- छोटे आकर के परिवहन वाहनों को दैनिक आधार पर धोए और सॉफ्ट करें।
- मत्स्य बंधु-डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पुसा द्वारा डिजाइन किया गया एक सौर आधारित मोबाइल रेफ्रिजरेटेड वाहन, मछली खुदरा विक्रेताओं के लिए देर से बिक्री से बचने के लिए अपनाएं। वाहन पर्यावरण के अनुकूल है और आसानी से घर के दरवाजे पर स्वच्छ तरीके से मछलियों को बेचने के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है।

झारखण्ड

रबी मौसम के प्रमुख कृषि कार्य

अन्वेषक

- किसान आने वाले रबी मौसम के लिए खेत की तैयारी, खाद, बीज तथा अन्य जरूरतों के इंतजाम में जुट जाएँ जिससे की सर्दी के मौसम की सभ्जियां समय से बोयी जा सकें।
- मूँग तथा उरद की फसलों के कटाई के बाद खाली हुए खेतों में किसान सब्जी मटर (आरकेल, आजाद मटर-1), टोरी पी.टी. 303, पांचाली, भवानी) आदि फसल ले सकते हैं सब्जी की खेती करने वाले किसान बीजस्थली में टमाटर, गोभी की नर्सरी की तैयारी करें।
- किसान रबी मौसम की फसल जैसे मटर (आरकेल, आजाद मटर-1, एस-10) का बुआई शुरू कर सकते हैं। बुआई की दूरी पंक्ति से पंक्ति 20 से.मी. एवं पौधे से पौधा 10 से.मी. रखें। बीज दर 30 किलोग्राम प्रति एकड़, यूरिया 15 किलोग्राम। एस.एस.पी. 100 किलोग्राम, एम.ओ.पी. 15 किलोग्राम बुआई के समय प्रति एकड़ में व्यवहार करें।
- जो किसान अगात आलू की खेती करना चाहते हैं वो उन्नत किस्में जैसे कुफरी पुष्कर, कुफरी पुखराज आदि की बुआई कर सकते हैं। कतार से कतार की दूरी 40 से 50 से.मी. तथा मेढ़ बनाकर कंद से कंद की दूरी 15 से.मी. रखें। एक एकड़ में बुआई के लिए 15 किटल बीज (20 से 30 ग्राम के अंकुरित बीज), 40 किलोग्राम यूरिया, 70 किलोग्राम डी.ए.पी., 80 किलोग्राम एम.ओ.पी. तथा गंधक 10 किलोग्राम की आवश्यकता होती है।
- जिन किसानों के पास सिंचाई की सुविधा उपलब्ध है वो आलू की फसल ले सकते हैं जैसे कुफरी अशोक, कुफरी सूर्या, कुफरी पुष्कर, कुफरी पुखराज में से किसी एक किस्म का चुनाव करें। खेत को दो-तीन बार देसी हल से जोते तो तथा सड़ी गोबर खाद 4 टन/एकड़, दीमक के लिए नीम या करंज की खत्ती 100-120 ग्राम प्रति एकड़ मिट्टी में मिला दें तथा 60:32:48:10 की दर से नेत्रजन-स्फुर-पोटाश-गंधक दें, बुआई के समय नेत्रजन की आधी मात्रा का प्रयोग करें। बुआई के लिए 25-30 ग्राम कंद का प्रयोग करें। कंद उपचार फँफूदनाशी बेविस्टीन से करें। आलू का बीज दर 12 किटल प्रति एकड़ प्रयोग करें।
- फूलगोभी एवं पत्तागोभी के तैयार बिचड़ों को ट्राईकोडमा 5 ग्राम/ली पानी के घोल में 5-6 घंटे छुबो कर रखें तथा 60 से.मी. की दूरी पर कतार में लगाएं। पौधे से पौधा की दूरी 40 से.मी. रखें। स्पोडोपटेरा कीट से बचाव के लिए कोल सभ्जियों (फूलगोभी, पत्तागोभी) के 20 कतार के बीच में दो कतार गेंदा फूल/सरसों लगाएं। एक एकड़ के लिए खाद की अनुशंसित मात्रा 48 किलोग्राम नेत्रजन, 24 किलोग्राम स्फुर एवं पोटाश तथा 120 किलोग्राम सड़ीगोबर की खाद देते हैं।

नवम्बर

- खेत को दो-तीन बार देसी हल से जोते तो तथा सड़ी गोबर खाद 4 टन/एकड़, दीमक के लिए नीम या करंज की खत्ती 100-120 ग्राम प्रति एकड़ मिट्टी में मिला दें तथा 60:32:48:10 की दर से नेत्रजन: स्फुर-पोटाश-गंधक दें, बुआई के समय नेत्रजन की आधी मात्रा का प्रयोग करें। बुआई के लिए 25-30 ग्राम कंद का प्रयोग करें। कंद उपचार फँफूदनाशी कार्बोप्टाइजम से करें। आलू का बीज दर 12 किटल प्रति एकड़ प्रयोग करें। बुआई के 30 दिनों बाद खेतों में प्रथम निकाई-गुडाई करें। खेतों में जमा पानी के लिए जल निकासी का उचित व्यवस्था करें, परती मुड़न के लिए धान के पुआल से फसलों की मत्त्यिंग कर दें या मंकोजेब M 45@ 2 ग्राम/ली, पानी में छिड़काव करें।
- बुआई के 25-30 दिनों बाद मिट्टी के नमी का लाभ लेते हुए आलू में मिट्टी चढ़ा दें तथा खेतों में प्रथम निकाई-गुडाई करें, खेतों में जमा पानी के लिए जल निकासी का उचित व्यवस्था करें, परती मुड़न के लिए धान के पुआल से फसलों की मत्त्यिंग कर दें या मंकोजेब M 45@ 2 ग्राम/ली, पानी में छिड़काव करें।
- सब्जी मटर की फसल मध्य नवम्बर तक सुरक्षित रूप से बोई जा सकती है, उन्नत किस्में जैसे अर्केल, आजाद मटर में से किसी एक की बुआई मेढ़ बनाकर 25 से.मी. कतार से कतार एवं 15 से.मी. पौधे से पौधा रखें। एक एकड़ में बुआई के लिए 40 किलोग्राम बीज, 35 किलोग्राम यूरिया, 200 किलोग्राम एस.एस.पी. तथा 25 किलोग्राम एम.ओ.पी. की आवश्यकता होती है।

- प्याज की खेती में दिलचस्पी रखने वाले किसान बिचड़ा तैयार करें। प्याज की उत्तर किसें हैं: पूसा रेड, अरका निकेतन, एग्रीफाउंड डार्क रेड, पटना वाइट, बेलारी रेड इत्यादि। एक एकड़ में बुआई के लिए 200 वर्ग मीटर में बीजस्थली का निर्माण करें। धिरम 75 डब्ल्यू. एस. @ 3 ग्राम/किलोग्राम बीज से बीज उपचार करने के पश्चात बीज को 5 से.मी. की दूरी में गिराकर भुरभुरी गोबर खाद से ढक दें तथा ऊपर से पुआल का एक परत डाल दें, पानी के फुहारे से पौधशाला का सिंचाई करें। बीमारी से बचाव के लिए कार्बोएंजिम+मैकोजेब 2 ग्राम/लीटर पानी में मिलाकर 10 दिनों के अंतराल में छिड़काव करें।

- आम- बगीचे की अच्छी तरह से जुताई करें एवं खरपतवार को बगीचे से हटा दें।

दिसम्बर

- प्याज की उत्तर किसें हैं- पूसा रेड, अरका निकेतन, एग्रीफाउंड डार्क रेड, पटना वाइट, बेलारी रेड इत्यादि। 40 दिनों के बिंचडों को ट्राईकोडर्म 5 ग्राम / लीटर पानी के घोल में 5-6 घंटे डुबो कर रखें तथा कतार से कतार 15 से.मी. की दूरी तथा 10 से.मी. पौधे से पौधा की दूरी पर लगाएं। 180:50:40 किलोग्राम / एकड़ यूरिया, डी.ए.पी. तथा म्हूटेट ऑफ पोटाश खाद की अनुसंधित मात्रा है। पौधों में यदि नए पते झुलसने के लक्षण (फुसेरियम विल्ट) दिखाई दे तो पोटाश खाद का अनुसंधित मात्रा दें तथा झुलसे हुए पौधों को निकल दें।
- सब्जी मटर के फसल में चूर्णिल आसिता रोग के आने की संभावना है, बचाव के लिए कैरायेन 1.5 मी. ली./ली. पानी में या सल्फेक्स 3 ग्राम/लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें। उत्तर किसें जैसे अर्केल, आजाद मटर में से किसी एक का बुआई मेंढ़ बनाकर 25 से.मी. कतार से कतार एवं 15 से.मी. पौधे से पौधा रखें। एक एकड़ में बुआई के लिए 40 किलोग्राम बीज, 35 किलोग्राम यूरिया, 200 किलोग्राम एस.एस.पी. तथा 25 किलोग्राम पोटाश की आवश्यकता होती है।
- आलू-अगात फसल परिपक्व स्थिति में आने लगे तो खुदाई से 10-15 दिन पहले ऊपर के पते काटकर हटा दें, ताकि आलू dk छिलका भी परिपर्फो हो जाए आलू में अग्रीती तथा पिछेती झुलसा रोग के लक्षण (पत्तों में गोल गहरे भूरे जलने के निशान) दिखाई देने पर मानकोजेब @2 मी.ली./लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें। ठंड के मौसम में सुबह के समय कम तापमान के साथ कुहासा पिरे तो पाला मारने की संभावना रहती है, किसान मिट्टी में नमी संरक्षित रखें, तथा संभव हो तो पुआल जला कर धूआं करें, किसान आपात स्थिति में मेटालेविशल+ मैकोजेब एम.जेड. @2 मी.ली./लीटर पानी का छिड़काव कर सकते हैं। बुआई के 25-30 दिनों बाद मिट्टी के नमी का लाभ लेते हुए आलू में निकाई-गुड़ाई करें एवं मिट्टी चढ़ा दें। 10-15 दिनों के अंतराल पर सिंचाई करते रहें।
- आम- छोटे पौधों को पाले से बचाव हेतु बगीचे की सिंचाई करें। भूसा या अल्कायेन शीट की सहायता से भी पीला से छोटे पौधों का बचाव किया जा सकता है।

जनवरी

- आलू की बुआई के 25-30 दिन बाद मिट्टी के नमी का लाभ लेते हुए मिट्टी चढ़ा दें। 10-15 दिनों के अंतराल पर पौधों की सिंचाई करते रहें। धान के पुआल से फसलों की पलवार कर दें।
- सब्जिओं की उत्तर किसें जैसे कद्दू (पूसा नवीन, अरका बहार, स्वर्ण सेहा), कोहड़ा (सी.ओ.-1,2, अरका चंदन, अरका सूर्यमुखी), करेला (स्वर्ण यामिनी, स्थानीय, अरका हारिया, पूसा 2 मैसमी), खीरा (बालम खीरा, स्वर्ण अगोती, पूसा संयोग, जापानी लांग प्रीन) को 1.5 से 2.5 किलोग्राम/एकड़ के बीज दर से 2-3 मी. की दूरी पर (कद्दू तथा कोहड़ा के लिए) तथा 1.25-1.5 मी. की दूरी पर (करेला तथा खीरा के लिए) लगाएं। सिंचाई आवश्यकतानुसार तथा सपाह में एक बार करें। गरमा सब्जियों की खेती के लिए किसान बिचड़ा को पाली हाउस में उगाएं या बीजस्थली को पुआल की मल्चिंग कर लगाएं जिससे प्रारम्भिक अवस्था में पौधों को गर्मी मिल सके।
- किसान मिर्च (स्वर्ण प्रफुल), बैगन (स्वर्ण श्यामली, स्वर्ण प्रतिभा), टमाटर (स्वर्ण सम्पदा, स्वर्ण लालिमा, स्वर्ण बैभव, अर्का सप्लाट), नेनुआ (स्वर्ण प्रभा), झींगी (स्वर्ण मंजरी, स्वर्ण सावनी-सतपुतिया) के पौधे की रोपाई करें। बुआई की दूरी: मिर्च, बैगन- 50X50 से.मी. की दूरी पर, टमाटर- 60X40 से.मी. की दूरी पर, नेनुआ तथा झींगी- 2X0.5 मीटर की दूरी पर लगाएं। बुआई से पहले पौधों के जड़ को ट्राइकोडर्म के घोल में 4-5 घंटा ढबा कर रखें। शिमला मिर्च (स्वर्ण अतुल्य), खीरा (स्वर्ण शीतल) के बीज को बीज उपचार करके बीजस्थली में डाल दें।

- प्याज- प्याज की उन्नत किसें हैं- जैसे पूसा रेड, अरका निकेतन, एग्रीफाउंड डार्क रेड, पटना वाइट, बेलारी रेड इत्यादि। 40 दिनों के बिचड़ों को ट्राईकोडमा 5 ग्राम / लीटर पानी के घोल में 5-6 घंटे डुबो कर रखें तथा कतार से कतार 15 से.मी. की दूरी तथा 10 से.मी. पौधे से पौधा की दूरी पर लगायें। 180:50:40 किलोग्राम / एकड़ यूरिया, डी.ए.पी. तथा म्फूरेट ऑफ़ पोटाश खाद की अनुशंसित मात्रा है। पौधों में यदि नए पत्थर झुलसने के लक्षण (फुसेरियम विल्ट) दिखाई दे तो पोटाश खाद का अनुशंसित मात्रा दें तथा झुलसे हुए पौधों को निकल दें।
- आम- बेहतर परागण के लिए मधुमक्खी के बक्सों को बगीचे में व्यवस्थित तरीके से रखें।
- आम- नये पौधों को पीला से बचाना चाहिए, इसके लिए बागों की सिंचाई करनी चाहिए।

फरवरी

- इस मौसम में किसान फरसबीन, बैगन, टमाटर, मिर्च, परवल, तरबजू, खरबजू, खीरा, ककड़ी, छोटी झाड़ी वाला बोटी, भिड्डी आदि खेती कर सकते हैं, उन्नत किसें जैसे फरसबीन (स्वर्ण लता, स्वर्ण प्रिया), बोटी (स्वर्ण मुकुट, काशी कंचन), भिड्डी (पूसा विशाल, समाट)।
- आलू- आगत फसल परिपक्व स्थिति में आने लगे तो खुदाई से 10-15 दिन पहले ऊपर के पते को काटकर हडा दें, ताकि आलू तथा छिलका भी परिपक्व हो जाए। आलू को भंडारण के लिए खपरेल छत वाले भंडार-घर उपयुक्त होते हैं, आलू को गोबर से लीपी हुए सतह पर या घर के अंदर आधा फुट का गढ़ा में पुआल की एक सतह बिछाकर रख सकते हैं। बाजार में आलू का उचित मूल्य पाने के लिए आलू की श्रेणीकरण करनी चाहिए, आलू को चार वर्ग <25 ग्राम, 25-50 ग्राम, 50-75 ग्राम तथा >75 ग्राम वर्गों में बांट दें।
- फूलगोभी एवं पत्तागोभी के तैयार बिचड़ों को ट्राईकोडमा 5 ग्राम/लीटर पानी के घोल में 5-6 घंटे डुबो कर उपचारित रखें तथा कतार से कतार 60 से.मी. की दूरी पर पौधे से पौधा की दूरी 40 से.मी. पर रोपित करो।
- किसान मिर्च (स्वर्ण प्रपञ्चल), बैगन (स्वर्ण श्यामली, स्वर्ण प्रतिभा), टमाटर (स्वर्ण सम्पदा, स्वर्ण लालिमा, स्वर्ण बैम्भ, अर्का समाट) के पौधों की रोपाई करें, बुआई की दूरी: मिर्च, बैगन- 50X50 से.मी. की दूरी पर, टमाटर- 60X40 से.मी. की दूरी पर। बुआई से पहले पौधों के जड़ को कार्बोनाइज़िम के घोल में आधा धंटा डुबा कर उपचारित करें।
- फरसबीन की उन्नत प्रजातियाँ हैं- पंत अनुपमा, स्वर्ण प्रिया, अर्का कोमल आदि की बुआई 10 से.मी. की दूरी पर और कतार से कतार की दूरी 40 से.मी. में करें। बीज दर 30 से 35 किलोग्राम से अधिक ना रखें तथा खाद की मात्रा एन.पी.के. 16:32:16 किलोग्राम और गोबर खाद 80 किटल/एकड़ दर से डालें। पौधे की जरूरत के अनुसार या हाते में एक बार सिंचाई करें।
- बोटी- बोटी की उन्नत शील किसें हैं- स्वर्ण मुकुट, काशी कंचन, अरका गरिमा, पूसा कोमल इत्यादि की बुआई 15 से.मी. की दूरी पर और कतार से कतार की दूरी 30 से.मी. में करें। बीज दर 15 से 20 किलोग्राम रखें तथा खाद की मात्रा एन.पी.के. 8:16:8 किलोग्राम/एकड़ डालें। पौधे की जरूरत के अनुसार या हाते में एक बार सिंचाई करें।
- आम के फूलन की अवस्था में कीटनाशी का प्रयोग ना करें। अगर आम का मंजर मिज नामक कीट से ग्रसित हो तो उसे धारदार चाकू से कटकर हडा दें। बेहतर परागण के लिए मधुमक्खी के बक्सों को बगीचे में व्यवस्थित तरीके से रखें।

मार्च

- हल्दी एवं अदरख- हल्दी एवं अदरख की खेती के लिए किसान खेत तैयार करें, उन्नत किसें जैसे- हल्दी (वर्धमान, सुरुचि, नदिया), अदरख (रावेंद्र सोनिया) आदि का इस्तेमाल करें। एक एकड़ में बुआई के लिए 7-8 किटल बीज की आवश्यकता होती है। बुआई की दूरी पौधे से पौधा अदरख (10 से.मी.), हल्दी (15 से.मी.), कतार से कतार की दूरी (हल्दी, अदरख) 40 से.मी. रखें। बुआई के समय गोबर की खाद 6-8 टन/एकड़ का प्रयोग करें। नत्रजन : स्फुर : पोटाश 40:20:20 किलोग्राम/एकड़ देने से अच्छी उपज मिलती है। सिंचाई 7-10 दिनों के अंतराल में करें।
- भिड्डी की उन्नत किसें हैं- परभनी क्रांति, अरका अनामिका आदि को 45 से.मी. कतार से कतार की दूरी पर तथा पौधे से पौधा की दूरी 20 से.मी. पर लगायें। एक एकड़ में 50 किटल गोबर की खाद मिट्टी में अच्छी तरह मिला दें तथा 40:20:20 किलोग्राम नत्रजन: स्फुर: पोटाश खाद की मात्रा एक एकड़ में डालें। सिंचाई आवश्यकता अनुसार तथा सप्ताह में एक बार करें।

- इस समय किसान निचली भूमि में ओल की खेती सुरक्षित रूप से कर सकते हैं। ओल के लिए अच्छे जल निकास वाला निवाला भूमि उपयुक्त होती है। किसें जैसे गजेन्द्र, श्री पदमा, श्री अविरा इत्यादि ओल की अच्छी उपज देती है। ओल लगाने के लिए एक फुट चौड़ाई और एक फुट गहरा गढ़ा 60 X 60 से. मी. की दूरी पर खोद लें, दो दिन धूप में गड़े को खुला छोड़ने के बाद गड़े में ऊपरी मिट्टी तथा गोबर खाद का मिश्रण भर दें। ओल के कंद में से आधा किलोग्राम के बीज की रोपाई से पहले कार्बोएंडोजिम @ 2 ग्राम /लीटर पानी में आधा घंटा डुबो कर उपचारित कर लें।

धान्य फसलें

सरसों

- झारखण्ड राज्य में सरसों की खेती धान काटने के बाद दोन 2 एवं 3 में की जाती है। सरसों की खेती के लिए अच्छे जल निकास वाली बलुई दोमट से लेकर दोमट मिट्टी उपयुक्त है
- महत्वपूर्ण किसें:-
 - तोरिया: पी. टी. 203ए पांचाली, पी बी 737
 - राई: पूसा सरसों 25ए पूसा सरसों 28ए पूसा सरसों 30, एन. आर. सी. एच. बी. 101, शिवानी, वरुणा, पूसा अग्रणी, पूसा महक, डी. आर. एम. आर. 150-35



- बुआई का समय: तोरिया के बुआई का उचित समय 15 सितम्बर से 15 अक्टूबर है राई की बुआई 15 अक्टूबर से 15 नवम्बर के मध्य की जाती है। अच्छी उपज प्राप्त करने हेतु सभी समय से बुआई अत्यंत अवश्यक है जब सरसों की खेती अंतः फसली खेती के रूप में की जाती है तो बुआई का समय मुख्य फसल पर आधारित होता है
- बुआई विधि: सरसों में पंक्ति से पंक्ति 30 से. मी. एवं पौध से पौध 10-15 से. मी. की दूरी रखी जाती है।
- झारखण्ड राज्य में जहाँ की मिट्टी अम्लीय है यहाँ सरसों के बीजों को लगाने से पूर्व 10 किलो बीज में 1 किलो बारीक चूना मिलाकर बुआई करें।

- सरसों की एकल फसल लेने के लिए 3.75 कि.ग्रा. ध. हे. के दर से बीज बुआई करने की जरूरत होती है परन्तु साधारणतया 5 किलोधे बीज दर की अनुरूपता की जाती है। बुआई के तीन सप्ताह के बाद विरलीकरण कर कमज़ोर पौधों को निकाल दिया जाता है जिससे शेष पौधों को भरपूर एवं ठीक से पोषक तत्व उपलब्ध हो तथा पौधे स्वस्थ रहें, बीज को बीज जनित रोगों से सुरक्षा प्रदान करने हेतु थीरम 2 ग्रामध किलो बीज की दर से उपचार करें, जैविक विधि से खेती हेतु बीजों को ट्राईकोडरमा नामक मित्र फंकूद से 5 ग्राम प्रति किलो बीज की दर से उपचारित करें।
- खेत की तैयारी करते समय अच्छी प्रकार से सड़ी हुई गोबर खाद 5 टन प्रति हेक्टेयर का व्यवहार करने से मिट्टी में जल संचय करने की क्षमता बढ़ती है। तोरिया में 50::25::20 कि.ग्रा.ध हेक्टेयर तथा राई-सरसों में 80::60::40::20 कि.ग्रा./हे. की दर से नाइट्रोजन, फॉस्फोरस, पोटाश व सल्फर का प्रयोग करें।
- खरपतवार नियंत्रण करने के लिए दो सप्ताह के अन्तराल पर दो से तीन बार निकाई गुडाई करें, रासायनिक दवा का प्रयोग करने के लिए ट्राईफ्ल्युरिन 1000 मि.ली. 500 लीटर पानी में मिलाकर बोआई के पहले 1 हेक्टेयर क्षेत्र में मिट्टी में अच्छी तरह मिला दें या आइसोप्रोट्युराँन का 100 ग्रा./500 ली. पानी की दर से 1 हेक्टेयर क्षेत्रफल में बुआई के तुरंत बाद 1-2 दिनों के अन्दर छिड़काव करें।
- बीज बुआई से पूर्व पौधे के अच्छे विकास के लिए सिचाई करें, फसल को मुख्यतः तीन सिचाई बुआई के बाद तीन, तीन सप्ताह के अन्तराल पर दें।
- लाहीध माहू कीट पौधों के रस को चूसते हैं और पौधे पीले हो जाते हैं बाद की अवस्था में फलियाँ नहीं लग पाती, इस कीट के नियंत्रण हेतु नरजन का अत्यधिक व्यवहार न करें, खेत में कीट का प्रकोप होने पर थ्योमेथाक्साम 80 ग्राम या इमिडाक्लोरोप्रिड 17.8 एस.एल. 500 से 100 मि.ली. ली. पानी में घोल बनाकर 1 हेक्टेयर क्षेत्र में छिड़काव करें।
- सफेद रुआ के नियंत्रण हेतु मेटालाक्सिल 8 प्रतिशत M_1 नेक्कोजेब 64 प्रतिशत का 2 ग्रा. ध.ली. पानी की दर से 1 हेक्टेयर क्षेत्र में 15 दिनों के अन्तराल पर 2-3 छिड़काव करें।

चना

- चना के किस्में: पूसा 3043 ए जी.एन.जी. 1581ए जाकी 9218ए जी. एन. जी. 1958ए के. जी. पी. 59ए के. डब्लू. आर. 108ए पूसा 372ए पूसा 256ए गुजरात चना.4 (जी.जी.-4), एच. के.. 4ए एच. के. 94-134 (काबुली चना), काक -2 (काबुली चना), बिरसा चना . 3 (काबुली चना) जी. सी.पी. 105।
- समय से बुआई के लिए 1 हेक्टेयर क्षेत्र में 70-85 किलोग्राम बीज का इस्तेमाल करें।
- चने के बुआई का उचित समय 15 अक्टूबर से 15 नवम्बर है चने की बुआई करते समय पंक्ति से पंक्ति 30 से.मी. एवं पौधा से पौधा 10 से.मी. की दूरी पर 5 से.मी. गहराई में करें।
- बीज व मूदा जनित रोगों से बचाव हेतु बीज को ट्राईकोडर्मा विरिडी 8-10 ग्रामक्लो बीज में मिलाकर शोधित करें, दलहनी फसल की अच्छी पैदावार लेने के हेतु बीजों को राजोबियम एवं पी.एस.बी. कल्चर / 20 ग्राम प्रतिकिलो बीज की दर से उपचारित करें।
- बुआई के 25 से 30 दिनों बाद पहली निकाई गुडाई और यदि आवश्यकता हो तो बुआई के 60 दिन के बाद दूसरी निकाई करें। फ्लूक्लोरेलीन 1 किलो प्रति हेक्टेयर के दर से 500-1000 लीटर पानी में घोल बनाकर बुआई से पूर्व इस्तेमाल करने से खरपतवार नियंत्रित रहेगा।
- अच्छी उत्पादन लेने के लिए संवर्धित मिट्टी में डाले. 25रु 50रु 25रु 20 किलो प्रति हेक्टेयर नाइट्रोजन, फास्फोरस, पोटाश व सल्फर का व्यवहार मूदा जाँच के आधार पर करें, जहाँ के मिट्टी अम्लीय है वहाँ 3-4 किलो चूना प्रति हेक्टेयर की दर से प्रयोग करें, फली बनते समय 10 दिनों के अन्तराल पर दो बार 20: यूरिया घोल का इस्तेमाल करने से अच्छी उपज प्राप्त होती है।
- बुआई से पूर्व एक सिचाई अच्छे पौधे के विकास के लिए अवश्यक है। यदि ठण्ड में बारिश न हो तो एक सिचाई पुष्पन अवस्था से पूर्व और एक सिचाई फली बनते समय अवश्य दें। अधिक पानी चने की खेती के लिए हमेशा हानिकारक होता है।

- फल छेदक से फसलों के नियंत्रण हेतु स्पाइनोसेड 45 एस सी ०७। मिली.लीटर या इन्डोमस्कार्ब 14.5 एस सी ०७। मिली.लीटर घोल का छिड़काव करें।



मसूर

- झारखण्ड में मसूर की खेती दोन २ नं. (मध्यम जमीन) में धान कटाई के बाद की जाती है।
- इसके उत्तर प्रभेद है- एच. यु.एल.५७। डब्ल्यू.बी.एल.८८। के. - ७५। के. एल.एस. २१८। ए पंत मसूर ६३९। ए पंत मसूर ४०६। अहण (पी. एल. ७७-१२) शिवालिक (एल. ४०७६), आई. पी.एल. ४०६ है।
- बीज दर ३० किलो प्रति है. की दर से बुआई करें। विलम्ब कि स्थिति में बीज दर ४० कि.ग्रा./हेक्टेयर कर दें।
- मसूर बुआई का उचित समय १५ अक्टूबर से १५ नवम्बर है। पंक्ति से पंक्ति २५ से. मी. और पौध से पौध ८ से. मी. की दुरी रखें तथा बीज को ३-४ से. मी.की गहराई में बुआई करें।
- बीज बुआई से पूर्व ८. १० ग्राम प्रति किलो बीज के दर से ट्राइकोडमा विरिडी से उपचारित करें, जिससे उनका रोग का नियंत्रण किया जा सके। दलहनी फसल होने के कारण मसूर बीज को राइजेबियम एवं पी. एस.बी. कल्चर प्रत्येक से २० ग्राम प्रति किलो बीज के दर से उपचारित करें। उपचार करने के तुरंत बाद बीज की बुआई कर दें।
- अतिमि जुताई के पूर्व गोबर की सड़ी खाद ५ टन/हे. की दर से यथा संभव व्यवहार करें। २५: ५०: २५: २० किग्रा/हे. नाइट्रोजन, फास्फोरस, पोटाश, व सल्फर का व्यवहार खेत की अंतिम जुताई करते समय करें।
- बुआई के ३० से ६० दिनों के बाद खरपतवार की वृद्धि बहुत अधिक होती है। फ्लूक्लोरलीन ४५ ई. सी. २ लीटर/हेक्टेयर या इमेजाथाईपर ४००-६०० मिली. को ८००-१००० लीटर पानी में घोल बनाकर बुआई के १ से २ दिन के अंदर छिड़काव करने से खरपतवार नियंत्रित रहेगा।

- फली छेदक के पिल्लू मसूर के फसल को हानि पहुँचाती है इसके नियंत्रण हेतु प्रोपैनोफॉस 50 ई सी 1 लीटर/हेक्टेयर या जैव कीटनाशी स्पाइनोसेड 45 ई सी 200 मिली. प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें।

गेहूँ

- झारखण्ड राज्य में धन कटाई के उपरांत दोन में गेहूँ की खेती की जाती है।
- खेत की जुताई कर मिट्टी को हल्का व भूरभूरा बनायें तथा अंतिम जुताई के समय 10 टन प्रति हेक्टेयर गोबर की सड़ी खाद खेत में मिला दें।
- उचित समय पर बुआई हेतु एच. डी. 3249ए एच. डी. 3086ए के 307। बिरसा गेहूँ-3, एच. डी. 2967ए डी. बी. डब्लू. 39ए डी. बी. डब्लू. 187, एच. आई. 1612ए एन. डब्लू. 5052 व 5054ए के 9107ए एच. आई. 1556 आदि सिंचित अवस्था के लिए अनुसंधित है।



- असिंचित अवस्था में समय पर बुआई हेतु के 1317ए एच. डी. 3171 एवं एच. आई. 1612 का चयन कर सकते हैं।
- विलम्ब से सिंचित अवस्था में बुआई के लिए एच. आई. 1563ए डी. बी. डब्लू. 107ए एवं 14ए एच. डी. 2985ए 3118ए 2643 आदि का का चयन करें।
- समय पर बुआई हेतु 100 किलो प्रति हेक्टेयर बीज का व्यवहार करें एवं विलम्ब से बुआई में 125 किग्रा/हेक्टेयर बीज का व्यवहार करें। बीज बुआई से पूर्व 2 ग्राम प्रति किलो की दर से विटावैक्स या कार्बोन्डाजिम से बीजोपचार करें।
- बीज बोने का उचित समय 15 अक्टूबर से 15 नवम्बर है। सिंचित अवस्था में अक्टूबर के प्रथम सप्ताह से बुआई शुरू कर सकते हैं। विलम्ब से बुआई हेतु दिसम्बर के प्रथम सप्ताह में बुआई करें।
- सही समय पर सिंचित अवस्था में 150: 60: 40 किग्रा/हेक्टेयर नत्रजन, फास्फोरस व पोटाश का प्रयोग करें। विलम्ब से सिंचित अवस्था में 90: 30: 20 किग्रा/हेक्टेयर नत्रजन, फास्फोरस, पोटाश का व्यवहार करें। 50% नत्रजन, फास्फोरस

- एवं पोटाश की पूरी मात्रा बुआई के समय एवं शेष नत्रजन को दो बराबर भाग में बाँटकर पहला भाग पहली सिंचाई (बुआई के 21 दिनों बाद) समय एवं दूसरा भाग दूसरी सिंचाई (बुआई के 45 दिन के बाद) के समय प्रयोग करें।
- पहली सिंचाई 20 से 25 दिन के बाद चंदेरी जड़ निकलने की अवस्था में, दूसरी सिंचाई 40. 45 दिन पर शाखा निकलने की अवस्था में, तीसरी सिंचाई 70-75 दिन में, चौथी सिंचाई 90-95 दिन पर पुष्पन अवस्था में, पाँचवीं सिंचाई 105-110 दिन में दाने भरते समय तथा छठी सिंचाई 120 दिन में करें।
 - फसल बढ़वार के शुरूआती अवस्था में पेंडीमेथेलिन 30 ई. सी. 1.5 लीटर/एकड़ के दर से बुआई के 2 से 3 दिन के अंदर छिड़काव करें जिससे चौड़ी पत्ते वाले खरपतवार नियंत्रित होंगे। 2.4 डी. 0.5 से 1 किलो प्रति हेक्टेयर दर से 600 लीटर पानी में धोल बनाकर बुआई के 4-5 सप्ताह पर व्यवहार करें। संकरी पत्ती के लिए सल्फोसल्फ्यूरॉन 33 मि. ली./हेक्टेयर के दर से बुआई के 30 से 35 दिनों के बाद छिड़काव करें।

सब्जी वर्गीय फसलें

झारखण्ड राज्य में रबी मौसम के लिए टमाटर, बैंगन, फूलगोभी, पत्तागोभी, ब्रोकली, प्याज, मटर, फ्रेंचबीन, आलू आदि सब्जियां व्यवसायिक दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं। अधिकांश सब्जियों में 20-25 दिन पुरानी पौध की रोपाई कर खेती की जाती है। प्याज की पौध तैयार होने में 5-6 सप्ताह का समय लगता है। खुले वातावरण में क्यारी विधि से नर्सरी तैयार करने की तुलना में प्रोट्रै/ज्लग ट्रै या नर्सरी ट्रै में पौध तैयार करना अधिक उपयुक्त होता है। इसमें कोको पीट एवं वर्मी कम्पोस्ट को 1:1 भाग में मिलाकर प्रयोग करते हैं। इस विधि से तैयार पौध मृदाजनित रोगों से मुक्त, एक समान, स्वस्थ व अच्छी जड़ों वाली होती है तथा रोपाई के बाद शीघ्र स्थापित हो जाती है, जिससे क्यारी विधि की तुलना में फसल भी पहले तैयार हो जाती है। नर्सरी में पौधों में लगने वाले आर्द्ध गलन रोग से बचाव के क्रम में बुवाई पूर्व बीजों को टाइकोडर्मा (4-6 ग्रा./कि.ग्रा. बीज) या कार्बोडाजिम (2 ग्रा./कि.ग्रा. बीज) से अवश्य उपचारित करें। समुचित पोषक तत्व प्रबन्धन के लिए मृदा परीक्षण अवश्य करवाना चाहिए।



टमाटर

टमाटर की खेती हेतु उत्तर किस्में जैसे - स्वर्ण लालिमा, अर्का आभा या संकर किस्मों जैसे - अर्का सम्प्राट, अर्का रक्षक, स्वर्ण सम्पदा, पूसा हाइब्रिड - 1, काशी अमृत आदि उपयुक्त हैं। अर्का सम्प्राट व अर्का रक्षक त्रिगुणित रोग प्रतिरोधी (पर्णकुंचन विधिएं जीवाणुविक झूलसा एवं अग्रीती झूलसा) किस्में हैं। मुक्त परागित किस्मों के लिए 700 ग्रा./हे. व संकर किस्मों के लिए लगभग 200 ग्रा./हे. बीज की आवश्यकता होती है। अर्का रक्षक किस्में दूरस्थ बाजारों में भेजने व प्रसंस्करण हेतु बहुत ही उपयुक्त प्रजाति है जबकि अर्का सम्प्राट की मांग स्थानीय बाजार में बहुत ही अधिक रहती है। उत्तर किस्मों की रोपाई 50 ×

50 से.मी. पर व संकर किस्मों की रोपाई 60×60 से.मी. की दूरी पर करना चाहिए। अर्का समाट व अर्का रक्षक किस्मों के लिए रखी मौसम में एटेकिंग के साथ 4.5 - 5.0 फीट (कतार से कतार) व 3.0 फीट (पौध से पौध) की दूरी पर रोपाई की अनुशंसा की गई है। उन्नत किस्मों के लिए प्रति हेक्टेयर 250 किटल गोबर खाद के साथ 100 कि.ग्रा. नाइट्रोजन, 50 कि.ग्रा. फॉस्फोरस व 50 कि.ग्रा. पोटैशियम का प्रयोग करना चाहिए। संकर किस्मों के लिए प्रति हेक्टेयर 300 किटल गोबर खाद के साथ 200 कि.ग्रा. नाइट्रोजन, 150 कि.ग्रा. फॉस्फोरस व 100 कि.ग्रा. पोटैशियम का प्रयोग करना चाहिए। फास्फोरस व पोटैशियम की पूरी मात्रा व नाइट्रोजन की एक तिहाई मात्रा की रोपाई से पूर्व भूमि में मिला देते हैं व नाइट्रोजन की शेष मात्रा को दो बाराबर भागों में बॉटकर रोपाई के 25-30 दिनों बाद व 45-50 दिनों बाद देते हैं।

शिमला मिर्च

शिमला मिर्च की खेती लिए मुक्त परागित किस्मों जैसे - अर्का मोहिनी, अर्का गौरव, अर्का बसन्त, कैलीफोर्निया वडर, येलो वंडर, स्वर्ण अतुल्या या सकर किस्मों जैसे - पूसा दीप्ती, भारत व इन्ड्रा का चुनाव किया जा सकता है। मुक्त परागित किस्मों के लिए लगभग 800 ग्रा./हेक्टेयर व संकर किस्मों के लिए लगभग 375 ग्रा./हेक्टेयर बीज की आवश्यकता होती है। 30-35 दिन पुरानी पौध को 45×45 से.मी. (मुक्त परागित किस्मों या 60×60 से.मी. की दूरी पर रोपाई करें। अधिकतम उपज सुनिश्चित करने हेतु टपक सिंचाई प्रणाली के साथ मल्टिंग का प्रयोग करें।

मटर

मटर की बुवाई हेतु मध्य सितम्बर से नवम्बर माह का समय उपयुक्त होता है। इसके लिए अर्केल, पूसा प्रगति, काशी नन्दिनी, काशी मुक्ति, स्वर्णा मुक्ति, आजाद मटर 1, पन्त मटर 2, पन्त सब्जी मटर 3, पन्त सब्जी मटर 4, पन्त सब्जी मटर 5 आदि किस्मों को चुनाव किया जा सकता है। एक हेक्टेयर भूमि में बुवाई हेतु 80-100 कि.ग्रा. बीज की आवश्यकता होती है। बुवाई $30-45$ से.मी. (पंक्ति से पंक्ति) $\times 6-8$ से.मी. (बीज से बीज) की दूरी उपयुक्त है। बुवाई पूर्व बीजों को राइजोबियम कल्चर (200 ग्रा./10 कि.ग्रा. बीज) से उपचारित करें। अच्छी उपज सुनिश्चित करने के लिए प्रति हेक्टेयर 200-250 किटल गोबर खाद, 40 कि.ग्रा. नत्रजन, 80 कि.ग्रा. फास्फोरस व 40 कि.ग्रा. पोटाश का प्रयोग करना चाहिए। देर से बोई गई मटर में पाउडरी मिल्ड्यू फार्फूदी रोग लगने की सम्भावना होती है जिसे सत्फर 80 डब्लू.पी. 0.2 प्रतिशतघोल का छिड़काव कर नियंत्रित किया जा सकता है। इस रोग की रोकथाम के क्रम में पीआरएम-4 और जवाहर मटर-5 जैसी प्रतिरोधी किस्मों का चुनाव किया जा सकता है।



फ्रेंच बीन

रबी मौसम हेतु फ्रेंचबीन की ज्ञाझीदार किस्मों जैसे- पंत अनुपमा, सर्व प्रिया, अर्का कोमल, अर्का अनुप, पूसा पार्वती आदि का चुनाव कर सकते हैं जिसके लिए 80-90 कि.ग्रा./हे. बीज की आवश्यकता होती है। ज्ञाझीदार किस्मों के बीजों की बुवाई 45-60×15-20 से.मी. की दूरी पर करते हैं। प्रति हेक्टेयर 200 कि.ग्रा. गोबर खाद, 40 कि.ग्रा. नाइट्रोजन, 80 कि.ग्रा. फास्फोरस व 40 कि.ग्रा. पोटाश की आवश्यकता होती है। फ्रेंचबीन में पाउडरी मिल्डजू रोग के लक्षण दिखाई देने पर सल्फर 80 डब्ल्यू.पी दवा का 2 ग्रा./ली. पानी की दर से छिड़काव करना चाहिए।

फूलगोभी

पूसा सोबॉल, पूसा सोबाल के - 1, पूसा शुभा, पन्त शुभा, पूसा हिमज्योती, आदि के साथ संकर किस्मों जैसे- हिमागी, स्वाती, पूसा हाइब्रिड 1 आदिकिस्में फूलगोभी की खेती हेतु उपयुक्त हैं। नर्सरी तैयार करने हेतु बीजों की बुवाई मध्य अक्टूबर तक समाप्त कर लें। नर्सरी तैयार करने हेतु प्रति एकड 250 ग्रा. बीज पर्याप्त है। पौधों की रोपाई 60 से.मी. (कतार से कतार) ×60 से.मी.. (पौध से पौध) की दूरी पर करना उपयुक्त है। उत्रत किस्मों के लिए 200-250 किटल गोबर खाद व 120 कि.ग्रा. नत्रजन, 60 कि.ग्रा. फॉस्फोरस व 60 कि.ग्रा. पोटाश/हे. की दर से व संकर किस्मों के लिए 300 किटल गोबर खाद के साथ 200 कि.ग्रा. नत्रजन, 150 कि.ग्रा. फॉस्फोरस व 100 कि.ग्रा. पोटाश का प्रयोग करना चाहिए। मृदा में बोरेंग की कमी की दशा में 5 कि.ग्रा. बोरेक्स व 400 ग्रा. सोडियम मोलिब्डेट रोपाई के समय भूमि में मिला देना चाहिए।

पत्तागोभी

पत्तागोभी की खेती के लिए झारखण्ड राज्य में अगेती किस्मों - जैसे गोल्डेन एकड, अर्ली ड्रम हेड, प्राइड ऑफ इंडिया, पूसा अगेती पूसा मुक्ता, अर्ली वियाना, एक्सप्रेसएवर पछेती किस्मों जैसे - लेट ड्रमहेड, पूसा ड्रम हेड, पूसा सम्बन्ध आदि किस्मों का चुनाव किया जा सकता है। संकर किस्मों के रूप में गंगा, जमुना, कारेणी, श्री गणेश कैबेज न - 8 आदि को भी लगाया जा सकता है। अगेती किस्मों के बिंदुआ तैयार करने के लिए सिताम्बर में बुवाई करते हैं तथा अक्टूबर में बिंदुआ की रोपाई की जाती है जबकि पछेती किस्मों में बीज अक्टूबर में बोते हैं तथा बिंदुआ की रोपाई नवम्बर में की जाती है। उत्रत किस्मों के लिए प्रति हेक्टेयर क्षेत्रफल के लिए 800 ग्रा. एवं संकर किस्मों के लिए 310 ग्रा. बीज की आवश्यकता होती है। अगेती किस्मों की रोपाई के लिए 60 × 30 से.मी. की दूरी उपयुक्त होती है। अच्छी उपज के लिए पोषक तत्व प्रबन्धन पर भी विशेष ध्यान देने की आवश्यकता होती है। उत्रत किस्मों के लिए 200-250 किटल गोबर खाद के साथ 120 कि.ग्रा. नत्रजन, 60 कि.ग्रा. फॉस्फोरस व 60 कि.ग्रा. पोटाश प्रति हे. की दर से प्रयोग करना चाहिए। संकर किस्मों के लाए 300 किटल/हे. गोबर खाद, एवं 200 कि.ग्रा. नाइट्रोजन, 150 कि.ग्रा. फॉस्फोरस व 100 कि.ग्रा. पोटैशियम प्रति हेक्टेयर का प्रयोग करना चाहिए। माहू एवं डायमण्ड बैक माँथ गोभी वर्गीय सज्जियों के प्रमुख कीट हैं। माहू के नियन्त्रण हेतु इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एस.एल. कीटनाशी का 1 मि.ली./ली. पानी की दर से छिड़काव करना चाहिए। डायमण्ड बैक माँथ के नियन्त्रण हेतु 1 मि.ली./ली. की दर से इन्जोक्साकार्ब का छिड़काव करना चाहिए।

आतू

आतू की खेती के लिए अक्टूबर के अंतिम सप्ताह से मध्य नवम्बर का समय बुवाई के लिए उत्तम होता है। आतू की कुफरी पुखराज, कुफरी चंद्रमुखी, कुफरी अशोक, कुफरी कंचन, कुफरी सूर्या और कुफरी पुष्कर जैसी उत्रत किस्मों का चयन किया जा सकता है।

एक हेक्टेयर क्षेत्रफल के लिए 30 किटल/हे. अंकुरित कंदों की आवश्यकता होती है। औसतन 25-30 ग्रा. वजन के कंदों को चुनाव बुवाई हेतु करना चाहिए। एक हेक्टेयर क्षेत्रफल के लिए 100-120 कुन्टल गोबर खाद, 150 कि.ग्रा. नाइट्रोजन, 80 कि.ग्रा. फॉस्फोरस, 120 कि.ग्रा. पोटाश व 24 कि.ग्रा. सल्फर पर्याप्त है। गोबर खाद, फॉस्फोरस व पोटाश की पूरी मात्रा व नाइट्रोजन की अधी मात्रा खेत की तैयारी के समय की मिलाना चाहिए। नाइट्रोजन की शेष मात्रा की बुवाई के 25-30 दिनों बाद मिट्टी चढ़ाते समय मिलाना चाहिए। खेत में दीमक की समस्या होने पर नीम या करंज खल्ली 200-250 कि.ग्रा. प्रति हेक्टेयर की दर से प्रयोग करना चाहिए। अगेती एवं पछेती झुलसा रोग के नियन्त्रण के लिए प्रोपीनेब 70 प्रतिशत डब्ल्यू.पी. का 2 ग्रा./ली. पानी की दर से छिड़काव करें।



प्याज

प्याज की खेती के लिए पूसा रेड, पूसा रतनार, एन - 53, अर्का निकेतन, अर्का कल्पाणा, एग्रीफाउण्ड डार्क रेड, एन.एच.आर.डी.एफ. रेड - 3 आदि किसमें उपयुक्त हैं। एक हेक्टेयर भूमि के लिए 8-10 कि.ग्रा. बीज पर्याप्त है। रखी मौसम में प्याज की खेती के लिए मध्य अक्षूबर से मध्य नवबर तक का समय बुवाई हेतु उपयुक्त होता है। बुवाई के 40 दिनों बाद तैयार पौध की रोपाई 15×10 से मी. की दूरी पर करते हैं तथा रोपाई के तुरन्त बाद सिंचाई अवश्य करनी चाहिए। अच्छी उपज प्राप्त करने के लिए प्रति हें. 200-250 किलो गोबर खाद एवं लगभग 100 कि.ग्रा. नत्रजन, 60 कि.ग्रा. फास्फोरस व 60 कि.ग्रा. पोटाश का प्रयोग करना चाहिए। फॉस्फोरस व पोटाश की पूरी मात्रा व नाइट्रोजन की एक तिहाई मात्रा को रोपाई के समय व शेष मात्रा को दो किस्तों में देना चाहिए।

पोषण वाटिका

झारखण्ड राज्य के ग्रामीण क्षेत्रों में प्रत्येक परिवार में सभी सदस्यों को पौष्टिक भोजन उपलब्ध कराने हेतु अपने घर के सभी पोषण वाटिका का निर्माण अवश्य किया जाना चाहिए। पोषण वाटिका सामान्यतः प्रचलित किचेन गार्डेन से इस प्रकार भिन्न है कि इसमें विभिन्न मौसमी सब्जियों का समावेश इस प्रकार किया जाता है जिससे प्रत्येक दिन के भोजन में अधिक से अधिक व विभिन्न प्रकार की सब्जी प्राप्त हो सके जिससे शरीर की विभिन्न पोषक तत्वों की आवश्यकता को सहजता से पूर्ण किया जा सके। रखी मौसम की विभिन्न पौष्टिक सब्जियों जैसे - फूलगोभी, पत्तागोभी, ब्रोकली, पालक, गाजर, मूली, मिर्च, टमाटर, शिमला मिर्च आदि के साथ साथ विभिन्न स्थानीय पत्तेदार सब्जियों का भी समावेश पोषण वाटिका में किया जा सकता है। पोषण वाटिका में खाद एवं जैव उर्वरकों का ही प्रयोग करें।

फल वृक्षों की देखभाल

आम

अकट्टबर-नवम्बर माह में नये स्थापित बागों को खरपतवार मुक्त रखने के क्रम में भूमि की जुताई कर देनी चाहिए। नये कोमल पौधों को पाले से बचाने हेतु नियमित अन्तराल पर सिंचाई करते रहना चाहिए। कोमल पौधों को पाले से बचाने हेतु पॉलीथीन शीट या पुआल से भी ढका जा सकता है परन्तु पूर्व दिशा में खुला रखें जिससे पौधों को उचित मात्रा में प्रकाश तथा हवा प्राप्त हो सके। पुराने बागों में प्रत्येक पौधे के थारे में पुआल या प्लास्टिक मल्ट्य का प्रयोग करना चाहिए। यह जल संरक्षण की दृष्टि से बहुत ही महत्वपूर्ण है। आम के एक वर्ष के पौधे के लिए 10 कि.ग्रा. गोबर खाद, 100 ग्रा. नाइट्रोजन, 25 ग्रा. फास्फोरस व 60 ग्रा. पोटाश का प्रयोग करना चाहिए। इसी मात्रा को प्रत्येक वर्ष बढ़ाना है इस प्रकार एक 10 वर्ष पुराने आम के वृक्ष में 100 कि.ग्रा. गोबर खाद, 1000 ग्रा. नाइट्रोजन, 250 ग्रा. फास्फोरस व 600 ग्रा. पोटाश का प्रयोग करना चाहिए। यारहवें वर्ष से इसी मात्रा को प्रति वर्ष पौधों में देना चाहिए। गोबर खाद की पूरी मात्रा व उर्वरकों की आधी मात्रा को फलों की तुड़ाई के बाद शेष आधी मात्रा को सिताम्बर माह में देना चाहिए। मैंगो मालकारमेशन से बचाव हेतु अकट्टबर के पहले पखवाड़े में 200 पी.पी.एम. नेष्टलीन एसिड का छिड़काव करें। अकट्टबर-नवम्बर माह में पौधों में डाइबैक की समर्पा दिखाई देने पर शाखाओं के सूखे भाग को 5-10 से.मी. हरे भाग के साथ काटकर 15 दिनों के अन्तराल पर 3 ग्रा./ली. की दर से कॉपर ऑक्सी क्लोराइड का छिड़काव करें। मिली बग कीट के नियन्त्रण हेतु दिसम्बर माह के अन्त में वृक्षों के तनों पर 400 गेज मोटी 25-30 से.मी. चौड़ी ल्यास्टिक को भूमि से 30-40 से.मी. की ऊंचाई पर दोनों सिरों पर सुतली से बाँध दें एवं पूरी पॉलीथीन पर ग्रीस लगा दें। इससे मिली बग कीट वृक्षों के ऊपरी भाग पर नहीं पहुंच पायेगा। मिलीबग कीट के भूमि में उपचित अण्डों एवं घूपा को नष्ट करने के क्रम में भूमि की जुताई कर देनी चाहिए। दिसम्बर-जनवरी माह में निकली बौर को काटकर हटा दें।



अमरूद

अमरूद के पुराने बागों में पके हुए फलों की तुड़ाई के बाद बाग से खरपतवार निकालकर हटा देना चाहिए। एक वर्ष पुराने पौधे के लिए 10 कि.ग्रा. गोबर खाद के साथ 115 ग्रा. नाइट्रोजन, 60 ग्रा. फॉस्फोरस व 60 ग्रा. पोटाश का प्रयोग करना चाहिए। इसी मात्रा को 5 वर्ष तक बढ़ाते हैं। इस प्रकार पाँच वर्ष पुराने पेड़ में 50 कि.ग्रा. गोबर खाद के साथ 575 ग्रा. नाइट्रोजन, 300 ग्रा. फॉस्फोरस व 300 ग्रा. पोटैशियम का प्रयोग करते हैं एवं इसके बाद प्रति वर्ष इसी मात्रा का प्रयोग किया जाता है। पूरी मात्रा का दो बराबर भागों में बॉटकर क्रमशः जुलाई एवं अक्टूबर में दें। उर्वरकों के बेहतर उपयोग के लिए उन्हें पेड़ के तने से 1 मीटर की दूरी पर 25 से.मी. गहराई में दिया जाना चाहिए। नवबर-दिसंबर में छोटे पौधों को पाते से बचाने की व्यवस्था करनी चाहिए।

लीची

मृदा नमी संरक्षण की वृष्टि से प्रत्येक पौधे के थाले में पलवार या मल्टिंग का प्रयोग करें। पूर्व में यदि बाग की जुताई न हुई हो तो अक्टूबर में बाग की जुताई कर देनी चाहिए। मकड़ी से प्रभावित टहनियों/पंक्तियों को काटकर नष्ट कर दें एवं प्रोपरजाइट 57 ई.सी. का 3.0 मि.ली./ली. की दर से छिड़काव करें। अक्टूबर माह में सामान्यतः पौधों में तांबा की कमी के लक्षण दिखाई देते हैं जिसके नियन्त्रण के क्रम में कॉपर सल्फेट का 2.0 ग्रा./ली. की दर से छिड़काव करें। आवश्यकतानुसार 15 दिनों के अन्तराल पर दूसरा छिड़काव किया जा सकता है। वृक्षों के तनों को कम से कम 1.5 मी. की ऊँचाई तक बोर्डो मिश्रण का लेप बनाकर पुराई करें। बोर्डो मिश्रण बनाने के लिए चूरा, तूतिया व पानी को 1:1:10 भाग में मिलाकर तैयार करें। नवम्बर माह से पुष्पन तक बागों में सिंचाई नहीं करनी चाहिए। दिसम्बर माह में जिंक सल्फेट (33 प्रतिशत) का 2.0 ग्रा./ली. की दर से पेड़ों पर छिड़काव करें। इससे मादा फूलों की संख्या में वृद्धि की सम्भावना बढ़ जाती है। इस माह में पौधों के लिए उपलब्ध पोषक तत्वों की स्थिति जानने के लिए मृदा परीक्षण करवा लें।

स्ट्रॉबेरी

झारखण्ड में ठण्ड के मौसम में स्ट्रॉबेरी की खेती सफलतापूर्वक की जा सकती है। स्ट्रॉबेरी की पौध लगाने के लिए अक्टूबर-नवम्बर का समय सबसे उपयुक्त है। इसकी खेती के लिए स्वीट चार्ली, पजेरो, डगलस, चैप्डलर, कामारोजा, विटर डॉन आदि प्रजातियों का चयन किया जा सकता है। पौधे लगाने के 15-20 दिन पहले भूमि की जुताई कर प्रति एकड़ 10-12 टन कम्पोस्ट, 20 कि.ग्रा. नाइट्रोजन, 15 कि.ग्रा. फॉस्फोरस व 20 कि.ग्रा. पोटाश भूमि में मिलायें। स्ट्रॉबेरी की खेती के लिए 1 मीटर चौड़ी व 20-25 से.मी. ऊँची क्यारियों बनाकर 30-40 से.मी. (कतार से कतार) × 20-25 से.मी. (पौध से पौध) की दूरी पर पौधों की रोपाई करें। स्ट्रॉबेरी की खेती के लिए ड्रिप सिचाई एवं मल्टिंग बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। मल्टिंग के द्वारा ही खरपतवारोंका प्रभावी नियन्त्रण किया जा सकता है। मल्टिंग के लिए धान के पुआल या काली प्लास्टिक मल्ट्य का प्रयोग किया जा सकता है। दिसम्बर-जनवरी में पालों का प्रकोप अधिक होने की दशा में क्यारियों के ऊपर लो पाली टनल सरचना बनाकर ढका जा सकता है। पौध लगने के 45-50 दिनों बाद पुष्पन एवं उसके अगले 20-25 दिनों बाद फलों का पकना प्रारम्भ हो जाता है।



फूलों की देखभाल

गेंदा

ठण्ड के मौसम में अफ्रीकी गेंदा की खेती के लिए पूसा बसन्ती, पूसा नारंगी, पूसा बहार, अर्का अंग्रि, अर्का अलंकार आदि किसों का चुनाव करें। प्रति हेक्टेयर 1.5 कि.ग्रा. बीज की आवश्यकता होती है। अक्टूबर माह में 25-30 दिन पुराने बिचड़े को 45×45 से.मी. की दूरी पर लगायें। फसल को समुचित पोषण प्रदान करने हेतु एक हेक्टेयर क्षेत्रफल के लिए 20-25 टन गोबर खाद के साथ 100 कि.ग्रा. नाइट्रोजन, 60 कि.ग्रा. फास्फोरस, 60 कि.ग्रा. पोटैशियम का प्रयोग करना चाहिए। गेंदा में फूलों की संख्या बढ़ाने के 40 दिनों बाद पिंचिंग अवश्य करें। रोपाई के लगभग दो महीने बाद फूलों की तुड़ाई प्रारम्भ की जाती है। फूलों की तुड़ाई सुबह या शाम के समय करें। लीफ हॉपर या लाल मकड़ी कीट के नियन्त्रण हेतु 2 मि.ली./ली. की दर से मैलाधियान का छिड़काव करें।

ग्लैडियोलस

कट फ्लावर के उत्पादन हेतु ग्लैडियोलस एक महत्वपूर्ण पुष्प है। खुले वातावरण में इसकी खेती हेतु झारखण्ड की जलवायु पूरी तरह से उपयुक्त है। इसके लिए डबल, कैंडीमैन, एट्थ वंडर, अमेरिकन ब्लूटी, जैक्सन, विले गोल्ड, जेर्स्टर, हर मजेरस्टी, व्हाइट प्रास्पेरिटी आदि उत्तर प्रजातियों का चुनाव किया जा सकता है। बाजार माग के अनुसार ही प्रजातियों का चुनाव करें। सामान्यतः सफेद फूलों वाली प्रजातियों की मांग बाजार में अधिक रहती है। अतः कुल क्षेत्रफल के लगभग 60 प्रतिशत भाग में सफेद व शेष 40 प्रतिशत में अन्य रंग की प्रजातियों को चुनाव करें। अच्छे उत्पादन के लिए 4-5 से.मी. आकार के उठे हुए

कार्म का चुनाव करें। प्रति एकड़ 80-100 किटल गोबर खाद, 65-70 कि.ग्रा. नाइट्रोजन, 45-50 कि.ग्रा. फास्फोरस व 45-50 कि.ग्रा. पोटैशियम पर्याप्त है। अक्टूबर माह में रोटेडपोलस के कार्म की 30×20 से.मी. की दूरी पर 6 - 8 से.मी. की गहराई प बुवाई करें। बुवाई पूर्व कार्म को ट्राइकोडर्मा (10 ग्रा./कि.ग्रा. कार्म) से उपचारित अवश्य करें। प्रति एकड़ लगभग 60-70 हजार कार्म की आवश्यकता होती है। लम्बी स्पाइक वाती प्रजातियों बॉस की खपच्ची व सुतली की सहायता से सहारा देने की आवश्यकता होती है। पूरे क्षेत्रफल को कुछ भागों में बॉटकर कुछ दिनों के अन्तराल पर बुवाई करने से उत्पादन अधिक को बढ़ाया जा सकता है।

जरबेरा

जरबेरा की व्यवसायिक खेती के लिए टिश्यू कल्चर तकनीक द्वारा प्रसारित किस्मों जैसे - पिंक एलीगेन्स, रूबी रेड, सुपरनोवा, गोलिएप, इट्स आदि किस्मों का चुनाव किया जा सकता है। इसकी व्यवसायिक खेती नैचुरली वैन्टिलेटेड पॉलीहाउस या शेड नेट हाउस में ही करनी चाहिए। यद्यपि पॉली हाउस की तुलना में शेड नेट हाउस में फूलों की गुणवत्ता में कमी आ जाती है। पॉलीहाउस या नेट हाउस के अन्दर 1 मीटर चौड़ी व 45 से.मी. ऊँची बेड बनाकर 30×30 से.मी. की दूरी पर पौधों की रोपाई करें।

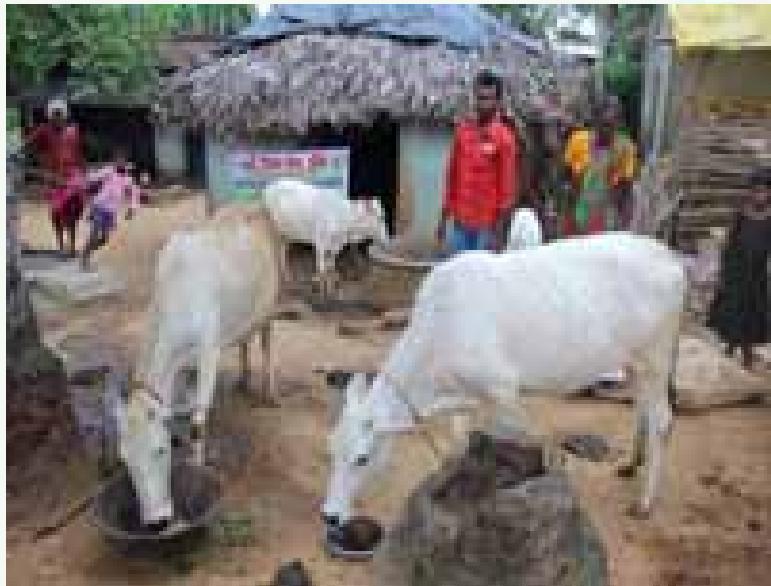
गुलाब

झारखण्ड की जलवायु गुलाब की खेती के लिए बहुत ही उपयुक्त है। हाइब्रिड टी, फ्लोरीबण्डा, मिनीएचर, क्लाइम्बर आदि सभी वर्ग के गुलाबों को यहाँ सफलतापूर्वक खुले वातावरण में उगाया जा सकता है। गुलाब के ग्राफ्टेड पौधों को लगाने का सबसे उचित समय सितम्बर माह के अंत से अक्टूबर के मध्य तक है। पौधे लगाने के लिए हाइब्रिड टी वर्ग के लिए 75 से.मी. व फ्लोरीबण्डा किस्मों के लिए 60 से.मी. की दूरी पर 90 से.मी. व्यास व गहराई के गहड़ खोदें जाते हैं जिसमें 10-15 कि.ग्रा./गहड़ की दर से अच्छी प्रकार सड़ी गोबर खाद एवं 250 ग्रा. बोन मील मिला देते हैं। ग्राफ्टेड पौधों को लगाते समय ध्यान रखते हैं कि ग्राफ्ट सदैव भूमि से ऊपर रहे। पुराने पौधों की प्रूनिंग के लिए भी अक्टूबर का समय उपयुक्त होता है। हाइब्रिड टी वर्ग के पौधों में नीचे से 5-6 अँख छोड़कर प्रूनिंग करनी चाहिए। सूखी रोग ग्रस्त शाखाओं को हटा देना चाहिए। प्रूनिंग के समय घनी शाखाओं को काटकर हटा देना चाहिए। शाखाओं के कटे हुए भाग पर कफूदनाशी का लेप लगा देना चाहिए जिससे डाइबैक की समस्या न हो। नये पौधे तैयार करने के लिए नवम्बर से फरवरी माह के मध्य टी बिंडिंग करनी चाहिए। सरक्षित वातावरण में डच गुलाब की खेती के अन्तर्गत फूलों की तुड़ाई के 7-8 दिन पूर्व बड़ कैप लगा दें। कटाई के तुरन्त बाद उर्वे एक बाल्टी में 5-6 लीटर पानी लेकर उसमें फूलों की डिण्डियों को खड़ा करें। पानी के पी.एच. मान को सन्तुलित (5-5.5) करने के लिए पानी में एल्युमिनियम सल्फेट या साइट्रिक एसिड का प्रयोग करें क्योंकि इससे अधिक पी.एच.की दशा में जीवाणु संक्रमण की संभावना अधिक होती है।

पशुपालन

अक्टूबर

- इस महीने से ही जाड़े के प्रभाव से बचाने के लिए उचित प्रबन्धन की शुरूआत कर देनी चाहिए जिससे की पशुओं के उत्पादन पर कोई प्रभाव न पड़े।
- पशुओं को कृमिनाशक दवा देनी चाहिए।
- पशुपालक भाई इस माह अपने पशुओं (गाय, भैंस, बकरी, सूकर, भेड़) को खुरहा-चपका, गलाघोट, जाँघरेला तथा भेड़ बकरियों की पी.पी. आर. तथा इन्टेरोटॉक्सिमिया का टीका अवश्य अवश्य लगवा दें।
- आवश्यक खनिज लवण तथा विटामिन आहार के साथ अवश्य मिलायें।



- हरे एवं सूखे चारे को उचित अनुपात में मिलाकर खिलायें।
- बरसीम चारा के उत्तर किसी जैसे- वरदान, मसकोवी, बी.एल. - 10 एवं बी.एल. - 22 की बोआई शुरू कर देनी चाहिए।

नवम्बर

- अचानक तापमान में हुए गिरावट के प्रभाव से पशुओं को बचाने के लिए पशु आवास के खिड़की दरवाजों को पुराने जुट के बोरे से या पुआल की चट्टी या अन्य सामग्रियों से ढँक देना चाहिए।
- खुले में चरने जाने वाले जानवरों को भी रात में आवास के अन्दर ही रखें।
- बहुवर्षीय चारा फसलों जैसे व्हाईब्रिड नेपियर, गिनिया, पारा घास इत्यादि की कटाई कर लेनी चाहिए।
- थनैला रोग से बचाव के क्रम में 1 % लाल पोटाश के घोल या पोबीडीन आयोडीन के घोल से धनों को साफ करना चाहिए।
- भेड़, बकरियों में पी.पी.आर. का टीकाकरण अवश्य करा लें।
- नवजात मेमनों, बछड़ों तथा सूक्र छोनों को निमोनिया से बचाने के क्रम में सूखे तथा हवादार स्थान में रखें।
- इस माह के मध्य से जई की बोआई प्रारम्भ की जा सकती है।

दिसम्बर

- दुधारु पशुओं के छिमी, जमंजद्द में होने वाली दरार (ब्लंबापदह) से बचाव के लिए धनों को धोने में हल्के गर्म पानी का इस्तेमाल करना चाहिए तथा दुहाई के बाद वैसलीन या गिल्सरीन का प्रयोग करना चाहिए। सरसों या अन्य तेल का इस्तेमाल करना हानिकारक हो सकता है।
- नियमित रूप से निसंक्रामक (कैपेपदमिबजंदज) तथा कीटनाशक दवाओं का छिड़काव करना चाहिए।
- 40-45 दिनों के बाद बरसीम की तथा 50-55 दिनों के बाद जई की पहली कटाई करनी चाहिए।

- पशुओं की आवश्यकता से अधिक बचे हुए चारों का प्रयोग है बनाने में प्रयोग किया जा सकता है।

जनवरी

- निमोनिया जैसे बीमारियों से बचाव के क्रम में पशु आवास को सूखा, हवादार तथा धूआँ रहित रखना चाहिए।
- दुधारू पशुओं के धनों को साफ करने में तथा बीमार पशुओं के पीने के लिए गुणजुने पानी का इस्तेमाल करना चाहिए।
- संकर नस्लों के दुधारू पशुओं को दिये जाने वाले दाना मिश्रण में खल्ली की मात्रा 10-20 प्रतिशत तथा मिनरल मिक्सर (खनिज मिश्रण) 1 प्रतिशत बढ़ा देना चाहिए।

फरवरी

- सभी उम्र के पशुओं को कृमिनाशक दवा देनी चाहिए।
- बकरी तथा भेड़ों को पी.पी.आर. का टीका लगवायें।



- सूकर छौनों में स्वाईन फीवर का टीका लगवायें।
- पशुओं की आवश्यकता से अधिक बचे हुए चारों का प्रयोग है बनाने में प्रयोग किया जा सकता है।

मत्स्य पालन

कोविड-19 के संदर्भ में नीचे दी गई सलाह में अधिकतम लाभ और पोषण सुरक्षा के बाद निरंतर उत्पादन क्षमता प्राप्त करने के लिए रबी मौसम के दौरान किसानों द्वारा पालन की जाने वाली मत्स्य पालन से संबंधित सर्वोत्तम प्रबंधन प्रथाओं को शामिल किया गया है।

मछली पालन के दिशा-निर्देशः

स्टॉकिंग के पुर्व प्रबंधन

- किसान इस अवधि के दौरान नए मछली तालाबों का निर्माण कर सकते हैं। आमतौर पर दोमट मिट्टी के आयताकार तालाब 1.5-2.5 मीटर गहराई और 20:1 के छलान अनुपात वाले आर्द्ध माने जाते हैं।
- सर्दियों के दौरान तालाब की गरम निचली परत में मछलीयों के लिए जगह उपलब्ध कराने के लिए 6-7 फीट, यानि 2 मीटर ढूंढ तक पानी की गहराई बनाए रखें।



- रबी के मौसम में प्रकाश संब्लेषक गतिविधि में उत्तर चढ़ाव, दिन कि लम्बाई में कमी और प्रकाश की तीव्रता के कारण ऑक्सीजन का स्तर कम हो जाता है। इसलिए, घुलित ऑक्सीजन के स्तर को 6.5-8 मिलिग्राम/लीटर के भीतर बनाए रखने के लिए यह सलाह दी जाती है, कि तालाबों को जलवाहक से या सबर्मसिर्बल पम्प का उपयोग करके पानी का आदान-प्रदान करें।
- नियमित समय अंतराल पर मेनुअल और यांत्रिक विधि से अवांछित खरपतवरों और जलीय कीड़ों का उन्मुलन करें।
- मिट्टी और पानी की गुणवत्ता के मानकों के अनुसार जैविक और अकार्बानिक उर्वरक खुराक प्रदान कि जानी चाहिए। यदि पानी मैला या गहरे रंग का हो जाए और पारदर्शिता कम हो जाए तो निषेचन बंद करें।

स्टॉकिंग के प्रबंधन

- हमेशा प्रमाणित या प्रसिद्ध हैचरी से अच्छी गुणवत्ता का बीज खरीदें।
- प्लास्टिक बैग के मुँह को ढीला करके मछलीयों को कंडीशन करें और 15-20 मिनट के बाद बैग को धीरे-धीरे मुक्त बहने के लिए डुबोएं।
- मछलीयों के अधिक भण्डारण से बचें। इष्टतम स्टॉकिंग घनत्व प्रति हेक्टेयर 7500-8000 अंगुलिकाएं के बीच होता है।

- अनुशसित स्टॉकिंग दरों पर विभिन्न मछली प्रजातियों की मिश्रित मछली पालन को प्रोत्साहित करें। आमतौर पर बिहार में छह (6) प्रजाति की कार्प मछली पालन सबसे अधिक अपनाई जाती है- जिसमें कतला, रोहू, मृगल , सिलवर कार्प, कॉमन कार्प, ग्रास कार्प, 1.5:2:1.5:1.5:1.5:2 के अनुपात में शामिल है।
- मछली तालाब में छोटी देशी मछलियाँ जैसे- पोठिया, मोला , मुखरई आदि डाले। जैसा कि अनुमान है कि 1 किलो छोटी देशी मछलियों में अन्य बड़े आकार की मछलियों की तुलना में 1000 गुना अधिक विटामिन सामग्री होती है।
- मीठेपानी की मछली पालन के लिए उम्मीदवार प्रजातियों में विविधता लाएं-अमूर कार्प, जंयंती रोहू, पाकु, मोनो सेक्स तिलायिया, पुण्यियस गोनियोटस, बिगहेड कार्प, मागुर, पबदा, झींगा आदि।
- मौसमी तालाबों में पोस्ट लार्व से वयस्क झींगे उताने कम लिए कम लागत और स्थानीय रूप से उपलब्ध सामग्री से पॉलीहाउस का निर्माण करें। पॉलीहाउस ठंड के मोसम में तापमान बनाए रखने में मदद करता है।

स्टॉकिंग के पश्चात प्रबंधन

- 6.5-7.5 के भीतर पानी का पी.एच. बनाए रखें। यदि पी.एच. के स्तर कम होता है तो चूने का प्रयोग करें और अगर यह इष्टतम स्तर से अधिक उच्च अंत में होता है तो जिप्सम का प्रयोग करें।
- पुराने तालाबों में जहरीली गैसों के संचयन को रोकने के लिए निचरी मिट्टी की आवधिक रेकिंग आवश्यक है।
- जब तापमान 10° सेंटीग्रेड तक पिर जाए तो मछलियों को चारा देना बंद कर दें।
- आमतौर पर, मछली का विकास मध्य नवंबर से फरवरी तक कम चयापचय दर के कारण कम हो जाती है और तापमान बढ़ने पर वापस विकास होना शुरू हो जाती है।
- 15 दिनों के भीतर एक बार तालाब में जाल लगा कर मछलियों की निगरानी करें और पोटेशियम परमैग्नेट के घोल का उपयोग करके सान उपचार प्रदान करें।
- जब भी किसी मछली में असामान्य व्यवहार देखा जाता है, तो उन पर काबू पाने के लिए तत्काल एहतियाती उपायों का उपयोग करें। जैसे जब भी मछलियाँ सतह के पानी के पास आती हैं और अपना मुँह खोल के सास लेती हैं, तो इसका मतलब है कि तालाब के पानी में ऑक्सीजन का स्तर कम हो गया इसलिए तालाब में वायु-प्रसार करना आवश्यक है।
- मछलियाँ में बैक्टीरिया, कवक, परजीवी और वायरल जैसे सामान्य रोग यानी टेल या फिन रोट, ड्रॉप्सी, गिल फ्लूक और ई.यू.एस आदि के लिए अधिक प्रवण होती हैं। इसलिए, मछलियों के उपचार के लिए तत्काल उपायों की आवश्यकता है। सर्दियों की शुरूआत से ठिक पहले तालाब को सीफैक्स / 1 लीटर प्रति हेक्टेयर से उपचारित करने की सलाह दी जाती है। इसके अलावा, पोटेशियम परमैग्नेट / 3-5 किंवा 10ग्रा० / हेक्टेयर या लाइमस्टोन / 150-200 किंवा 10ग्रा० / हेक्टेयर प्रयोग करें। नमक के घोल को / 250 किंवा 10ग्रा० / हेक्टेयर की दर से तालाब में भी उपचारित किया जा सकता है जो सर्दियों के दौरान मछली को बीमारी के प्रकोप से बचाने में फायदेमंद साबित होता है।

मत्स्य आधारित एकीकृत कृषि प्रणाली:

- वर्ष भर आय सूजन के लिए बिहार में सभी उपलब्ध विकल्पों में बागवानी-बत्तख आधारित मछली पालन को सबसे अच्छा मॉडल माना जाता है।
- बत्तखों का स्टॉकिंग घनत्व- 200-300 प्रति हेक्टेयर, खाद का उत्पादन करने के लिए पर्याप्त है और मछली तालाबों के लिए जैव-जलवाहक के रूप में भी काम करता है।

बायोफ्लोक प्रणाली में मछली पालन:

- जिन किसानों के पास तालाब के लिए जमीन नहीं है, उनके लिए यह नई तकनीक महत्वपूर्ण साबित हो सकता है।
- मछली पालन की न्यूनतम या शून्य जल विनियम प्रणाली इस प्रकार अपशिष्ट जल का उपयोग करती है। इसलिए प्रौद्योगिकी पुर्वचक्रण द्वारा काफी हद तक पानी की बचत हो जाती है।

- इस कृषि प्रणाली के लिए उपयुक्त प्रजातियाँ-पंगास, मागुर, कवाई, तिलापिया और कॉमन कार्प हैं। इस तकनीक के लिए 4 मीटर व्यास और 1.5 मीटर उचाई के कम से कम 7 टैक की आवश्यकता होती है जो की 7 से 8 लाख की लागत किसानों के लग जाते हैं।
- इस तकनीक में प्रमुख बाधा 24ग7 बिजली कनेक्शन है।

बड़े जलाशयों में केज कल्चर:

- मछली उत्पादन क्षमता का दोहन करने के लिए एक महत्वपूर्ण जल संसाधन (बिहार का चौर और मौन)।
- केज कल्चर को उन स्थानों पर बढ़ावा दिया जा सकता है, जहाँ साल भर में 10 मीटर पानी की गहराई होती है, जिसमें 1000 हेक्टेयर या अधिक पानी फैला हुआ क्षेत्र होता है।

मछलीयों की निकासी:

- मछली पकरने के लिए उपयोग किए जाने वाले नॉव को साबुन के घोल से धोया जाना चाहिए और उसके बाद 10: सोडियम हाइपोक्लोराइट घोल से 5 मिनट का डिप ट्रीटमेंट के बाद सुखने के लिए छोर देना चाहिए।
- मछली पकड़ने में शामिल जालों को हर उपयोग के बाद कीटाणुनाशें आक या घर में बने नीम के घोल से उपचारित करना चाहिए।
- नॉव संचालन के दौरान मीठे जल निकायों में मछली पकड़ने के लिए अधिकतम 2 व्यक्तियों की अनुमति होगी।
- किसी दिए गए क्षेत्र में चलने वाली स्वदेशी नॉवों को मछली पकड़ने के दौरान 3 मीटर सुरक्षित दुरी बनाए रखने के नियमों का पालन करना होगा।

विषयन और परिवहन दिशानिर्देश:

- मछली लैंडिंग केन्द्रों को ब्लीचिंग पाउडर (कैल्बियम हाइपोक्लोराइट) या सोडियम हाइपोक्लोराइट का उपयोग करके साफ किया जा सकता है।
- अनावश्यक सभाओं से बचने के लिए मछली नीलामी बिंदु या पुरे विक्रेता बाजार का समय सीमित किया जा सकता है।
- अंतर्राज्यीय परिवहन के लिए प्रवेश बिंदु पर इंसुलेटेड/रेफ्रिजरेटेड ट्रकों को सैनिटाइज करें।
- छोटे आकर के परिवहन वाहनों को दैनिक आधार पर धोए और सॉफ करें।
- मत्स्य बधु-डॉ० राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पुसा द्वारा डिजाइन किया गया एक सौर आधारित मोबाइल रेफ्रिजरेटेड वाहन, मछली खुदरा विक्रेताओं के लिए देर से बिक्री से बचने के लिए अपनाएं। वाहन पर्यावरण के अनुकूल है और आसानी से घर के दरवाजे पर स्वच्छ तरीके से मछलियों को बेचने के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है।

Zone-V

পশ্চিমী বংগাল (বংগালী)

WEST BENGAL (BENGALI)

রবফিসলরে চাষরে পরামর্শ

পশ্চিমী বঙ্গ

বোরো ধান

- সেচ সেবিত এলাকায় শীতকালীন ধানের ফলন বৃদ্ধি করতে শতাব্দী ডবলু. জি. এল- ২০৪৭১, রাজেন্দ্র ভগবতী, শ্রেয়া ইত্যাদি জাতের ধান চাষ করতে হবে।
- বোরো ধান চাষের জন্য উচ্চফলনশীল জাত যেমন আই.ই.টি-৪৭৮৬ (শতাব্দী), ললাট, ডাবলিউ জি.এল- ২০৪৭১ (লাল মিনিকিট), আই.আর-৩৬, সি.আর-১২৬-৪২-১, আই.ই.টি-১৪৮৮, আই.ই.টি-২২৩৩, আই.ই.টি- ৪০৯৪ (ফিল্টিশ) চাষ করা যাবে।
- নীচু জমি বা মাঝারী লবণাক্ত জমির জন্য উচ্চফলনশীল জাত যেমন রাজেন্দ্র ভগবতী, দুধেষ্ঠর জাতের চাষ করা যেতে পারে।
- বীজতলা তৈরি (১-১৫ই ডিসেম্বর) এবং রোপণ (১৫-৩০শে জানুয়ারী) একেবারে সময় মেনে করতে হবে যাতে উচ্চ ফলন পাওয়া যায় ও কম জলে চাষ করা যায়। রোপণের কাজ চারার বয়স ৪০ থেকে ৪৫ দিনের মধ্যেই সেরে ফেলতে হবে।
- ৫৪.২৫ কেজি নিম কোটেড ইউরিয়া, ৩১.২.৫ কেজি সিঙ্গল সুপার ফসফেট ও ৬৩ কেজি মিউরেট অফ পটাশ সার প্রতি হেক্টেরে মূল সার হিসাবে প্রয়োগ করতে হবে। পাশ কাঠি ছাড়ার সময় প্রথম চাপান হিসাবে ১০৮.৫ কেজি নিম কোটেড ইউরিয়া সার প্রতি হেক্টেরে এবং শীর্ষ শুরু হওয়ার সময় দ্বিতীয় চাপান হিসাবে ৫৪.২৫ কেজি নিম কোটেড ইউরিয়া প্রতি হেক্টেরে প্রয়োগ করতে হবে।
- রোপণের আগে প্রতি কেজি ধানের বীজ ম্যানকোজের ৪ কারবেনডাজিম প্রতিটি ২ গ্রাম বা ট্রাইকোডার্ম ভিলিডি ১০ গ্রাম ১০ -১২ মিলিলিটার জলে শিশিরে শোধন করে নিতে হবে।
- এছাড়া লবনাক্ত জমিতে শীতকালীন ধান চাষের জন্যে মোহন (সি. এস. আর- ৪), সি. এস. আর- ৩৬, ৪৩ ও ৪৬, গোসাবা- ৫ এবং ৬ জাতের ধান চাষ করতে হবে।
- জমির লবনাক্ততা কমাতে ৪ মাটির উর্বরতা বৃদ্ধি করতে প্রতি হেক্টেরে ৭ থেকে ৮ টন পচা গোবরের সার / এফ. অয়াই. এম. অথবা ১.৫ - ২ টন কেঁচো সার জামি তৈরি করার সময় প্রয়োগ করতে হবে। নতুনা সরুজ সারের চাষ করতে হবে।
- বাদামী শোষক পোকার উপদ্রব কমাতে skip row পদ্ধতিতে ধানের রোপণ করতে হবে।
- মাটির পরীক্ষার ভিত্তিতে সারের ব্যবহার ও নাইট্রোজেন ঘাটিত সারের পরিমাণ এবং এর ক্ষতিকর প্রভাব কমাতে এল. সি. সি. কার্ড ব্যবহার করতে হবে।

- ফসলের উৎপাদন বৃদ্ধি করতে হেক্টের প্রতি ১৫- ২০ কেজি জিঙ্ক মনোহাইড্রেট (৩৩%) জমি তৈরি করার সময় ব্যবহার করতে হবে।

ভুট্টার(রবি)

- ভুট্টার চাষ করতে হলে উন্নত জাত যেমন পি-৩৩৯৬, ডেকান-১০৩, ডেকান-১০৫, পি-৩৫৪৬, পি-৩৫২২, রাজকুমার, অলরাউণ্ডা, ৯০০ এম গোল্ড, পিএলি-৭৪০ ইত্যাদি জমিতে বীজ ফেলতে হবে।
- বেশি ফলমের জন্য গাছ থেকে গাছের দূরত্ব ৬০ সেন্টিমিটার এবং সারি থেকে সারির দূরত্ব ৩০ সেন্টিমিটার রাখতে হবে।
- ভালো ফলন পাওয়ার জন্য প্রতি বর্গ মিটার জমিতে গাছের সংখ্যা ৭ টি হবে।
- উচু বেড ও নালা (বিজ ও ফারো) পদ্ধতিতে ভুট্টার চাষ করলে নোনা জমিতেও ভালো ফলন পাওয়া যায়।
- জমিতে বীজ ফেলার প্রতি ১০ দিন আগে ৫ টন তৈরি সার প্রয়োগ করতে হবে। এরপর মূল সার হিসাবে হেক্টের প্রতি ১৭৪ কেজি ইউরিয়া, ৩৭৫ কেজি সিঙ্গল সুপার ফসফেট ও ১২০ কেজি মিউরিয়েট অফ পটাশ ও ২৫ কেজি জিঙ্ক সালফেট সার প্রয়োগ করতে হবে। পরবর্তীতে চাপান সার হিসাবে দুই বারে ইউরিয়া সার প্রয়োগ করতে হবে। গাছের ইটি সমান উচ্চতার সময় ১৩০ কেজি ইউরিয়া ও ভুট্টার মাথায় রেঁয়া বা চুল আসার সময় (ট্যাসেল) ১৩০ কেজি ইউরিয়া প্রয়োগ করতে হবে।

মুসুর

- মুসুরের চাষ করতে হলে জমি থেকে খারিফ ধান কাটার ৭-১০ দিন আগে মুসুরের বীজডাবলিউ বি.এল-৭৭ (মেগ্রী), এল-৮৪১৭ (পুরা আগেতি), কে.এল.এস-০৯-৩, পি.এল-৮, আই.পি.এল-৩১৬ ইত্যাদি জমিতে হেক্টের প্রতি ৩০ কেজি হারে ছিটিয়ে দিতে হবে।
- একমাত্র মুসুরের চাষ করতে হলে বীজ বপনের কাজ নভেম্বর মাসের মধ্যে করতে হবে।
- জমি তৈরির সময় হেক্টের প্রতি ২৫০ কেজি সিঙ্গল সুপার ফসফেট ও ৩৫ কেজি মিউরিয়েট অফ পটাশ সার প্রয়োগ করতে হবে।
- প্রয়োজন হলে ফুল আসার ঠিক আগে হাস্কা একটা সেচ দেওয়া যেতে পারে।
- ফুল আসার আগে এবং পরে দুই বার বোরন স্প্রে (০.২ % হারে) করলে ভালো ফোলন পাওয়া যায়।
- ফুল আসার সময় ডি. এ.পি. বা ইউরিয়া সারের ২ % দ্রবণ স্প্রে করলে গাছের বৃদ্ধি ভালো হয়।

খেসারী

- খেসারীর চাষ করতে হলে জমি থেকে খারিফ ধান কাটার ৭-১০ দিন আগে বি-৯, টি.বি.এম ১৪৩ জাতের বীজ জমিতে ছিটিয়ে দিতে হবে।
- বীজ বপনের কাজ অক্টোবরের তৃতীয় সপ্তাহ থেকে নভেম্বরের দ্বিতীয় সপ্তাহের মধ্যে করতে হবে।
- উপযুক্ত জাত যেমন নির্মল, রতন, প্রতীক, বিধান খেসারী -১ ইত্যাদি হেক্টেরে ৬০ কেজি হারে জমিতে ফেলা যেতে পারে।
- ধান জমির আর্দ্ধতা ও পুষ্টি খেসারী চাষের জন্য যথেষ্ট, তাই কোন সারের প্রয়োগ করতে হয় না।।।
- গাছে ফুল আসার আগে ও পরে গাছে ০.২ % হারে বোরনের স্প্রে করতে হবে।

- ফুল আসার সময় ডি. এ. পি. বা ইউরিয়া সারের ২ % দ্বন্দ্ব করলে গাছের বৃদ্ধি ভালো হবে।

সরিষা

- সরিষার চাষ করতে হলে বীজ বপনের কাজ অক্টোবরের তৃতীয় সপ্তাহ থেকে নভেম্বরের দ্বিতীয় সপ্তাহের মধ্যে করতে হবে।
- উপযুক্ত জাত যেমন বিনয়, বরুণ, পূষা বোল্ড, ক্রান্তি, ভাগীরথী, পি.এম-২-৩, পি.এম-৯৯-১২৫, পি.এম-৫, পি.এম-২৮, পি.এম-৩০, ওয়াই.এস.এইচ-০৮০১, এন.আর.সি.এইচ.বি-১০১, টি.বি.এম-২০৮ ইত্যাদি ব্যবহার করা যেতে পারে।
- পায়ারা পদ্ধতিতে চাষের জন্য জমি থেকে খারিফ ধান কাটার ১০-১২ দিন আগেই সরিষার জাত যেমন বি-৯, টি.বি.এম-১৪৩ ইত্যাদি জমিতে ছিটিয়ে দিতে হবে।
- বীজ ফেলার ৪ ঘণ্টা আগে বীজেক কারবে শুজিম ব্যাভিস্টিন (২.৫ গ্রাম প্রতি কেজি বীজের জন্য) দিয়ে শোধন করতে হবে। জৈব পদ্ধতিতে ট্রাইকোডারমা ভিরিডি (৫ গ্রাম প্রতি কেজি বীজের জন্য) দিয়ে বীজ শোধন করা যেতে পারে।
- সরিষার চাষ সারিতে (২০ সেমি.- ২৫ সেমি. * ১০ সেমি.) করলে উৎপাদন বেশি পাওয়া যাবে।
- জমিতে বীজ ফেলার ৮-১০ দিন আগে প্রতি হেক্টারে ৩ টন জৈব সার প্রয়োগ করতে হবে। এরপর মুল সার হেক্টার প্রতি ৪৩৫ কেজি ইউরিয়া ও সিঙ্গেল সুপার ফসফট ২৫০ কেজি, মেটারিয়েত অফ পটাস সার ৬৭ কেজি প্রয়োগ করতে হবে। পরবর্তীতে চাপান সার হিসাবে দুই বারে ইউরিয়া সার প্রয়োগ করতে হবে – শাখা ডাল বেরোনোর সময় ৮৭ কেজি ইউরিয়া ও ফুল আসার সময় ৪৩.৫ কেজি ইউরিয়া প্রয়োগ করতে হবে।
- শাখা ডাল আসার সময় এবং গাছে ফুল আসার সময় দুই বার সেচ দিতে হবে।
- মাটিতে সালফার কম থাকলে হেক্টার প্রতি ৪৫ কেজি সালফার প্রয়োগ করতে হবে।

গ্রীষ্মকালীন মুগ:

- গ্রীষ্মকালীন মুগের ফলন ও আয় বাড়াতে হলুদ মোজাইক ভাইরাস রোগ প্রতিরোধী জাত যেমন আই.পি. এম. - ২০৫-৭ বা আই.পি. এম. ০২-১৪ চাষ করতে হবে।
- অধিক ফলনের জন্যে বীজ বপনের আগে অবশ্যই রাইজোবিয়াম, পি. এস. বি. ও কে. এস. বি. প্রত্যেকটি হেক্টার প্রতি ১.৫ কেজি দিয়ে বীজশোধন করতে হবে।
- ফসলের উৎপাদন বৃদ্ধিতে অনুখাদ্য (মলিবডনাম) প্রতি লিটার জলে ০.৫ গ্রাম হারে ১৫ দিন অন্তর দু বার ফুল আসার সময় প্রয়োগ করতে হবে।

সূর্যমুখী:

- শীত ও গ্রীষ্মকালে তৈলবীজ হিসেবে সূর্যমুখী জাত যেমন এল. এফ. এস. এইচ. -১৭১, কে. বি. এস. এইচ. -৫৩ ও ৭৮ দুই তিনটি সেচ দিয়ে চাষ করতে হবে।
- মাটির উর্বরতা বৃদ্ধি করতে প্রতি হেক্টারে ৭ খেকে আট টন পচা গোবর সার / এফ. অয়াই. এম. অথবা প্রতি হেক্টারে ২ টন কেচো সার জমি তৈরি করার সময় প্রয়োগ করতে হবে
- প্রতি হেক্টারে ৯০: ৯০: ৮০ কেজি এন. পি. কে. রাসায়নিক সার হিসেবে ব্যবহৃত করতে হবে

- ভালো পুষ্ট দানা পেতে ও ফলন বৃদ্ধি করতে অনুরাধ্য যথা বোরন 2 গ্রাম প্রতি লিটার জলে কুঁড়ি আসার সময় ও ফুল ফেচটার সময় দূবার প্রয়োগ করতে হবে।

তুলা:

- সুন্দরবন এলাকায় অলবণাক্ত এবং লবণাক্ত জমিতে শীত ও গ্রীষ্মকালে দু-তিমটি সেচের দ্বারা কাপাস তুলা চাষ করা যেতে পারে।
- ছত্রাকন্যাশক দ্বারা বীজ শোধন করে অঙ্গুরিত বীজ সরাসরি জমিতে ৪৫ সেমি থেকে ৩০ সেমি দূরত্বে বপন করতে হবে।
- ১৫ ই ডিসেম্বর থেকে ১৫ ই জানুয়ারির মধ্যে অবশ্যই বীজ বপন করা দরকার।
- প্রতি হেক্টারে ৮০:৪০:৩০ কেজি এনপিকে রাসায়নিক সার ব্যবহার করতে হবে।
- বপনের ৩০ থেকে ৪০ দিনের মধ্যে একবার গাছ পাতলা করা ও গাছের গোড়ায় মাটি দিয়ে নালার মত করে দিতে হবে।
- বল ওয়ার্ম পোকা দমনে ইন্সুল্যাকার ১৪.৫% এস.সি. প্রতি হেক্টারে ৩৬০ মিলি অথবা রিনাক্সিপির ১৮.৫% এস.সি. ১৫০ মিলি প্রতি হেক্টারে ১৫ দিন অন্তর প্রয়োগ করতে হবে।
- গাছ থেকে তুলা তোলার পর ভালোভাবে বন্ধ না করে চট্টের বস্তায় রাখতে হবে।

খেসারী:

- ডাল জাতীয় ফসলের এলাকা বৃদ্ধি করতে পয়সা ফসল হিসাবে খেসারী চাষ করতে হবে।
- এক্ষেত্রে নভেম্বর মাসের প্রথমদিকে ধানের শীষ আসার সময় অল্প জলযুক্ত কাদা জমিতে হেক্টার প্রতি ৪৫ থেকে ৫০কেজি খেসারী বীজ বপন করতে হবে।
- ভালো ফলন পেতে রত্ন, বি-১, পুশা-২৪, প্রতীক, মহা তেউড়া প্রচুর জাতের বীজ চাষ করা দরকার।
- ফসলের ফলন বৃদ্ধিতে দু-তিমবার নাইট্রোজেন সার (ইউরিয়া) ২% হারে ফুল আসার আগে ও পরে স্প্রে করতে হবে।
- ঝুঁটিছিদ্রকারী পোকা দমনে ইন্সুল্যাকার ১৪.৫% এস. সি. প্রতি হেক্টারে ৩৬০ মিলি অথবা রিনাক্সিপির ১৮.৫% এস.সি প্রতি হেক্টারে ১৫০ মিলি ১৫ দিন অন্তর দূবার প্রয়োগ করতে হবে।

উদ্যান ফসলের জন্য পরামর্শ

সবজি ফসল:

- আগামী রবি মরসুমে সবজি ফসল হিসাবে আল বাঁধে চাষের জন্য টমেটো, লক্ষা, উচ্চে, ফ্রেঞ্চবিন, সিম এবং উঁচু জমির জন্য বাঁধাকপি, ফুলকপি, ওলকপি, ব্রাকেলি, বীট, গাজর, মূলা বেছে নেওয়া উচিত।
- ইয়াস ঘূর্ণিষাঢ়ে নোনা জলে প্লাবিত এলাকার জন্য মাটির লবণাক্ততা অনুসারে নিম্নলিখিত সবজিগুলো চাষ করা উচিত হবে- উচ্চে, চাল কুমড়ো, বীট, টমেটো, বাঁধাকপি, ফুলকপি, ওলকপি, সিম ও পালং।
- সিম লম্বা সময়ের ফসল হিসেবে খুব ভালো ফসল। জৈষ্ঠ আষাঢ় মাসে লাগিয়ে আশ্বিন থেকে ফাল্গুন মাস অবধি ফসল তোলা যায়।

- প্রতিটি ফসলের ক্ষেত্রেই সাইকোসেল (৫০ পিপি.এম) দিয়ে আট ঘন্টার জন্য বা ১৩:০:৮৫ সারের ১% দ্রবণ দিয়ে ১২ ঘন্টার জন্য বীজ শোধন করে নিলে বীজের আঙুরোদগমের হার, চারার সবলতা এবং গাছের প্রতিরোধ ক্ষমতা বৃদ্ধি পায়।
- চাষে লাভ বাড়াতে চাষের খরচ কমানো জরুরী। ঘরে তৈরি জৈব সার ও জৈব কীটনাশক (নিম নির্যাস, ট্রাইকোডার্মা) ব্যবহার করলে চাষের খরচ কমার সাথে সাথে গাছের বৃদ্ধি ও ফলন ভালো পাওয়া যাবে।
- শক্ত, সবল ও প্রতিরোধ ক্ষমতাযুক্ত সুস্থ গাছ পেতে সবজি চাষে কাঠায় এক কুইন্টাল হিসাবে ঘরে তৈরি জৈব সার ব্যবহার করতে হবে, সাথে রাসায়নিক সারের ব্যবহার করাতে হবে।
- মাটি তৈরির পূর্বে কাঠায় দু কেজি হিসাবে চুন প্রয়োগ করলে মাটির ক্ষতিকারক জীবাণু নাশ হয়, মাটির পিএইচ সাম্যতা বজায় থাকে এবং মাটি ক্যালসিয়াম সমৃদ্ধ হয়।
- রবি সবজির চারা তৈরিতে শক্ত ও সবল চারা পেতে ১২ থেকে ১৫ দিনের চারাতে ১২:৬১:০ সার ৩ গ্রাম প্রতি লিটার হিসাবে স্পে করতে হবে। সত দশ দিন পর আর একবার প্রয়োগ করতে হবে।
- চারা বসানোর পর এই একই সার (১২:৬১:০ সার ৩ গ্রাম প্রতি লিটার) এর জলীয় দ্রবণ গাছের গোড়ায় দু-তিনদিন অন্তর দিলে শিকড়ের গোড়ায় দু-তিনদিন অন্তর দিলে শিকড়টেরে ৭ থেকে এহচার সময় প্রয়োগ করতে হবে হার করতে হবে।
বৃদ্ধি ভালো হয় ও চারা তাড়াতাড়ি বেড়ে ওঠে
- সবজির ভালো বৃদ্ধির জন্য নিয়মিত সাত থেকে দশ দিন অন্তর জলে গোলা সার ১৯:১৯:১৯ বা ২০:২০:২০ (৩ থেকে ৫ গ্রাম প্রতি লিটার) স্পে করা যেতে পারে।
- সবজিতে অনুখাদ্য - এর চাহিদা বেশী। ভাল ফলনের জন্য grade-5 মিশ্র অনুখাদ্য ১.৫ থেকে ২ গ্রাম প্রতি লিটার হিসাবে ১৫ থেকে ২০ দিন অন্তর স্পে করা যেতে পারে।
- গাছের ফলন- এর মাঝামাঝি সময়ে গাছকে পুনরুজ্জীবিত করে ফলন বাড়াতে জলে গোলা সার ১৩:০:৮৫ (৩ থেকে ৫ গ্রাম প্রতি লিটার জল) ১৫ থেকে ২০ দিন অন্তর ব্যবহার করা যেতে পারে।
- উচ্চ শসা ইত্যাদি কুমড়ো গোট্টীয় ফসলে স্লী ফুলের সংখ্যা বাড়িয়ে ফলন বাড়াতে লাল রঙের ওষুধ ইঞ্চেল (০.৪ মিলি প্রতি লিটার) দুই ও চার পাতার চারাতে দুইবার স্পে করলে ভালো ফল পাওয়া যায়।
- লক্ষ্য, টমেটো, ব্রাকোলি, সিম ইত্যাদিতে ফুলের বারা কমিয়ে ফলন বাড়াতে ঘুরিয়ে-ফিরিয়ে ১০ থেকে ১২ দিন অন্তর ব্যবহার করতে হবে বোরন পাউডার ১.৫ গ্রাম প্রতি লিটার, ১০ থেকে ১২ দিন বাদে প্ল্যানোফিল্ম ২ মিলি প্রতি ১০ লিটার।

আম পেয়ারা ও লিচু:

- এই ফলগুলোর ফুল ও ফল ঝারা কমাতে ১০ থেকে ১২ দিন অন্তর প্ল্যানোফিল্ম ০.৩ মিলি প্রতি লিটার হিসেবে স্পে করলে উপকার পাওয়া যায়।
- ফলের ভালো বৃদ্ধির জন্য ১৫ দিন অন্তর মিরাকুলান ০.৫ মিলি প্রতি লিটার স্পে করা যেতে পারে।
- গাছের গোড়ায় রস ধরে রাখা জরুরি। এই জন্য খড় বা ঘাস পাতা দিয়ে গাছের গোড়ায় মালচিং করা খুব ভালো একটি পদ্ধতি।
- গাছে প্রয়োজনীয় সার এর ১/৩ অংশ করে অক্ষোবর ও ফেব্রুরিয়ারি মাসে গাছের গোড়ায় (ক্যানোপি এলাকায়) প্রয়োগ করতে হবে।

- লিচুতে ফালগুন মাসের শেষ সপ্তাহ থেকে গাছের গোড়ায় নিয়মিত সেচ, মালচিং ও গাছের উপর জল স্প্রে করলে ফল ফাটা প্রতিরোধ করা যায়।
- পেয়ারাতে ফলগুলোকে প্লাস্টিক মুদে রাখতে পারলে যেমন মছির আক্রমণ প্রতিহত করা যায়, তেমনি ফলের চেহারা ভালো হয়। প্লাস্টিক প্যাকেটের ডিতরে সূর্যের আলো প্রতিহত করতে এক টুকরো কাগজ ব্যবহার করা দরকার।
- পেয়ারাতে নাইট্রোজেন সার হিসেবে ইউরিয়ার পরিবর্তে অ্যামোনিয়াম সালফেট ব্যবহার করলে ফলের রং ও স্বাদ ভালো হয়।
- জল ঘোলা সার ১৯:১৯ বা ২০:২০:২০ ৩ থেকে ৫ গ্রাম প্রতি লিটার সাথে মিশ্র অনুধাদ্য ১.৫ থেকে ২ গ্রাম প্রতি লিটার হিসাবে ১০ থেকে ১২ দিন অন্তর সমগ্র গাছে স্প্রে করলে ফলের বৃক্ষি ভালো হয়।

পান:

- শীতে গাছকে ঠাণ্ডা থেকে বাঁচাতে বরজের উত্তর ও পশ্চিম দিকে প্লাস্টিক দিয়ে ধিরে দিতে হবে।
- বরজের ছাদ ৭৫% শেড নেট দিয়ে তৈরি করলে বরজ- এর মধ্যে কুয়শা কম চুকবে এবং হেমচিতি কম হবে
- শীতে ইউরিয়া বা অন্য নাইট্রোজেন সার বেশি ব্যবহার করা যাবে না, করলে গাছের শীতজনিত সমস্যা বেশি হবে।
- যত বেশি সন্তুষ্ট জৈব সারের উপর নির্ভর করতে হবে।
- সমগ্র গাছ ৭ থেকে ১০ দিন অন্তর ১৩:০:৪৫ সার (৩ গ্রাম প্রতি লিটার) স্প্রে করলে গাছের নিজৰ প্রতিরোধ ক্ষমতা বাড়বে।

পশু এবং পোলাত্তি:

- অস্থায়ী আবাসে পালিত পশুদের ঠাণ্ডা থেকে রক্ষা করার জন্য নজর রাখতে হবে।
- সদ্যজাতকে নিউমোনিয়া ও ডায়ারিয়ার প্রকোপ থেকে রক্ষা করতে অতিরিক্ত তাপের ব্যবস্থা করুন।
- গোয়াল ঘর পরিষ্কার রাখুন এবং বায়ু চলাচল বজায় রাখার ব্যবস্থা করুন।
- গোয়াল ঘর শুকনো ভাবে পরিষ্কার রাখুন।
- দিনের বেলায় পর্যাপ্ত পরিমাণ সূর্যের আলোর ব্যবস্থা করুন।
- পশুদের ঠাণ্ডা থেকে রক্ষা করার জন্য অতিরিক্ত তাপ ও খড়ের বিছানার ব্যবস্থা করুন।
- ট্রুট উষ্ণ জল ও বাইরের খাবার খাওনোর পরামর্শ দেওয়া হচ্ছে।
- দেহ তাপ নিয়ন্ত্রণের জন্য খোল ও গুড় খাবার হিসাবে ব্যবহার করুন।
- বেশি রাফেজ জাতীয় খাবার (হে ও খড়) খাওনোর পরামর্শ দেওয়া হচ্ছে।
- সদ্যজাতকে বেশি দুধ পান করানো উচিত।
- গরুর ফুট রট রোগের প্রকোপ থেকে বাঁচাতে গোয়ালের নিকাশি নালা পরিষ্কার রাখুন।
- পশুখাদ্যের চাষ (ওটেস, বারসিম, মাস্টার্ড কেবেজ) বৃক্ষি করার পরামর্শ দেওয়া হচ্ছে।
- পশুদের নির্দিষ্ট সময় কুমিনাশক দিন।

- শীতকালে পশুদের উল ও লোম কাটবেন না।
- ভেড়া এবং ছাগলকে অতিরিক্ত খাবার দিন।
- ভেড়া এবং ছাগলের দিনে অন্তত ৪ ঘন্টা সূর্যর আলোর প্রয়োজন।
- গোয়াল ঘরের ভিতরে টিক্ এবং মাইটগুলি অপসারণের জন্য সাইপারমেথিন এবং বিভিন্ন ধরণের পরজীবীর নিয়ন্ত্রণের জন্য আইভারমেকটিন ব্যবহার করার পরামর্শ দেওয়া হচ্ছে
- বেশি খাওয়ানো থেকে বিরত থাকুন।
- গবাদি পশুদের FMD, HS এবং BQ, ছাগলের PPR, হাঁসের ডাক প্লেগ এবং শুকরের সোয়াইন ফিবার রোগের জন্য টিকাকরণ করুন।
- ঠান্ডার প্রকোপ থেকে রক্ষা পেতে যে স্থান গুলো থেকে ঠান্ডা হাওয়া ঢেকে, সেগুলো বস্তা দিয়ে বন্ধ করুন।
- শীতকালে কমপক্ষে ৬ ইঞ্চি লিটার রাখতে হবে।
- পোলান্টি ঘরে ২৪ ঘন্টা আলো থাকা প্রয়োজন।
- ফিডার এর সংখ্যা বেশী রাখুন।
- পোলান্টি ঘরে সর্বাদা পরিষ্কার সৈথৎ উষ্ণ জল থাকা প্রয়োজন।
- পোলান্টি ঘরে পাইপ লাইনের নিয়মিত পরিদর্শন করুন।
- পোলান্টি ঘরে ইটার রাখুন।

মাছের চাষ:

- মাছ চাষে মোট উৎপাদন খরচের ৬০-৭০ শতাংশ খাবার বা ফিড-এ খরচ হয়। তাই স্বল্প খরচে স্থানীয়ভাবে সহজলভ্য উপাদানের মাধ্যমে বাড়িতেই মাছের খাবার তৈরি করে ব্যবহার করলে মাছ চাষের খরচ ক্ষবে এবং আয় বাঢ়বে।
- শীতকালে বেশিরভাগ মাছ বিক্রি করে দিতে হবে এবং সম্ভব হলে গ্রীষ্মকালে পুরুর শুকনো করার জন্য জল পুরোপুরি তুলে ফেলে দিতে হবে।
- শীতকালে পুরুর থেকে কিছু মাছ তুলে নিয়ে ২০% কম ঘনত্বে চাষ করতে হবে।
- ফিড মিলে বা মাছ চাষে কর্মরত শ্রমিকদের কোভিড ১৯ স্বাস্থ্যবিধি সঠিকভাবে মেনে চলতে হবে।
- শীতের সময় বিভিন্ন ছদ্মাক ব্যাকটেরিয়া ও পরজীবীয়টিত রোগ (যেমন পাথনা পচা, ফুলকা পচা, ক্ষতরোগ ও আরগোলেসিস) মাছকে আক্রান্ত করে। সেজন্য শীতের প্রারম্ভে পুরুরে CIFAX @ 400 মিগ্রা/ একর হিসাবে প্রয়োগ করতে হবে। এছাড়া পটশিয়ামপারম্যাঙ্গানেট ১-২কেজি/একর বা চুন ৫০- ১০০ কেজি দিতে হবে। লবন প্রয়োগ করা যায় ১০০কেজি/ এক রাষা মাছকে রোগের প্রকোপ থেকে রক্ষা করে।

ଓଡ଼ିଶା ODISHA ଓଡ଼ିଶା

ଧାନ

- ଭଲ ଅମଳ ପାଇଁ ଧାନ କିସମ: ସି.ଆର ଧାନ -୩୧୦, ବୀନା ୧୧, ହିରଣ୍ୟମୟୀ, ଲଲାଟ, ହିରଣ୍ୟମୟୀ, ଲଲାଟ, ଆଇ.ଆର 46 ଗାଗାଞ୍ଜଳୀ (ସ୍ଥାନପାଇଁ ଧାନ), ଯାଠୋଗଣେ, ମନସ୍ତବିନୀ, ଏମ.ଟି.ମ୍ୟୁ-101, ଏମ.ଟି.ମ୍ୟୁ-1010, ନବୀନ, ରାଜଲକ୍ଷ୍ମୀ (ସତ୍ତକର କିସମ), ଅଜନ୍ (ସତ୍ତକର କିସମ) ଇତ୍ୟାଦି ବ୍ୟବହାର କରନ୍ତୁ ।
- ଧାନ ପାଇଁ ସରବଦା ପଞ୍ଜିକୃତ ବିହନ ବ୍ୟବହାର କରନ୍ତୁ ଏବଂ ଅଛକୁରୋଦଗମ ପରାକ୍ଷା ସରବଦା ବିଧ୍ୟେ ।
- ଧାନ ପାଇଁ ଏକର ପ୍ରତି 20 କି.ଗ୍ରା. ମଞ୍ଜି ବ୍ୟବହାର କରନ୍ତୁ ଏବଂ ୧.୫ ଗରାମ streptocyclin ୩ ୭୦ ଗରାମ Captan ୭୦ ଲିଟର ପାଣି ମିଶାଇ ବିହନ ବିଶ୍ଵାଧନ କରନ୍ତୁ ।
- ଧାତିରେ ରାଜବା ପଦଧତି ଗରହଣ କରନ୍ତୁ ଏବଂ ଏହା ଦ୍ୟାରା ଧାତି କୁ ଧାତି ଏବଂ ଗଛ କୁ ଗଛ ୨୫* ୧୫ ସମେ ବ୍ୟବଧାନ ବଜାୟ ରଖାଯାଇ ପାରିବ ।
- ଉଇ, ପିମ୍ପୁତ୍ରିର ପରାଦୁରଭାବ କମ କରିବା ପାଇଁ ତଳି ଘର ପରଷ୍ଟ୍ରତି ସମୟରେ କ୍ଲାରୋରାପାଈୟିରିପସ ଡଷ୍ଟର ବ୍ୟବହାର କରନ୍ତୁ ।
- ହକ୍କେର ପ୍ରତି ୫ ଟଙ୍କା ସବା ଗାନ୍ଦାବର ଖତ ବ୍ୟବହାର କରନ୍ତୁ ।
- ଅମଳ ସମୟରେ ଧ୍ୟାନ ଦିଯନ୍ତୁ ଯପେରି ଧାନ ସମ୍ପୂରଣ ପାତି ଥିବ ଏବଂ ଇଷଟ ହଲଦିଆ ଦଶ୍ମାୟାଉଥିବା ।
- ଧାନ ଅମଳ ପରେ ଏହାକୁ ଖରାରେ 2-3 ଦିନ ପରଷ୍ଟ୍ରତ ଶୁଖାନ୍ତ୍ର ଯପେଚିକି ଏହାର ଆଦରତା ଗତକଷା ୧୭ ଭାଗ ପରିପ୍ରୟକ୍ତ ରହିବ ଯାହାକି ବିହନ ପାଇଁ ଏବଂ ଶତକଟା ୧୪ ଭାଗ ବ୍ୟବହାର ଉପଯୋଗୀ ହାଜାଇପାରିବ ।

ମକା

- ଏକର ପ୍ରତି 6-7 କି.ଗ୍ରା. ବିହନ ବ୍ୟବହାର କରନ୍ତୁ ।
- ଫଳ ଆରମ୍ଭ ଖାରମମ ଆକରମଣ କୁ ପରତ୍ତିକୁ କରିବା ପାଇଁ ପ୍ରତି ୧ ଗରା ବିହନକୁ ୪ ମିଲି (ସାନଟିନିଲପରନ 19.8%+ ଥାଯାମଥେସ୍କାମ 19.8%) ରେ ମିଶାଇ ବିଶ୍ଵାଧନ କରନ୍ତୁ ।

- घास परिचालना पाइँ मञ्जिक बुशीवार 1-2 दिन परते एकर प्रति ८०० ग्रा आरवाजिन 50% WP कु ७०० लिटर पाशीरे मिशाइ शिङ्गेचन करन्तु।

ठाळि जातोयं प्रसाल :

- अष्टिक उत्पादन पाइँ उपमूलक घुग किसम आइ पि एम ०७-१४ एबं बिरि किसम पि यू ३१ नृ ८१ घुग्यम जमिरे चाष करन्तु।
- घुग्यम प्रसालरे घासर उपद्रवकु दमन करिबा पाइँ एबं माटिर आद्रताकु बान्हिकि रक्षिवा पाइँ मना फ्रांसलरे अन्तोकरण चाष राबते ठाळि जातोयं प्रसाल पथा बिरि कु बघ्यवहार करि पारिबे।
- उल अड्कुरतोद्गम एबं मञ्जिर घुपतताकु भाह्गिबा पाइँ प्रति कडे मञ्जिकु ७-८ ग्राम (Carbendazim + Mancozeb) दिम्बा Vitavax Power (Carboxin 37.5% and Thiram 37.5% DS) रे मिशाइ बिहन दिश्तोधन करिबा अद्यन्त आवश्यक।
- माटिकु ७दा एबं आद्रताकु सन्द्रुलित करिबा पाइँ बिहन बुशीवा पूरवरु माटिरे Zypmite Plus प्ररम्परोग करि पारिबे ३ दिम्ब तले, जिआ खत्कु मध्यम बघ्यवहार करि पारिबे।
- बिहनर परिमाण, शरमिक खरच ३ बुशीवार समय कमाइवा पाइँ, बिरि ३ घुगकु रवाक्कर चालित मञ्जिक ३ घार बुशीवा यन्त्रर आसाय्यरे बुशन्तु।
- जमिरे ढुण दमन करिबा पाइँ गँड गँड बाहारिबा घुर्बाबस्थारे हकेटर प्रति १.४ कडे हिआबरे Pendimethalin प्ररम्परोग करि पारिबे।
- समन्मूल पोाक परिचालना पाइँ जमिरे हल्दिआ अटोलिआ यन्त्रा ३ नील अटोलिआ यन्त्रा बघ्यवहार करिपारिबे।
- बिरि ३ घुग फ्रांसलरे पत्रकरिआ संबालुआकु नियन्त्रण करिबा पाइँ एकर प्रति ७०० लिटर पाशीरे ८० ग्रा Emamectin Benzoate %5 SG किम्बा ४०० मिलि Profenofos 40% EC + Cypermethrin 4% EC) मिशाइ झिंचन करि पारिबे।
- घुग फ्रांसलरे पाँच्छिआ रतोगाकु नियन्त्रण करिबा पाइँ एकर प्रति ७०० लिटर पाशी रे ८०० ग्रा Sulphur 80% WP मिशाइ झिंचन करिबा करामरण दिआयाउछ।
- घुग फ्रांसलरे साहबो रतोगा देखो दरेटिले, एहाकु नियन्त्रण करिबा पाइँ प्रथम एकर प्रति ७०० लिटर पाशी रे ७७ ग्रा Thiamethoxam 25% WG मिशाइ झिंचन करिपारिबे।
- फ्रांसलरे जु पोाक किम्बा धला माछि देखो दलेले, एहाकु नियन्त्रण करिबा पाइँ एकर प्रति ७०० लिटर पाशी रे ७७ ग्रा Thiamethoxam 25% WG मिशाइ झिंचन करिपारिबे।
- फ्रांसल अमल ३ चतोप छिडलेबा पाइँ फ्रांसल अमल यन्त्रर ३ चतोपाछा यन्त्रर बुश्यवहार करन्तु। शरमिक अम्बिधा कु एडलेबा पाइँ यन्त्रर गुट्टिकु उता हिआब रे आशी बघ्यवहार करिपारिबे।

ସାରିଷ:

- ଅଧିକ ଅମଳ ପାଇଁ ଉପଯୁକ୍ତ ସାରିଷ କିସମ ଯଥା ଉପଶେବର, ବିହନ ନାଲେ ଚାଷ କରିବାକୁ ଚାଷୀ ଭାଇ ଓ ଭଉଣୀ ମାନଙ୍କୁ ଉପଦେଶ ଦିଆ ହେବେ ।
- ଭତ୍ତମ ଅତ୍ତକୁରତୋଦଗମ ପାଇଁ ପ୍ରତି କଜେ ମଞ୍ଜିକୁ ଖାଗା Mancozeb ରେ ମିଶାଇ ବିହନ ବିଶୋଧନ କରିବା ଅଭ୍ୟନ୍ତ ଆବଶ୍ୟକ ।
- ବିହନ ଓ ତଳେ ଅମଳ ବଜାଇବା ପାଇଁ ମାଟିରଣ କିନ୍ତକ ଏବଂ ବଠୋରାନ ଅଭାବ ଥିଲେ, ହକେଟର ପ୍ରତି ୨୫ କି.ଗରା, ଜିତ୍ତକ ସଲଫଟେ ଏବଂ ୧୦ କି.ଗରା, ବଠୋରକ୍ସ ପ୍ରଯୋଗ କରନ୍ତୁ ।
- ଜଳସନ୍ତେନ୍ଦ୍ର ସୁବିଧା ଥିଲେ ଗଛର ଫୁଲ ଧରିବା ଓ ଫୁଲ ବଢ଼ିବା ସମୟରେ ଲଘୁ ଜଳସନ୍ତେନ୍ଦ୍ର ପ୍ରଯୋଗ କରିବା ଜରୁରୀ ।
- ଅଧିକ ଦାନା ଏବଂ ଅମଳ ବୃଦ୍ଧି ପାଇଁ ଜଳଦରବିଭୂତ ସାର ୧୫:୧୫:୧୫ କ୍ଲ ଗରା ପ୍ରତି ଲିଟର ପାଣିରଣ ମିଶାଇ ଫୁଲ ଧରିବା ଓ ଛୁଇଁ ଆସିବା ସମୟରେ ପଡ଼ିବ ସିଂଚନ କରିବାକୁ ପରାମରଶ ଦିଆଯାଏ ।
- ସାରିଷ ଫାସଲରେ ଟିକିର ପିଠିଆ ପାକକୁ ନିୟନ୍ତ୍ରଣ କରିବା ପାଇଁ ଏକର ପ୍ରତି ୨୦୦ ଲିଟର ପାଣି ରେ ୪୦୦ ମିଲି Fipronil 5% SC ମିଶାଇ ସିଂଚନ କରନ୍ତୁ ।
- ସାରିଷ ଚାଷ ରେ ନିମନ୍ତ୍ତ୍ରାଖ୍ଯାତ ପରିପୋଡା ରତୋଗ ଦଖ୍ଲେ, ଏହାକୁ ନିୟନ୍ତ୍ରଣ କରିବା ପାଇଁ ଏକର ପ୍ରତି ୨୦୦ ଲିଟର ପାଣିରେ ୪୦୦ ଗରା (Metalaxyl 8% + Mancozeb 64% WP) ମିଶାଇ ସିଂଚନ କରିପାରିବେ ।

ଚିନାବାଦାମ:

- ସାରିକ ଜଳ ନିଷ୍କାସନ ବ୍ୟବସ୍ଥା ଥିବା ହାଲୁକା ବାଲିଆ ମାଟି ଚିନାବାଦାମ ଚାଷ ପାଇଁ ଉପଯୁକ୍ତ ହୋଇଥାଏ ।
- ଚିନାବାଦାମ ମଞ୍ଜି କିସମ ଦବେ, ସମୃଦ୍ଧି ଉପର୍ଯ୍ୟାଦି କୁ ମାତ୍ର ମାସ ରେ କିଶନତୁ ଓ ମଞ୍ଜି ବୁଣ୍ଟା କାର୍ଯ୍ୟ ନଭମେବର ମାସ ରେ କରନ୍ତୁ ।
- ବୁଣ୍ଟା ପୁରବରୁ (Carbendazim 0.1% + Thiram 0.15%) କିମ୍ବା Vitavax Power ରେ ବିହନ ବିଶୋଧନ କରନ୍ତୁ ୧୦ କଜେ kernel ରେ ଜୀବାଣୁ କଲଚର ସହିତ ୩ ଗରା Sodium ammonium molybdate ମିଶାଇ ଦିଅନ୍ତୁ ।
- ଠିକ ଭାବେ ଅତ୍ତକୁରତୋଦଗମ ହବେ ପାଇଁ ବିହନ ବୁଣ୍ଟା ପୁରବରୁ ଥରେ ଜଳସନ୍ତେନ୍ଦ୍ର କିମ୍ବା ବୁଣ୍ଟା ରାଇ ଠିକ ପରେ ଥରେ ଜଳସନ୍ତେନ୍ଦ୍ର କରିବା ଉଚିତ ।

- ବିହନ କୁଣିବା ପୂର୍ବରୁ ସିଆରରେ ହକେଟର ପିଞ୍ଜା ୨୦ କଣ୍ଠି Nitrogen, ୪୦ କଣ୍ଠି ଲଖୋଁଁ Phosphorous P2O5 ଓ K2O ପରମ୍ୟତୋଗ କରି ମାଟିରରେ ଭେଲ ଭାବରେ ମିଶାଇ ବିଅନ୍ତୁ ଯାହା ଫଳରେ ବିହନ ସାର ସତ୍ତରେ ସିଧା ସଳଖ ସଂସପରଶରେ ଆସି ପାରିବ ନାହିଁ ।
- ଚିନାବାଦାମ ଫଳରେ ପଥର ପୁତ୍ରଗନ୍ଧାରୀ ୧୦ ମିଲି Spinosaad 45% SC ମିଶାଇ ସିଂଚନ କରନ୍ତୁ ।
- ଚିନାବାଦାମ ଫଳରେ ଉନ୍ନତିଆ ପଠୋକ ଲାଗିଲେ, ଏହାକୁ ନିଯନ୍ତରଣ କରିବା ପାଇଁ ଏକର ପ୍ରତି ୨୦୦ ଲିଟର ପାଣି ରେ ୪୦୦ ମିଲି Fipronil 5% SC ମିଶାଇ ସିଂଚନ କରନ୍ତୁ ।

ପିଆଜ

- ଆଗ୍ରି ଫାଉଣ୍ଡ ଲାଇଟ ରତେ, ଭିମା ଶକ୍ତି, ଭିମା ସୁପର ଇତ୍ୟାଦି ହତେଛି ପିଆଜ ଚାଷ ପାଇଁ ଉପଯୁକ୍ତ କିସମା ।
- ଏକର ପ୍ରତି ୪ କିଲମୋ ବିହନ ଆବଶ୍ୟକ ହାତୋଇଥାଏ ।
- ଅକ୍ଷତାବର - ନିରମେବର ମାସ ମଧ୍ୟରେ ଏକ ରୁ ଦଢ଼େ ମାସର ପିଆଜ ଚାରା ରାତୋପଣ କରନ୍ତୁ ।

ଆମିବ

- ଆମିବରେ ନିୟମିତ ଫଳ ଆସିବା ପାଇଁ ୧୦ ଲିଟର ପାଣିରେ ୧୫ ମିଲି (୭-୧୫ ବରଷ ଗଛ) କିମ୍ବା ୨୦ ମିଲି (୧୭ -୨୫ ବରଷ ଗଛ) ପାକଲମୋବ୍ୟୁଗରାଜିଲୋଲ ମିଶାଇ ଗଛ ଚାରି ପଟଟେ ୨ -ଗା ଫୁଲ ଛାତି ୫ ସ.ମି. ଗଭାରର ମନ୍ଦବା କରି ପରମ୍ୟତୋଗ କରନ୍ତୁ ।

କଠୋବି ଜାତୀୟ ଫଳ

- କଠୋବି ଜାତୀୟ ଟଳିକୁ ଟଳିଘରା କଣା ରାତୋଗରୁ ନିରାକରଣ ପାଇଁ ୧୬. ପାଣିରେ (୧ ଗ୍ରାମ କାର୍ବଣିକିମ୍ + ୦.୯ଗ୍ରାମ ଷ୍ଟରଫ୍ରେଣ୍ଟୋସାଇକଲିମ୍) ମିଶାଇ ଟଳିଘରାରେ ସିଙ୍ଗନ୍ତନ କରନ୍ତୁ ।
- ରୁଆ ଯାଇଥିବା କଠୋବି ଫଳରେ ୨-ଗା ସପତାହ ପରି ଶୁଷ୍କ ପାଗ ଦଖି କଠୋଡା ଖାତା ଓ ଘାସ ଦମନ କରନ୍ତୁ । ଏହା ପରି ଏକର ପ୍ରତି ୫୫କି.ଗରା ଯୁରିଆ ପରମ୍ୟତୋଗ କରି ସାମାନ୍ୟ ଜଳ ସଚେନ କରନ୍ତୁ ।
- ଫ୍ଲାକକୋବି ଓ ବନ୍ଧାକଠୋବିରେ ବୀଜାଶୁ ଜନ୍ମିତ କଳା ଶତା ରାତୋଗରୁ ନିଯନ୍ତରଣ କରିବା ପାଇଁ ଏକର ପ୍ରତି ୨୦୦ ଲିଟର ପାଣି ରେ ୨୦୦ ଗ୍ରାମ Copper oxychloride 50% WP + ୨୦୦ ଗ୍ରାମ plantomycin ମିଶାଇ ସିଂଚନ କରନ୍ତୁ ।
- କଠୋବି ଫଳରେ ଠିକିରି ପିଠିଆ ପଠୋକ ନିଯନ୍ତରଣ କରିବା ପାଇଁ ଏକର ପ୍ରତି ୨୦୦ ଲିଟର ପାଣି ରେ ୪୦୦ ମିଲି Fipronil 5% SC ମିଶାଇ ସିଂଚନ କରନ୍ତୁ ।

କଖାରୁ ଜାତୀୟ ଫ୍ରସଲ:

- କଖାରୁ ଜାତୀୟ ଫ୍ରସଲରେ ଏପିଲାକ୍ନା ପଠୋକ ଲାଗିବାର ଅଧିକ ସମ୍ଭାବନା ଅଛି। ତଣ୍ଡୁ ଏହାକୁ ନିୟନ୍ତ୍ରଣ କରିବା ପାଇଁ ଏକ ଲିଟର ପାଣିରେ ୭ ମିଲି କଲାରୋରାପାଇଟିଫଳୋସ ୭୦% ଲ.ସି. କିମ୍ବା ୭ ମିଲି ପରାଫୋନେଲୋପାଇସ ୪୦% ଲ.ସି. ମିଶାଇ ସିଂଚନ କରନ୍ତୁ।
- ଏହାକୁ ଜାତୀୟ ଉପାୟରେ ମଧ୍ୟ ନିୟନ୍ତ୍ରଣ କରି ପାରିବା। ଏଥି ପାଇଁ ଏକ ଲିଟର ପ୍ରତି ଶା ମିଲି ନିମ୍ବ ପରସ୍ତୁତ ଆଶ୍ରିତାକଟିନ୍ ଏୟୁଦ୍ଧୋ ପିପିଏମ ମିଶାଇ ସିଂଚନ କରନ୍ତୁ।

ଆକୁ-

- ଆକୁ ବିହନ ଲଗାଇବାର ୨୧ଦିନ ପରା ଘାସ ବଜା ଓ କଠୋତା ଖସା କରନ୍ତୁ।
- ଗଛ ୦୩ ମୀ. ଲା-୪ ସାମ୍. ବ୍ୟବଧାନରେ ୨୦ଶାଖ୍ରରେ ୨-୩ ସାମ୍. ଗଭାରରେ ୨୭କି.ଗରା. ଯୁରିଆ ୩ ଥାର୍କି.ଗରା. ଏମଓସି କୁ ପରମ୍ପରାଗ କରି ମାଟି ଚକ୍ର ଦିଅନ୍ତୁ।
- ପରାମ କଠୋତା ଖସାର ଶା ସପତାହ ପରା ଦିନୀୟ କଠୋତାଖସା ଓ ସାର ପରମ୍ପରାଗ କରନ୍ତୁ।
- ଯଦି ଆକୁରେ ସାଥୀ ପଢ଼ରପଠୋତା ରାଗେ ଦଖୋଯାଏ ତବେ ଏହାର ନିରାକରଣ ପାଇଁ ଏକର ପ୍ରତି ୨୦୦ଲି. ପାଣିରେ ୨୦୦ଗରା ମାତ୍ରକଠୋତବେ ୭୫% ଡବଲୁପି. କିମ୍ବା ୪୦୦ ଗରା (କାରବଶେଷତାଜିମ୍ ୧୭% + ମାତ୍ରକଠୋତବେ ୭୩% ଡବଲୁପି) ମିଶାଇ ସିଞ୍ଚନ କରନ୍ତୁ। ବିଳମ୍ବ ପଢ଼ରପଠୋତା ରାଗେ ଦଖୋଏ ଏକର ପ୍ରତି ୨୦୦ଲି. ପାଣିରେ ୧୦୦ ଗରା (ମଟୋଲାକସିଲ ୮% + ମାତ୍ରକଠୋତବେ ୭୨% ଡବଲୁପି) ମିଶାଇ ସିଞ୍ଚନ କରନ୍ତୁ।

ଉଦୟାନ ଜାତୀୟ ଫ୍ରସଲ :

- ବିଲାଟି ବାଇଗଣର ଶତ୍ରୁକର ଜାତୀୟ କିସମ Arka Rakshak ବରଷ ଯାକ ତାଷ କରାଯାଇପାରିବ। ଏହି କିସମର ଶା ପ୍ରକାର ରାଗେ (ବାଜାଶୁଦ୍ଧିତ ଖାଇଁଲା ରାଗେ, ପୂରବ ପଠୋତା ରାଗେ ଓ ପଢ଼ର ମଠୋତା ରାଗେ) ପରାତି ପରତିରଣେଧ ଶକ୍ତି ରହିଛି ଏବଂ ଅମଳ କରିବାର ୧୫-୨୦ ପରା ମଧ୍ୟ ଏହା ନଷ୍ଟ ନ ହାତେ ଉପଯୁକ୍ତ condition ରାଗେ ରହି ପାରିବ।
- ତାଷ ଭାଇ ଓ ଭଉତୀମାନର ଭଲ ଅମଳ ପାଇଁ ବାଇଗଣର ଖାଇଁଲା ପ୍ରତିରଣୋଧ ଶକ୍ତି ଥିବା କିସମ ଯଥା ଅନୁଶ୍ରୀ, କଲିଛ୍ଵା, ଭରେବୀ କୁ ତାଷ କରିବା ଆବଶ୍ୟକ।
- ମୁଖ୍ୟ ଜମିରେ ବିହନ ଦୁଣିବା ପୂରବରୁ ୧ କି.ଗରା. ବିହନକୁ ୨-୩ ଗରା Vitavax Power ରେ ମିଶାଇ ବିଶାଂଧନ କରନ୍ତୁ। ସହେ ପରି ତାରା ରାଗାଇବା ପୂରବରୁ ୧ ଲିଟର ପାଣିରେ ୨-୩ ଗରା Vitavax Power ମିଶାଇ ଏକ ଦରବଶ ପରସ୍ତୁତ କରି ତାରାର ଚରେ ଚାହିଁକୁ ଅଛି କମରରେ ୩୦ ମିନିଟ ପରମ୍ପରାନ୍ତେ ବିଶାଂଧନ କରନ୍ତୁ।



- ବାଇଗଣ ଚାଷ ରେ ଅଷ୍ଟଚପଦି ଆକୁରମଣକୁ ନିୟନ୍ତ୍ରଣ କରିବା ପାଇଁ ଏକର ପ୍ରତି ୭୦୦ ଲିଟର ପାଣି ରେ ୪୦୦ ମିଲି Propargite 57% E.C. ମିଶାଇ ସିଂଚନ କରନ୍ତୁ ।
- ବାଇଗଣ ଚାଷ ରେ ଫଳ ଓ କାଣ୍ଡବିନଧା ପଠୋକକୁ ନିୟନ୍ତ୍ରଣ କରିବା ପାଇଁ ଏକର ପ୍ରତି ୭୦୦ ଲିଟର ପାଣି ରେ ୮୦ ମିଲି Flubendiamide 480 S.C. କିମ୍ବା ୮୦ ମିଲି Spinosad 45% S.C. ମିଶାଇ ସିଂଚନ କରନ୍ତୁ ।
- ଚମାଟୋ ଚାଷ ରେ କବକ ଜନ୍ମିତ ଖାଉଁଲା ରତୋଶ ଦଖୋ ଦରେଖିଲା, ଏହାକୁ ନିୟନ୍ତ୍ରଣ କରିବା ପାଇଁ ଏକର ପ୍ରତି ୭୦୦ ଲିଟର ପାଣି ରେ ୩୦୦ ଗ୍ରା Thiophanate methyl 70% WP ମିଶାଇ ଗଛ ମୂଳରେ ସିଂଚନ କରନ୍ତୁ ।
- ଧଳା ମାଛି ପ୍ରରାଯ୍ୟ ପରିବା ଯଥା ବାଇଗଣ, ଲତ୍କା, ଅନ୍ଧାନ୍ଧ ପରିବା ଓ ଗଣେରୁ ଫୁଲକୁ ମଧ୍ୟ ଆକୁରମଣ କରିଥାନ୍ତି । ଏହାକୁ ନିୟନ୍ତ୍ରଣ କରିବା ପାଇଁ ଏକର ପ୍ରତି ୭୦୦ ଲିଟର ପାଣି ରେ ୨୭ ଗ୍ରା Thiamethoxam 25% WG ମିଶାଇ ସିଂଚନ କରନ୍ତୁ ।

ମାଛ ଚାଷ

- ମାଛର କଷତ (Epizootic Ulcerative Syndrome) ପାଇଁ ହକେଟର ପିଙ୍ଗା ୧ ମିଟର ଗହିର ପାଣିରେ ୧ଲିଟର ସିଥାକୁସ ଅର୍ତ୍ତକୁ ପ୍ରରୟତୋଗ କରନ୍ତୁ ।
- ମାଛର ଡେଜନ ହିସାବ ରେ ଶତକଟା ୨ ଭାଗ ଅନୁପୂରକ ଖାଦ୍ୟ ଦିନ ଦ୍ଵିପଦର ୨ ଟା ବଲେ ୮ ମାଛ ପଠୋଶରା ରେ ପ୍ରରୟତୋଗ କରନ୍ତୁ ।
- ପଠୋଶରା ପାଣିର ଗଡ଼ିରା ୫ ମିଟର ପରିପ୍ରେକ୍ଷନ୍ତ ବଜାୟ ରଖନ୍ତୁ । ଦରକାର ପଢ଼ିଲା ପାଖରାରେ ଥିବା ପାଣି ଉତ୍ସର୍ଗ ପାଣି ଭରନ୍ତୁ ।
- ମାଛ ମାନ୍ଦକର ଉଚ୍ଚତମ ସ୍ଥାସଥ୍ୟ ଓ ବୃଦ୍ଧି ପାଇଁ ମାନ୍ଦିରେ ପଠୋଶରା ରେ ଛଦମ ଜାଲ ପକାନ୍ତୁ ।
- ପଠୋଶରାରେ ଅମ୍ବଲଜାନ କମିଗଲାରେ ସାଥୀରେ ସଠିକ ବାୟୁ ଚଲାଚଳ କରନ୍ତୁ ।
- ମାଛ ମାନ୍ଦକର ବୃଦ୍ଧି ପାଇଁ Prebiotic ଓ Probiotic ଖାଦ୍ୟ ଦିଅନ୍ତୁ ।
- ଯାଁଳ ପଠୋଶରାର ଉପର ସତର ରେ ଥିବା ଶଟେବାଳ ଜାତୀୟ ପଦାରଥ ଗୁଡ଼ିକ ନିୟନ୍ତ୍ରଣ ପାଇଁ ହକେଟର ପିଙ୍ଗା ୧ ମିଟର ଗହିର ପାଣିରେ ୩୦୦-୪୦୦ ସିଲଭର କାର୍ପ ଯାଁଳ ଛାତନ୍ତୁ ।
- ମାଛ ପଠୋଶରାରେ ବହୁତ କମ ଜାତେବିକ ଓ ଅଜାତେବିକ ସାର ପ୍ରରୟତୋଗ କରନ୍ତୁ ।
- ଯାଁଳ ପଠୋଶରାରେ ରତୋଗ ପ୍ରତିଶୋଧକ ପାଇଁ ୧୦ ଲିଟର ପଠୋଶରା ପାଣି ରେ ୧୦୦ଗାମ $KMnO_4$ ପ୍ରରୟତୋଗ କରନ୍ତୁ ।

- ଅଳଡ଼କାରିକ ମାଛ ରହୁଥିବା କୃତିମ ଜଳାଶୟ ରେ ପାଣି ତାପକ (Water Heater) ବୟବହାର କରନ୍ତୁ।
- ପୁଣିତା ଯାଁଳ ଚାଷ ଧ୍ୟାତ୍କ ରେ ଖାଦ୍ୟ ଅଳପ ଦିଅନ୍ତୁ ।
- ପଠୋଖିରୀ ହୁତାକୁ ଉତ୍ତାକୁ ଉତ୍ତାକାଳୀନ ପନ୍ଥିପରିବା ଚାଷ କରିବା ପାଇଁ ବୟବହାର କରନ୍ତୁ।

କୁକୁତା ପାଳନ

- ଦିନରେ ଛାତି ଦିନରେ କୁକୁତା ଘର କୁ ସାଫ୍ କରନ୍ତୁ ଓ ବଲିଟିଂ ପାଉତର ପକାଇବା ନିହାତି ଜରୁରୀ ।
- କୁକୁତା ମାନଙ୍କଳ ଯଦି କରୋଣସି ରତୋଗ ଦଖୋ ଯାଏ ତବେବେ ତୁରନ୍ତ ନିକଟସ୍ଥ ପଶୁ ଟିକିସଙ୍ଗାଳୟ ରେ ଯଠୋଗ ଯଠୋଗ କରନ୍ତୁ ।
- କୁକୁତା ମାନଙ୍କଳ ସଫା ଓ ସବରଙ୍ଗ ପାଣି ଦିନକୁ ଶା ଥର ପିବାକୁ ଦିଅନ୍ତୁ।
- ଘର ଅଣଣା କୁକୁତା ମାନଙ୍କଳ ଦିନ ବଳୋ ତୁଳିବା ପାଇଁ ଛାତନ୍ତୁ ।
- ଅଣଣା ପବନ କୁ ରତୋକିବା ପାଇଁ କୁକୁତା ଘରକୁ ରତୋଧାନ (insulate) କରନ୍ତୁ ।
- ଶାତ ଦିନ ରେ ବୟାଟୁତ୍ତିଗ ତାପମାତ୍ରା ପ୍ରଥମ ସପ୍ତାହରେ ୩୫ ଟିଗରା ଓ ପରବର୍ତ୍ତୀ ସମୟରେ ପୂର୍ବ ଅପରେକ୍ଷା ଶା ଟିଗରା କମ ରଖନ୍ତୁ ।
- ଅଣଣା ଦରେଥିବା କୁକୁତା ମାନଙ୍କଳ ସଠିକ ଖାଦ୍ୟ ଉପଯୁକ୍ତ ମାତ୍ରା ରେ ଦିନ କରୁରା ଅଗ୍ରେ ।
- ଖାଦ୍ୟ ଓ ପାଣି ର ମାତ୍ରା ୧ : ୫ ଅନୁପାତ ରେ କୁକୁତା ମାନଙ୍କଳ ଦବୋ ଭଟିତ ।
- ଭୁତାଶୁ ଜନିତ ରତୋଗ ପାଇଁ କୁକୁତା ମାନଙ୍କଳ ସଠିକ ସମୟ ରେ ଶୀକା କରଣ କରନ୍ତୁ ।
- ଗରାଷମ ରତୁ ରେ ଦିନ ବଳୋ ଉଚ୍ଚ ତାପମାତ୍ରା କୁ ନିୟନ୍ତ୍ରଣ କରନ୍ତୁ ଓ କୁକୁତା ମାନଙ୍କଳ ସକାଳ ଓ ସନ୍ଧାନ୍ୟ ସମୟରେ ଖାଇବାକୁ ଦିଅନ୍ତୁ ।

ଛତ୍ର ଚାଷ:

- ଧିର୍ଗିରି ଛତ୍ର ଚାଷ ପାଇଁ ନଭମେବର ପ୍ରଥମ ସପ୍ତାହରେ ଛତ୍ର ଗୃହକୁ ଭଲ ଭାବେ ପରିଷକାର କରି ଦବୋ ଆବଶ୍ୟକ । ୭ ଲିଟର ପାଣିରେ ୧୦୦ ମିଲି farmalin ମିଶାଇ ସମ୍ପୂର୍ଣ୍ଣ ଛତ୍ର ଗୃହକୁ ସିଂଚନ କରି ପଲିଥିନ ଘାୟୋଡ଼ାଇ ରଖନ୍ତୁ । ଏହା ପରିଣାମ ଛତ୍ର ଗୃହକୁ ୨ ଦିନ ଯାଏଁ ବନ୍ଦ କରି ରଖନ୍ତୁ ।
- ଧିର୍ଗିରି ଛତ୍ର ଚାଷ ପାଇଁ ନଟାକୁ ୧-୨ ଲଞ୍ଚ୍ଚ କାଟି ତାକୁ ୧% ଦୂର ପାଣିରେ ୧୦-୧୨ ଘଣିଗା ଯାଏଁ ବତ୍ତାଇ ରଖନ୍ତୁ । ଏହା ପରି ୬ steam sterilization କରି ୭୫% ଆଦରଣ ଆସିବା ଯାଏଁ ନଟାକୁ ଛାଇରେ ଶୁଖାଇ ଦିଅନ୍ତୁ । ଧଳା ପଲିଥିନ ବୟବହାର ସିଂହା ଗହମ ଦଲେ ଛତ୍ର ବଡେ ପରସ୍ତୁତ କରାଯାଇଥାଏ ।
- ଛତ୍ର ବଡେରେ ମାଛି କିମ୍ବା ତାର ଟିମ୍ବକ ଦଖୋଗଲାପେ ପରତି ଲିଟର ପାଣିରେ ୧-୧.୫ ମିଲି Dichlorovos କିମ୍ବା ୧.୫-୨ ମିଲି Malathion ମିଶାଇ ବଡେର ତାରିପାଖଣେ ସିଂଚନ କରନ୍ତୁ ଏବଂ ଏହା ପରି ଛତ୍ର ଗୃହକୁ ଗାୟୋଗ ଦିନ ପାଇଁ ବନ୍ଦ କରି ରଖନ୍ତୁ ।
- ଧିର୍ଗିରି ଛତ୍ରର ବଜାରରେ ଚାହିଁଦା କୁ ବଜାଯ ରଞ୍ଜିବାକୁ ହଲେବେ ତାହାର ପାଉତର, ଆଚାର, ସମ୍ବନ୍ଧିତ ପରସ୍ତୁତ କରନ୍ତୁ ।



अंडमान और निकोबार द्वीप समूह ANDAMAN & NICOBAR ISLANDS

रबी मौसम के लिए सलाह

दलहन फसलें

- सूखे भूमि पारिस्थितिकी तंत्र के लिए मूँग या उड़द के बीज को 100 पीपीएम एमएनएसओ4 के साथ 1.0.3 अनुपात में 3 घंटे के लिए सख्त करना और छाया के तहत मूल बीज नमी सामग्री (8 - 9%) के लिए वापस सुखाना।
- धान की परती दलहन को रिले फसल के रूप में धान की फसल की कटाई से 5 से 10 दिन पहले खड़ी फसल में 20 किग्रा मूँग या उड़द के बीज को इष्टतम मिट्टी की नमी की स्थिति में समान रूप से प्रसारित किया जाता है ताकि बीज गोमी (waxy) कौचड़ में समा जाए।
- धान की परती फसलें, डीएपी 20 ग्राम/लीटर या धूरिया 20 ग्राम/लीटर या पत्स वंडर 5 किग्रा/हेक्टेयर का एक बार फूल आने पर पर्ण स्प्रे और दूसरा स्प्रे उन्नत बीज सेट के लिए पहले स्प्रे के 15 दिन बाद करें।

मक्का

- गुणवत्ता वाले मक्का के बीजों का उपयोग 20 किग्रा/हेक्टेयर की दर से करें और बीज को 60 सेमी x 25 सेमी की दूरी के साथ 4 सेमी की गहराई पर छिद्ररोपण विधि से बोएं और अंकुरण सुनिश्चित होने पर प्रति छिद्र एक बीज बोएं अन्यथा दो बीज प्रति छिद्र डालें।
- मक्का नमी के दबाव और अत्यधिक नमी के प्रति अधिक संवेदनशील है, इसलिए आवश्यकता आधारित सिंचाई को समय दिया जाना चाहिए और बुवाई के 45 से 65 दिनों के महत्वपूर्ण विकास चरण के दौरान इष्टतम नमी की उपलब्धता सुनिश्चित करनी चाहिए। महत्वपूर्ण चरण के दौरान नमी की कमी के कारण उपज में काफी कमी आएसकती है।

मूँगफली

- द्वीपीय स्थिति में मूँगफली की बुवाई का सर्वोत्तम मौसम दिसंबर के दूसरे पखवाड़े से जनवरी के दूसरे पखवाड़े तक है। सामान्य गुठली के आकार के लिए 120 किग्रा प्रति हेक्टेयर की दर से बीज बोयें, जबकि मोटे बीज वाली किस्म में 175 किग्रा / हेक्टेयर गुठली का उपयोग करें।
- मूँगफली के बीजों को 125 मिली राइजोबैयम और 125 मिली फास्फोबैक्टीरिया प्रति हेक्टेयर से उपचारित करके बुवाई से पहले 30 मिनट तक छाया में सुखाएं।
- संयुक्त पोषक धोल (डीएपी 2.5 किग्रा, अमोनियम सल्फेट 1 किग्रा और बोरेक्स 0.5 किग्रा) का छिड़काव बुवाई के 25वें और 35वें दिन पर करें। यह बोल्ड सीड मूँगफली में फली भरने में सुधार करेगा।

पशुधन

- पशु चिकित्सकों, राज्य पशु चिकित्सा विभाग या कृषि विज्ञान केन्द्र के परामर्श से आंतरिक परजीवियों के लिए बरसात के मौसम के बाद पशु धन को ठीक से कृमिमुक्त किया जाना चाहिए और बाहरी परजीवियों के लिए डुबोया जाना चाहिए।
- पशुओं के रोगों की रोक था मके लिए राज्य पशुचिकित्सा विभाग की अनुसूची के अनुसार टीका करण कार्यक्रम का पालन किया जाना चाहिए उधारण –सुअरों में स्वाइन फीवर का टीकाकरण, पशुओं के लिए एफ एम डी का टीका करण आदि।

- पशुधन को गर्म और नम स्थिति के कारण अत्यधिक तनाव से बचाने के लिए, वैटिलेशन के साथ उचित आवास प्रदान किया जाना चाहिए।
- पशुधन फार्मों में सख्त जैव सुरक्षा प्रक्रियाओं का पालन किया जाना चाहिए। फार्म के प्रवेश द्वार परफिनाइल, डेटॉल, सेवलॉन आदि फुटबाथ की व्यवस्था की जानी चाहिए।
- पशुचिकित्सकों, राज्य पशु चिकित्सा विभाग एवं कृषि विज्ञान केन्द्र के परामर्श से ऑंतरिक परजीवियों के लिए बरसात के मौसम के बाद पशुधन को ठीक से कृमिमुक्त किया जाना चाहिए और बाहरी परजीवियों के लिए डुबोया जाना चाहिए।
- पशुओं के रोगों की रोक-थाम के लिए राज्य पशु चिकित्सा विभाग की अनुसूची के अनुसार टीकाकरण कार्यक्रम का पालन किया जाना चाहिए, उदाहरणतः -सूअरों में स्वाइन फीवर का टीकाकरण, पशुओं के लिए एफएमडी का टीकाकरण आदि।
- पशुधन शेड के आस पास के क्षेत्र को हाइपोक्लोराइड धोल, या चूने के साथ छिड़करण साफ और कीटाणु रहित किया जाना चाहिए।
- पशुधन को स्वच्छ पानी प्रदान किया जाना चाहिए।
- पशुओं को संयुलित आहार देना चाहिए। यदि संभव हो तो स्थानीय रूप से उपलब्ध फीड, कम लागत वाला चारा तैयार किया जाना चाहिए। टूटे चावल, चावल की भूसी, नारियल की खत्ती, चुत्री (दाल), तिल केक, अजोला आदि।
- पशुओं के चारे को सुखे और ठंडे स्थान पर ठीक से संग्रहित किया जाना चाहिए ताकि फीड को गीला होने और नमी से रोका जा सके।
- नवजात पिगलेटों को कृत्रिम गर्मी प्रदान की जानी चाहिए ताकि सर्दियों के दौरान सुअर प्रारंभिक मृत्यु से बच सके।
- पूरे वर्ष पोषक चारे की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए किसानों को अपने खेत में चारा बीज या कलमों की बुनाई करनी चाहिए जैसे की पैराग्रास, मिनीघास, हाइब्रिड नेपियर, ज्वार। ऑंतरिक्त चारे की कटाई की जानी चाहिए जिसे सूखे के दौरान भविष्य में उपयोग के लिए साइलेज में परिवर्तित किया जा सकता है।
- पशुधन में बेहतर उत्पादकता और प्रजनन प्रदर्शन के लिए खनिज मिश्रण (50 ग्राम मवेशी, 25 ग्राम बकरी और सूअर) का अनुपूरण प्रदान किया जाना चाहिए।
- एक ही परिसर में विभिन्न प्रजातियों के पशुओं के पालन या खेती से बचें।
- दूध को धूल और रोगाणुओं से दूषित होने से बचाने के लिए दूध निकालने, भंडारण, परिवहन और विपणन के दौरान स्वच्छ दूध उत्पादन प्रक्रियाओं का पालन किया जाना चाहिए।
- हमेशा मास्क पहनें, सैनिटाइजर का इस्तेमाल करें या साबुन से हाथ धोएं और खेतों और बाजारों में सोशल डिस्टेंसिंग बनाए रखें।

मुर्गीपालन

- पशु चिकित्सकों, राज्य पशुचिकित्सा विभाग या कृषि विज्ञान केन्द्र के परामर्श से ऑंतरिक परजीवियों के लिए मुर्गी को ठीक से कृमिमुक्त किया जाना चाहिए और बाहरी परजीवियों के लिए डुबोया जाना चाहिए।
- राज्य के पशु चिकित्सा विभाग के अनुसार मुर्गी के रोगों को रोकने के लिए टीकाकरण कार्यक्रम का पालन किया जाना चाहिए। मुर्गी के लिए रानी खेत, आई बी डी, मारेक आदि रोग के टीके महत्वपूर्ण हैं।
- पोल्ट्री को अत्यधिक तनाव की स्थिति से बचाने के लिए, वैटिलेशन के साथ उचित आवास प्रदान किया जाना चाहिए। पोल्ट्री शेड में रोशनी के लिए चमकीले बल्बों से बचें।

- डीपलीट को बार-बार धुमाया जाना चाहिए और चुना के साथ मिलाया जाना चाहिए ताकि नमी और केक बनने से फंगल विकास ना हो सके।
- पोल्ट्री फार्म में सख्त जैव सुरक्षा प्रक्रियाओं का पालन किया जाना चाहिए। फार्म के प्रवेश द्वार पर फिनाइल, डेटॉल, सेवलॉन आदि के साथ फुटबाथ की व्यवस्था की जानी चाहिए।
- पोल्ट्री के आस-पास के क्षेत्र को हाइपोक्लोराइड घोल, या चूने के साथ छिड़ककर साफ और कीटाणु रहित किया जाना चाहिए।
- खाली पोल्ट्रीशेड को साफ किया जाना चाहिए और फॉर्मेलिन और पोटेशियम पर-मैग्रेट के साथ धूप दिखाया जाना चाहिए या कीटाणुशोधन के लिए 10% फॉर्मेलिन के साथ छिड़काव किया जा सकता है।
- संतुलित आहर का प्रयोग करना चाहिए। यदि संभव हो तो स्थानीय रूप से उपलब्ध फ्रीड सामग्री से कम लागत वाला चारा तैयार किया जाना चाहिए। टूटे चावल, चावल की भूसी, नारियल की खीली, चुटी (दाल), टिल केक, फिशमील, अजौला आदि।
- पोल्ट्री फोड़ को सुखे और ठंडे स्थान पर अच्छी तरह से संरक्षित किया जाना चाहिए ताकि फ्रीड को गीला होने और नमी से रोका जा सके।
- स्वस्थ विकास और मृत्यु दर को कम करने के लिए चूजों को 4-6 सप्ताह तक कृत्रिम ब्रूडिंग प्रदान की जानी चाहिए।
- पोल्ट्री को स्वच्छ पानी प्रदान किया जाना चाहिए।
- गर्मी-तनाव से निपटने के लिए इलेक्ट्रोलाइट प्रदान किया जाना चाहिए।
- एक ही परिसर में विभिन्न प्रजातियों के पशुपालन या खेती से बचें।
- हमेशा मास्क पहनें, सैनिटाइजर का इस्तेमाल करें या साबुन से हाथ धोएं और खेतों और बाजारों में सोशलडिस्टेंसिंग बनाए रखें।

मत्स्यपालन

- सतह की परत के नीचे मछली को पर्याप्त आरामदायक क्षेत्र प्रदान करें, जो गर्मियों के दौरान 28-32°C से अधिक गर्म हो जाती है, लगभग 5-6 फीट पानी की गहराई तक बनाए रखना चाहिए।
- बिना पर्याप्त पेड़ों या अन्य साधनों के साथ तालाब पर आंशिक छायांकन का प्रावधान उच्च तापमान के प्रभाव को कम करता है।
- तालाब में बढ़ी हुई जैविक गतिविधि के कारण ऑक्सीजन का स्तर धातक स्तर तक गिर सकता है, खास कर सुबह के समय। इसलिए, सूर्योदय से पहले दिन के शुरुआती घंटों के दौरान, ताजा पानी डालकर या वातक द्वारा तालाबों वातन करना चाहिए।
- इष्टतम ऑक्सीजन स्तर (≥ 5 मिली ग्राम/लीटर या पी पी एम) मछली को स्वस्थ रखेगा और उसकी खाद्य रूपांतरण दक्षता में वृद्धि करेगा, जिस से तेजी से विकास और उच्च उत्पादकता होगी। आंशिक जल विनियम से पानी की गुणवत्ता में सुधार होता है।
- पानी के पी एच में दैनिक भिन्नता की जाँच की जानी चाहिए, जो तालाब में अल्लाल खिलने की अत्यधिक वृद्धि के कारण 7.5 से 9 की अनुशासित सीमा से अधिक उत्तर-चढ़ाव कर सकती है।
- यदि पानी का रंग गहरा हरा, गहरा भूरा या हरा भूरा हो जाता है और पानी की सतह पर हरा, भूरा या कभी-कभी लाल रंग का अलगल मैट दिखाई देता है तो तालाब में खाद/उर्वरक डालना निलंबित कर देना चाहिए।

- अमोनिया और कार्बनडाइऑक्साइड जैसी जहरीली गैसों के संचय को रोकने के लिए कांटेदार तार की मदद से नियमित रूप से नीचे की रैकिंग की जाती है। मछली के तालाबों में अमोनिया की विषाक्तता तापमान और पी एच में वृद्धि के साथ बढ़ जाती है, जिसे तालाबों को अच्छी तरह से बातित रखने और विशेषज्ञ की सलाह के अनुसार जिम्माम / फिटकरी की एक खुराक डालकर कम किया जा सकता है।
- तालाब में नियमित रूप से प्लवक (प्राकृतिक मछली भोजन) उत्पादन को बनाए रखना और पौष्टिक संतुलित आहार प्रदान करना भी बहुत महत्वपूर्ण है। जैविक खाद और अकार्बनिक उर्वरकों के मिश्रित उपयोग के माध्यम से तालाब को प्लवकसे समृद्ध रखें।
- किसानों को सलाह दी जाती है कि वे अनुशंसित दरों के अनुसार पूरी तरह से विघटित जैविक खाद (FYM, बायो गैस घोल, वर्मिकम्पोस्ट या पोल्ट्री खाद) का उपयोग करें और मछली कोरो जाना अच्छी गुणवत्ता वाले फ्रीड के साथ 25% क्रूड प्रोटीन @ 1.5-2.0% मछली के शरीर के वजन के साथ खिलाएं (सुबह 9-11 बजे के बीच)।
- यदि मछली सतह पर वायुमंडलीय हवा में हाँफती है या मछली में किसी प्रकार की बीमारी देखी जाती है तो उसे खिलाना निर्दोषित कर दें।
- बीज, चारा और उर्वरक के मामले में बड़े हुए इनपुट से बचना चाहिए। यह न केवल इनपुट लागत को बढ़ाता है, बल्कि पानी की गुणवत्ता को भी खराब करता है जिस से स्टॉक के नुकसान का खतरा बढ़ जाता है।
- अनुशंसित रोगनिरोधी उपायों का पालन करें (चुना करना, पोटेशियम परमैग्नेट डालना)।
- रोग होने की स्थिति में, कृषि विज्ञान केन्द्र, केन्द्रीय द्विपिय कृषि अनुसंधान संस्थान, पोर्टब्लेयर या मत्स्यपालन विभाग के विशेषज्ञ से परामर्श लें।
- हमेशा मास्क पहनें, सैनिटाइजर का इस्तेमाल करें या साबुन से हाथ धोएं और खेतों और बाजारों में सोशलडिस्टेंसिंग बनाए रखें।

बागवानी

बैगन

- स्थानीय बाजार की मांग के अनुसार उच्च उपज वाली गोल फल वाली किस्मों का चयन करें।
- फल और प्ररोह बेधक के नियंत्रण के लिए एकीकृत कीट प्रबंधन प्रथाओं का पालन किया जाना चाहिए।
- बैकटीरियल विल्ट रेजिस्टेंस बैगन जैसे CARI बैगन-1, और 2 और अन्य स्थानीय निजी कंपनी किस्मो का प्रयोग करना चाहिए।

टमाटर

- रोपाई के पहले 100 किग्रा/एकड़ की दर से चूने का प्रयोग करें।
- केवल मुरझाने से लड़ने वाली किस्में जैसे अर्का रक्षक लक्ष्मी, उत्कल राजा, उत्कल उरबासी आदि उगाएं।
- पौध की रोपाई के लिए बरसात के दिनों से बचें।
- बेहतर फसल वृद्धि और उपज के लिए रेतीली मिट्टी का चयन करें।

गोभीवर्गीय फसलें

- केवल उष्ण कटिबंधीय उच्च तापमान सहिष्णु किस्मों जैसे सफेद चमत्कार, सफेद शॉर्ट आदि उगाएं।

- पौध की रोपाई के लिए अधिक बारिश की अवधि से बचें।
- बीजों को जैव उर्वरकों और जैव-इनोकुलेंट्स से उपचारित करना चाहिए।
- रोपाई से पहले जैव उर्वरकों का मिट्टी में प्रयोग करें।
- बोरान, जिंक, कैल्शियम और मोलिब्डेनम जैसे सूक्ष्म पोषक तत्वों का प्रयोग करें।
- डीएपी और यूरिया जैसे अधिक रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग न करें।
- खेत से अतिरिक्त पानी निकाल दें और उठी हुई ब्यारियों में उगाएं सर्दियों में अनिश्चित बारिश के दौरान।

फ्रेंच बीन्स

- हमेशा पोल प्रकार की फ्रेंच बीन्स उगाएं।
- फसल के नुकसान को कम करने के लिए पीली शिरा मोजेक और एफिड्स को समय पर नियंत्रित करना चाहिए।

जड़ वाली फसलें (मूली, शकरकंद, गाजर)

- जड़ वाली फसलों के लिए हमेशा रेतीली दोमट ढीली मिट्टी चुनें।
- पूसा चेतावी, जापानी लंबी मूली किस्म की खेती के लिए योजना बनानी चाहिए।
- उन्नत बायो फोर्टिफाइड किस्म जैसे भू-सोना और भू-शक्ति और कैरी एसपी-1 और कैरी एसपी-2 का चयन किया जाना चाहिए।
- गाजर की एशियाई किस्म जैसे पूसा रुधिरा और अन्य को खेती के लिए चुनना चाहिए।
- नीम की खाद और ट्राइकोडर्मा चूर्ण का मिट्टी में प्रयोग मृदाजनित रोगों में लाभकारी होगा।

मिर्च

- वीएनआर-ब्लैक, ब्लैटेर मिर्च, पूसा ज्वाला, एमडीयू-1 आदि लीफ कर्लिंग रोधी किस्में उगाएं।
- वायरल रोग का नियंत्रण सफेद मरुखी की आबादी को कम करने के लिए इमडाक्लोरोफिड 1 मिली/लीटर पानी का छिड़काव करें और पिर डायमेथोएट (रोगोर) का 0.05%, नीम की खाद या कार्बोफ्सूरन @ 1.5 किग्रा / हेक्टेयर का छिड़काव करने की सलाह दी जाती है।
- अधिक फूल गिरने के नियंत्रण के लिए पूर्ण खिलने की अवस्था में 50 पीपीएम एनएए का छिड़काव करें।
- फलों में एन्थेकोजो का नियंत्रित करने के लिए थीरम या कैटेन @ 2 ग्राम / किग्रा के साथ बीज उपचार और बेनोमाइल @ 0.1% का स्प्रे भी करें।

कट्टद्रवर्गीय सब्जियाँ

- कट्टदू, तुर्ई, खीरा और करेला गर्म नमी वाली स्थिति के कारण डाउनी फफूंदी रोग के लिए अत्यधिक संवेदनशील होते हैं। संकमण के प्रारंभिक चरण के दौरान व्यूपर ॲक्सीक्लोराइड (ब्लिटोक्स) या मैनकोजेब का छिड़काव करके इस बीमारी को नियंत्रित करें।
- कई कट्टद्रवर्गीय सब्जियों में खस्ता फफूंदी देखी गई है और इसे डिनोकैप (कराथेन 0.03%) का छिड़काव और सल्फर धूल की धूल से नियंत्रित करना चाहिए।

- कुछ कदद्वार्गीय जैसे करेला में लीफ मोज़ेक वायरस अक्सर रबी के मौसम के दौरान देखा जाता है, कीट वेक्टर का नियंत्रण करना चाहिए।
- कदद्वार्गीय सब्जियों के कुछ फलों में अन्नेक्नोज की भी सूचना मिली है, मैन्कोजेब या जेनेब (डिथेन-जेड-78) के छिड़काव को दोहराएं।
- फल मक्खी और लाल कदद्व भूंग अधिक गंभीर कीट हैं जो अधिकतम फलों और पत्तियों को नुकसान पहुंचाते हैं।

तरबूज

- खेत में अनिश्चित बारिश के कारण प्लूजेरियम विल्ट के नियंत्रण उपाय का पालन करें, अतिरिक्त जल जमाव की स्थिति को दूर करें।
- अधिक फलने और फल फटने के लिए TIBA 25ppm, MH 50ppm + GA 25ppm, बोरैन और कैल्शियम @ 20ppm का प्रयोग फायदेमंद होगा।

भिंडी

- YMV प्रतिरोधी किस्म उगाएं और 10 दिनों के अंतराल पर डाइमेथोएट (रोगोर) का छिड़काव करें।
- खस्ता फर्क्कदी को पिछली फसल के अनुसार कुछ बार नियन्त्रित देखा गया।
- चित्तीदार सुंडी-संक्रमित फलों को हटा दिया जाता है और कार्बोरिल या नीम की खाद का मिट्टी में प्रयोग किया जाता है।

नारियल

- नारियल के कचरे जैसे पत्तों, फूलों के म्यान आदि से वर्मी कम्पोस्ट तैयार करें।
- नारियल के बाग में परती स्वच्छ खेती।
- यदि आवश्यक हो तो नारियल के पेड़ों में बेसिन बनाकर पानी देना चाहिए।
- मल्टिंग प्रथाओं को नारियल के पत्ते, भूसी या अन्य कार्बनिक पदार्थों के साथ गिरना चाहिए।

सुपारी

- सुपारी के बगीचे की साफ खेती और मल्टिंग सुपारी के अवशेषों के साथ करनी चाहिए।
- जड़ रोगों से बचने के लिए लगाएं नीम की खाद।

केला

- यदि रोपण में प्रकंद घुन का प्रकोप होता है, तो खेत में उचित जलनिकास की व्यवस्था करें।
- सभी प्रभावित प्रकंदों को खेत से हटा दें और क्लोरोपाइरीफॉस डस्ट लगाएं।

आम

- मार्च-अप्रैल-मई में आम में फल मक्खी का संक्रमण देखा गया, सेक्स फेरोमोन की स्थापना से इन कीड़ों को नियंत्रित करें। डाइमेथोएट 0.045% + शीरा 0.1% का छिड़काव भी प्रबंधन में प्रभावी होगा।
- परिपक्व कच्चे फलों को सोडियम क्लोराइड के घोल (5%) में एक धंते के लिए डुबोकर रखें।



- मध्य अंडमान के छाया क्षेत्र या भीतरी क्षेत्र में फूँद फूँदी दिखाई देती है, परिपक्वता से पहले दो बार अच्छे कवकनाशी का छिड़काव करें।

अमरुद

- फूट फलाई के नियंत्रण के लिए सेक्स फेरोमोन ट्रैप लगाएं।
- प्युसैरियम विल्ट के नियंत्रण के लिए अमरुद के जड़ क्षेत्र में ट्राइकोडर्मा पाउडर लगाएं।

नींबूवर्गीय फल (संतरा, नींबू, नींबू, पोमालिया)

- फलों की तुड़ाई के बाद बगीचे में उचित पोषण दें और फलों को पेढ़ों पर पकने के लिए न छोड़ें।
- खट्टे फलों में विल्ट और डार्इबैक के नियंत्रण के लिए ट्राइकोडर्मा पाउडर का नियमित उपयोग करें।

गेंदा

- व्यावसायिक खेती के लिए साल भर गेंदा की किस्मों जैसे बिधान मैरीगोल्ड -2 और अन्य अफ्रीकी गेंदे के फूलों को उगाएं।

आसाम (आसामी) Assam) Assamese(

Assam (Assam)

अधिकारी अस्त्राय कुमि अवावनीकुमि

[View the complete gift catalog](#)

অন্তর্বর্ণিত ইতিবাচক সময় ক কার্যক ১ মাস, তুলুব বাজারের আগ দিনের পর পরিষে
সময় অন্তর্বর্ণিত কার্যক প্রয়োগ করি যাতী করা বিভিন্ন কাব কার্যক দ্বারা
করি এবং কাব কৃষি দেশ দ্বারা প্রয়োজন (বোর্ডের ৫০-৫৫ মিল প্রাপ্তি) কাব কৃষি দেশ
করি এবং অপ্রয়োজন (বোর্ডের ৫০-৫৫ মিল প্রাপ্তি) কাবের করিব নহো। বাজারের উপ-
ক্রমে নিম্ন করা প্রিয় করিব হোয়া বালিকান কাবের কোরান অন্তর্বর্ণিত সময়
পরিষে প্রতি দেশের সাথে ১২৫ টেক্টি ইতিবাচক, ৫৭৫ টেক্টি একক তুলুব কার্যকের
সাথে ৩০০ টেক্টি নিম্নের আগ পরিষে প্রয়োজন করিব নহো। অন্তর্বর্ণিত ইতিবাচক সময়
ক কাব অন্তর্বর্ণিত কাব করি যাতী দ্বারা দেশের কার্যক, কাব কৃষি দেশ প্রাপ্তি কাব, করি
কাব কার্যক করি দেশ কৃষি কাব কার্যক প্রয়োজন করিব নহো।

(৫) প্রেরণ সম্পর্ক প্রয়োজনীয়তা

- ১) প্রেরণ প্রেরণ কাব কার্যক, করি প্রেরণ, অন্তর্বর্ণিত কাব করি পরিষে প্রিয় করণে
করি আগ প্রেরণের। অন্তর্বর্ণিত আগ প্রেরণ করে উপযুক্ত নহো।
- ২) বিভিন্ন অন্তর্বর্ণিত কাবের পুরু করিব কাব কৃষি প্রয়োজনে সময় কাবের কাবে প্রেরণ
করিব আগ করিব আগ প্রেরণ করে উপযুক্ত নহো।
- ৩) অন্তর্বর্ণিত ইতিবাচক পরিষে প্রতি দেশের সাথে ১০০-১৫০ টেক্টি কর নহো। পুরু
করিব কাবের কাবের ১০ টেক্টি কর নহো। ১ সপ্তাহে ১টেক্টি পরিষের কোরা মিল প্রাপ্তি
করিব প্রেরণ প্রেরণ করি প্রেরণ কর নহো।
- ৪) প্রেরণ প্রেরণে কাবের পুরু কর মিল প্রাপ্তি কাব কৃষি প্রয়োজনে কাবের করিব
কেন্দ্ৰীয় কাব অন্তর্বর্ণিত ইতিবাচক কাব কাবের কাবের কুরি কাবের
প্রয়োজন কুরাটির প্রয়োজন পরিষের পুরু কাবের কাব কাবের কুরি কাব। পুরু
কোরান ক প্রয়োজন আগুন কুরি মিল কোরান কুরান (মিলে ১০-১৫ মিল প্রাপ্তি
কাব প্রিয় কোরান কুরি কুরান আগুন প্রিয়ে ১০-১৫ মিল প্রিয়া)।

ରୋବର୍ଟେନ ପେଟି ପାତାଟିର ପରିବହନକ୍ଷମି

- ୧) ଏହା ଜାତର ଶାଖା ଫେରାତ ଯାଦର ଶାଖା ପିଲା ପ୍ରକାଶର ଶିଥର ରାତର ଯାଦ ପିଲା ପାତାଟାନ କରିବ ଅନୁଭବ। ଅନୁଭବ ପାତାଟାର ଶାଖା ପିଲା ଶିଥର ରାତର ଯାଦ ସାକଳ କରିବ ନାହିଁ।
- ୨) ରୋବର୍ଟେନ ପେଟିର ରାତ କାଣ୍ଡି ଚାହିଁ, ପାତି କାହା (ଅନୁଭବ କାଣ୍ଡି ନିର୍ଦ୍ଦେଶ କରିବ ନାହିଁ)
- ୩) ଅନୁଭବ କାହା ରାତରେ ରାତର ରାତର ରାତରାତର ଶିଥ ଶିଥ ଉପରୁକ୍ତ କାହା
- ୪) ଅନୁଭବର ଶିଥର ରାତରୁକ୍ତ ଡେବାର, ଡେବାର, ମାତ୍ର ଏବଂ ଅନ୍ୟାନ୍ୟ ପାତାଟା

କେଟି/କେଟା (Buckwheat) ପେଟି ପାତାଟିର ପରିବହନକ୍ଷମି:

- ୧) ଉତ୍ତମ କାହାର କୁଣି ନିର୍ଦ୍ଦେଶ ଉପରୁକ୍ତ କାହା ଦେଇସ କେବେଳା-କେବେଳା କାହା କାହାରେ କଟିଛିବାର କାହାର କାହା କଟିଛିବାର କାହାର କାହାରାଗାନ୍ତିରା
- ୨) ଅନୁଭବର ଶିଥର ପରିବହନ କୁଣି କାହାର କାହାରେ ... କେ କି (୧.୫ ପାତି ପିଲା ଶିଥ, କାହା କୁଣି ନିର୍ଦ୍ଦେଶ କାହାର କୁଣି ପାତିର କାହାର ୫୦ ଟଙ୍କାର, କାହାରାନ କାହାର କାହାର)

କାନ୍ଦି-ଧାର (Foxtail millet) ପେଟି ପାତାଟିର ପରିବହନକ୍ଷମି:

- ୧) କୁଣି ନିର୍ଦ୍ଦେଶ ଉପରୁକ୍ତ କାହା ଦେଇସ କାନ୍ଦିରୀ କାହାର ପାତାଟାରେ କାନ୍ଦିରୀ କାହାର କାନ୍ଦିରୀରେ (ଅନୁଭବରେ ଉପରୁକ୍ତ କାହା କାହା କାନ୍ଦିରୀ କାହାର କାହାରେ କାନ୍ଦିରୀ)

- ४) अंति लिंगीय वर्णान्तःका: अंति वर्णान्तःका लिंगीयोंमें गुरु वर्णों वर्षाये अंतिर १-३ वर्षों
 (गुरु विषयक १-३ वर्षों) आव वर्णान्तःका लिंगीयोंमें गुरु वर्णों वर्षाये अंतिर ३-५ वर्षों
 (गुरु विषयक ३-५ वर्षों); अंति लिंगीय वर्णान्तःका: वार्षीय वार्षान्तःका वर्णान्तःका ५-८
 वर्षों; वार्षान्तःका ८-१० वर्षों।

स्थान वर्गीकरण (Lands) के लिए समर्पित वर्गीकरणों

- १) अनुदर्शित जाह नमूना आप्स: HUL 57, जाह नमूना > (SL 2-24),
जाह नमूना ३ (SL 2-26).
 - २) दृष्टि विकार उत्पन्न वयस्त्र देखने के लिये जाह जाहाजों का वर्णन जाह
जाहाजों। अनुदर्शित दृष्टि विकार एवं उत्तर दृष्टि विकार ८% तकीय
(पूर्ण विकार ५% तकीय); दूसरे एवं तीसरे जाहाजों का वर्णन जाह जाहाजों
जाहाजों वयस्त्र ५-८% तक विकार दर्शाया।

जीवन का जीवन जीवन की जीवन की जीवन की जीवन की जीवन

४. निम्नांकित वर्षों के लिए अनुमति देने वाली विभागों का नाम और उनकी विवरणों का लिखित संग्रह निम्नलिखित रूप से है।

- ५) नियुक्त वाहनोंके अनुसूचित वाहनों परिवहन करने वालोंमें से १००% जाती है। ऐसे २५ वाहन एवं उनके वाहनोंमें से १००% जाती है।

६) अनुसूचित विषय परिवहन एवं वाहनों वाहनों का परिवहन करने वालोंमें से १००% जाती है।

Reinforce with rewards

- क) कृषि नियन्त्रित उत्पादक समाज ट्रैसले विकासीकरण योग्यता विकासकारी समाज विकासकारी समाज

କୁଣ୍ଡ ପିଲିର ପାଇଁ କୁଣ୍ଡ ପାଇଁ ଅଧିକ ପିଲିକୁଣ୍ଡ ଏବଂ କୁଣ୍ଡ ପିଲିକୁଣ୍ଡ ୧୫-୨୦ ଟଙ୍କା; ପିଲିର ସମ୍ମାନ କୁଣ୍ଡ ପିଲିର ଆହାର ୫୫ ଟଙ୍କା; ଆହାର ସମ୍ମାନ କୁଣ୍ଡ ପିଲିର ସମ୍ମାନ କୁଣ୍ଡ ପିଲିର ସମ୍ମାନ ୨୦ ଟଙ୍କା; ଶାର କଟା।

৮) পরি কান করিব আশ্চর্য হই ই। হই কোন আশ্চর্যের জন্ম হইল না
— শিখবেন, অধিক অধিক

कृष्ण द्वारा उत्तरी भारतीय अवधि-

५) एक निश्चिय विषय का दो विभिन्न पारा (असंगत विषय विभिन्न पारा अवश्यक तथा विभिन्न पारा अवश्यकीय)।

۲) گھنی ہمیں کہیں، اسکی ناکٹے میں ہم گھنی ہمیں کہیں ہمیں کہیں ۳) گھنی
ہمیں ۴-۱ (کھنکی) کا کھنکی میں ہم گھنی ہمیں کہیں ۴-۲ (کھنکی)
ہمیں ۴-۳ (کھنکی)

८) यदि यहीं अधिक वाहन न हो तो यहीं वाहन वाले यहीं बुजावा वाहन बुजावा नहीं करते।

卷之三

iii) अन्य व्यक्तिगत समय समाप्त नहीं होता जब तक उन्हें व्यापारीय समय समाप्त नहीं होता।

2) अपने पात्र की जिम्मेदारी को नहीं ले सकता वह एक अप्रैल